

# INTERNATIONAL

# Conference

On

## Śabdārthatattvavimarsah

(शब्दार्थतत्त्वविमर्शः)

5 th & 6 th March, 2019

### Proceedings

Editors :

Dr. Swarup Singha,

Dr. Uttam Biswas,

Rajib Sinha,

Asit Kr. Sau



*Organised by :*

Vidyasagar University  
Sanskrit Alumni Association



*In Collaboration with*

Department of Sanskrit,  
Vidyasagar University

**International Conference  
On  
Śabdārthatattvavimarśaḥ  
(शब्दार्थतत्त्वविमर्शः)**

**प्रकाशनम्**

**5 th March, 2019**

**ISBN – 9789382-399452**

**मूल्यम् – ५००.००**

**विद्यासागरविश्वविद्यालयस्य संस्कृतविभागीयभूतपूर्वविद्यार्थिपरिषद्  
VIDYASAGAR UNIVERSITY SANSKRIT ALUMNI ASSOCIATION  
पश्चिममेदिनीपुरम्, पश्चिमवङ्गः**

## विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषयः	लेखकाः	पृष्ठाङ्कः
1	शाब्दिकानां शब्दस्वरूपविमर्शः	जयदेवदिन्द्र	1
2	स्फोटतत्त्वमीमांसा	अभिषेकमुखार्ज्जी	8
3	शाब्दबोधः	डा. वाणदेवसेनापतिः	12
4	संक्षेपशारीरकानुसारेण वेदान्तवाक्यस्य अखण्डार्थप्रतिपादनपद्धतिः	डा. देवाञ्जनदासः	15
5	व्याकरणशास्त्रे शब्दार्थसम्बन्धः	बावलुग्रामानिकः	17
6	साहित्यदर्पणदिशा अभिधा-लक्षणाव्याञ्जनाविमर्शः	भोलेश्वरप्रधानः	22
7	ध्वनिचिन्तने शब्दार्थतत्त्वविमर्शः	सोमनाथ-सेनापतिः	24
8	“न्यायवैशेषिकनये शब्दतत्त्वविमर्शः”	देवार्पिता व्यानार्जी	27
9	साहित्यशास्त्रे शब्दार्थतत्त्वम्	दीपङ्करमिश्रेण	31
10	सांख्ये शब्दस्वरूपम्	गोविन्ददासः	36
11	काव्यलक्षणोदितः शब्दार्थतत्त्वविमर्शः	श्रीमान् गोपाल आचार्यः	39
12	वाक्यस्फोटस्य शब्दबोधहेतुत्वनिरासः	कृष्णगोपालपात्रः	43
13	ओम्-इति शब्दतत्त्वम् ; तदेव एव जगत्कारणम्	वाणेश्वरजाना	49
14	अलंकारचिन्तने सूर्याग्निसूक्ते	चन्दन-मण्डलेन	51
15	मीमांसानये शब्दतत्त्वविमर्शः	देवाशीषमिश्रेण	54
16	पदार्थबोधघटित-शास्त्रीयसिद्धान्तः	डा. खोकनभट्टाचार्यः	57
17	अर्थनिष्पत्तौ वैदिकस्वर-काव्यशास्त्रशक्तयोः सादृश्यपर्यालोचनम्	मौमिता खाण्डया	61
18	आस्तिकदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः	नाडुगोपालवेरा	65
19	भिक्षुशब्दानुशासनस्य कतिपयानां सूत्राणां तुलनात्मकमध्ययनम्	निर्मलकुमारराह	69
20	साहित्यशास्त्रे अभिधा-लक्षणा-व्याञ्जनातत्त्वविमर्शः	निताइपालः	72
21	मालविकाग्निमित्रमिति दृश्यकाव्ये प्रयुक्तः वैदिकशब्दविमर्शः	पापनचन्दः	74
22	शब्दशक्तिविचारः	पापियावेरा	76
23	वर्णसमात्रयाः-एकं विश्लेषणम्	परमेशः भट्टाचार्यः	80
24	बौद्धार्थनिरूपणम्: एकमध्ययनम्	पारमितारायः	88
25	भिक्षुशब्दानुशासने कर्मतत्त्वविमर्शः	डॉ. प्रशान्तकुमारमहला	92
26	रुच्यककृते अलंकारसर्वस्वे व्याञ्जनाविमर्शः	डा. प्रितमरोजः	97
27	अलङ्कारस्य सप्तमवेदाङ्गत्वम्	राइवरणकामलः	102
28	शब्दानुशासनशास्त्रदिशा शब्दार्थतत्त्वनिरूपणम्	डा. रुबेलपालः	106
29	वागर्थविवसम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये... इत्याह्वयश्लोकप्रतिपादितशब्दार्थतत्त्वस्य विमर्शः	सनातन-दासः	112
30	श्रीप्रफुल्लकुमारमिश्रकृतिसम्भारस्य ‘तथापि सत्यस्य मुखम्’ पद्यकाव्ये शब्दार्थतत्त्वविमर्शः	श्री श्यामल गोस्वामी	116
31	नामार्थतत्त्वमीमांसा	श्रीमन्तभद्रः	120
32	शाब्दबोधे तात्पर्यतात्पर्यनिर्णयः	शौमित्राचार्यः	127
33	शाब्दबोधमीमांसा	सौरभमण्डलः	134
34	चित्सुखदर्शनदिशा शब्दार्थविमर्शः	सौभिकविश्वासः	138
35	शब्दस्य लक्षणाशक्तिविमर्शः	शुभमयपाहाड़ी	140
36	शब्दस्यार्थप्रकाशे शक्तेः भूमिका	उत्तमकुमारवेरा	143

37	ঋষিভীষ্মাঙ্করবে মাহেশ্বরসূত্রবিমর্শ:	মনোজবর্মন:	146
38	শব্দ: ব্ৰহ্মোতি বিমর্শ:	সুরেনকুমারমহাপাত্র:	148
39	সাহিত্যশাস্ত্রে লক্ষণাশক্তি: শব্দবোধ	ডা. ধীরলালদাস	151
40	পূর্বমীমাংসায় উত্তরমীমাংসায় দ্বৈতধর্মশব্দস্য অর্থবিশ্লেষণ	পঙ্কজকুমারমাঙ্কনা	
41	বর্ননশাস্ত্রে শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শ:	মদনপাত্র:	154
42	অঙ্কনশাস্ত্রে: প্রধাব:	মধুসূদন দাস:	157
43	সাহিত্যশাস্ত্রে কাকোরখিত্যকৃত্যম্	মীমিতামাঙ্কনা:	161
44	ন্যায়সিদ্ধান্তমুক্তাচলীসম্মতলক্ষণবিমর্শ:	মীসুমীপাল:	165
45	শব্দিকমতে শব্দস্বরূপম্	রজনমণ্ডল:	169
46	ব্যাকরণশাস্ত্রে শব্দটীতবাদ:	রাসমণি ঘোড়াই	172
47	কব্যশাস্ত্রিণাং মতেঃপ্রধাশাস্ত্রে: স্বরূপবিশ্লেষণ	সন্দীপচর্জী	175
48	প্রমিতাধিরপানুসারেণ শব্দব্ৰহ্ম	সঙ্কয়মণ্ডল:	178
49	উত্তরামচরিতনাটকে অর্থবিশ্লেষণবিমর্শ:	শারদাপণ্ডা	183
50	ব্যাকরণমীমাংসারাস্ত্রয়ো: শব্দার্থতত্ত্বসমন্বয়ম্	সোমামাহতি:	186
51	সাহিত্যশাস্ত্রে কৃতিবিমর্শ:	টুম্পা জানা	189
52	স্কোটতত্ত্ববিচার:	অনন্যাসরকার	192
53	কুন্তকনয়ে শব্দার্থতত্ত্ববিচার:-একমধ্যয়নম্	গীতাঞ্জলিত্রিপাঠী	200
54	অলংকারশাস্ত্রে ধ্বনিতত্ত্ববিমর্শ:	প্রীতমমণ্ডল:	203
55	বৈশেষিকব্যাকরণযোর্মতে শব্দতত্ত্বসমীক্ষণম্	শাস্ত্রাঙ্কশেখরপাত্র:	209
56	অপদশেখরশব্দবোধসমীক্ষা	সুকদেবসাস্ত:	212
57	বেদনুগামীন্যায়নয়ে শব্দবোধকারণম্	উদয়শঙ্করছাটুয়া	215
58	শব্দার্থতত্ত্বে বক্রোক্তি:	পুষ্পেন্দুদাস:	222
59	প্রমাণশব্দার্থনিরূপণম্	প্রসেঞ্জিতসূত্রধর:	225
60	শব্দ: বিদু: নিত্য	আরতিমাহতি	234
61	নাট্যশাস্ত্রবিশ্লেষণে শব্দার্থ বিমর্শ		236
62	অভিধানলক্ষণাব্যঞ্জনাবিমর্শ	বামাপদ বাউরী	238
63	মহাভাষ্যকার পতঞ্জলি মতে শব্দার্থবোধ	সোমনাথ সাহা	241
64	বৈদিক সাহিত্য ও শব্দার্থবিজ্ঞান	অদিতি সামন্ত	247
65	আনন্দবর্ধনের দৃষ্টিতে ব্যাচাৰ্ -প্রতীকমানার্থবিচার	অরূপ সরকার	250
66	ন্যায়-বৈশেষিক মতে শব্দ বিমর্শ	অভিজিৎ পণ্ডিত	257
67	ন্যায়বৈশেষিক শাস্ত্র ও মীমাংসা শাস্ত্রে শব্দার্থতত্ত্বের তুলনামূলক আলোচনা	বৈশাখী মাকাল	260
68	গুণশব্দার্থতত্ত্ববিশ্লেষণ	বৈশাখী কান্তার	268
69	সাহিত্যে শব্দশক্তি: অতিশা, লক্ষণা, ব্যঞ্জনাবিমর্শ		
70	বেদব্যাকরণযোগে: শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শ	কালীপদ মন্ডল	271
71	ন্যায় বৈশেষিক মতে শব্দার্থ তত্ত্ব	কনকপ্রভা সরকার	274
72	ন্যায় বৈশেষিক দর্শনে ব্যাক্যার্থ জ্ঞানের হেতু - একটি সমীক্ষা	মণ্টু চৌবে	276
73	মীমাংসামতে শব্দবোধ: ভাবনা ও লিঙ্ক-এর বিশেষ সম্বন্ধ	মান্ন মিতর	278
74	কাব্যপ্রকাশের-আলোকে-ব্যঞ্জনা	মৌমিতা হালদার	280
75	ন্যায়-বৈশেষিকদর্শনসম্বন্ধে শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শ	রাজেশ প্রামাণিক	281
		সঙ্কিতা পাত্র	289
		শুভা সরকার	291

## कुन्तकनये शब्दार्थतत्त्वविचारः, एकमध्ययनम्

सुप्राचीना तन्त्रसामुदाय च संस्कृतकाव्यतात्पर्यसमीक्षा। काले काले च तत्र भव्यः सम्प्रदायः तथा बहूनि मतानि आगतानि। तेषु कुन्तकप्रोक्तः वक्रोक्तिभावः सुतरामेव समुल्लेख्यः। 'वक्रोक्तिजीवितम्' इति ग्रन्थे वक्रोक्तितात्पर्यार्थलोचनकाले शब्दार्थतत्त्वसम्बन्धे कुन्तकव्य विचारः प्राप्यते। वक्रोक्तिजीवितम् इति ग्रन्थस्य प्रारम्भे ग्रन्थरचनायाः अर्थस्य प्रतिपादयता कुन्तकेन निगदितम्-

'लोकोत्तरचमत्कारकारिवैचित्रसिद्धये // काव्यस्यायमलंकारः कोऽप्यपूर्वो विधीयते॥' इति।

बहुधातंकारग्रन्थेषु विद्यमानेष्वपि कुन्तकेन कथं वक्रोक्तिजीवितनामकः अलंकारग्रन्थः पुनः विरचित इत्यात्मिन् विषये युक्तिः प्रदर्शयते उपर्युक्तप्रोक्तेना अलीकिकचमत्कारप्रदानसमायाः वक्रोक्तेः यथोचितविश्लेषणार्थमेव कुन्तकेन नयीनोऽयमलंकारग्रन्थः विनिर्मितः। अस्माद् ग्रन्थाद् अलीकिकचमत्कारकारिवैचित्ररूपायाः कविनिर्मितेः प्राणभूतायाः वक्रोक्तेः यथोचित विश्लेषण सम्भवनमिति कुन्तकस्य सुदृढः सम्प्रत्ययः।

कुन्तकेन वक्रोक्तिः काव्यस्य जीवितत्वेनाङ्गीकृता। वक्रा भङ्गीगमापूर्णा असामान्या चमत्कारपूर्णा प्रसिद्धकथनाद् भिन्ना उक्तिः कथनं वर्णनं वक्रोक्तिर्भवति। वक्रोक्तेः स्वरूपं प्रतिपादयता कुन्तकेन निगदितं - 'वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्यभङ्गीभणितिरित्युच्यते।' इति।

अत्र वैदग्ध्यस्यार्थः कुशलप्रतिभासम्पन्नकविकाव्यनिर्माणकौशलं, भङ्गीशब्दस्यार्थः चमत्कारपूर्णता चास्ता या अपि च भणितिशब्दस्यार्थः कथनशीली विद्यते। सा वक्रोक्तिः शब्दार्थयोः सौन्दर्यविधायका भवति। वक्रोक्तिविहीनं काव्यं निजीयमेव। अतः काव्यलक्षणे कुन्तकेन वक्रोक्तेरनिवार्यत्वं प्रतिपाद्यते। तथा चोक्तं तेन -

'शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविष्यापारशालिनि // बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विवाहादकारिणि॥' इति।

कुन्तकः काव्यत्वं शब्दार्थोभयनिष्ठं मनुते। तथाहि तेन निगदितम् - 'वाचको वाच्यं चेति द्वौ सम्मिलितौ काव्यम्' इति। कारिकायां 'शब्दार्थौ' इति पदेन वाच्यवाचकजातिद्वित्वं विवक्षितम्। को नाम काव्यिकशब्द इति जिज्ञासायामुच्यते - 'शब्दो विवक्षितार्थकवाचकोऽप्येव सत्स्वपि' इति। अर्थात् बहुषु वाचकेषु विद्यमानेष्वपि येन शब्देन कवेर्विवक्षितोऽर्थो यथार्थतया प्रकाशीभवति स एव काव्यिकशब्दः। अत्र दिशत्रमुदाहरणं यथा-

'द्वयं गतं सम्प्रति शोचनीयतां समागमप्रार्थनया कपालिनः।

कला च सा कान्तिमती कलावतस्त्वमस्य लोकस्य च नेत्रकौमुदी॥' इति।

अत्र शिववाचकेषु बहुषु शब्देषु विद्यमानेष्वपि कपालिशब्देन महादेवस्य पृण्यस्वभावत्वं यथा प्रकाशितं भवति न तथा शब्दान्तरेणा अतः कपालिशब्दोऽत्र काव्यिकशब्दः। पाण्डित्यसाहित्यसमीक्षाक्षेत्रेऽपि काव्यिकशब्दोऽयं स्वीकृतः। Walter Peter इति महाभागेनायं काव्यिकशब्दः 'Unique Word' इति नाम्नाभिहितः। उक्तञ्च तेनैव - 'The one word for the one thing, the one thought amid the multitude of words, terms, that might must do...the unique word, phrase, sentence, paragraph essay or song absolutely proper to the single mental presentation of vision within' इति। ततः काव्यिकार्थस्य स्वरूपं निरूपयता कुन्तकेनोक्तम् - 'अर्थः सहृदवाहादकारिस्वस्वन्दसुन्दरः' इति। अर्थात् काव्यार्थविदामानन्दविधायकः स्वभावसुन्दरः अर्थ एव काव्यिकार्थः।

अधुना काव्यलक्षणे उद्भूतस्य 'सहितौ' इति पदस्य व्याख्यानकाले शब्दार्थयोः साहित्यं परालोच्यते। साहित्यं काव्यमिति द्वयं यद्यपि समार्थकतया अधुना व्यवह्रियते तथापि प्राचीने काले एतयोः समानार्थता न प्रथितासीत्। तत्रभवता कुन्तकेन साहित्यशब्दस्य तात्पर्यपूर्णं व्याख्यानं तथा विहितं येन तस्य काव्यसमानार्थता प्रतिष्ठिता अजायता। कुन्तकनये सहितयोर्भावः साहित्यमिति। साहित्यस्वरूपं विदधता कुन्तकेन निगदितम्-

'साहित्यमनयोः शोभाशालितां प्रति काव्यसी।

अन्यूनानतिरिक्तत्वमनोहारिण्यवस्थितिः॥' इति।

अर्थात् शब्दार्थयोः परस्परस्पर्धित्वरमणीया विचित्रविन्यासभङ्गी साहित्यं भवति। अस्यां विन्यासभङ्ग्यां शब्दार्थयोरिकतरस्यापि उपकर्षं उत्कर्षो वा नास्तीत्यर्थः।

कुन्तकेन साहित्यं त्रिधा व्याख्यातम्। तत्र प्रथमस्तावत् शब्दस्य अर्थेन अर्थस्य च शब्देन साहित्यमपेक्षितम्। तथाहि काव्ये प्रयुज्यमानः शब्दभाग तथा अर्थभाग इति उभयावेव सौन्दर्यसम्पदा परस्परस्पर्धिनी भवेताम्। यथोक्तं तेन-

'समसर्वगुणी सन्तौ सुहृदाविव सङ्गीतौ।

परस्परस्य शोभायै शब्दार्थौ भवतो यथा॥' इति।

तत्त्वमिदं प्रत्युदाहरणमाध्यमेन कुन्तकेन प्रतिहापितम्। तद्यथा -

'भण तरुणि रमणमन्दिरमानन्दस्यन्दिसुन्दरेन्दुमुखि।

यदि सल्लीलोल्लापिनि गच्छसि तत् किं त्वदीयं मे॥

अनङ्गुरणन्मणिमेखलमविरतरिशङ्गानमञ्जुमञ्जीरम्।

# BHASAPATH

Essays In Philosophy

Vol. IV, Issue No. 2

ISSN : 2455 9512

June - August 2018

Chief Editor : Abhijit Bandyopadhyaya

Guest Editor : Anupam Jash

Cover by Sanjay Lekhande



# চতুর্বেগের তুলনামূলক আলোচনা : রামায়ণ ও মহাভারত

প্রতিমা দাসী

মহাকাব্যী অধ্যয়নিক, রূপন বিভাগ, পোলাবা মহাবিদ্যালয়

রামায়ণ ও মহাভারত ভারতবর্ষের অমূল্য ধনা, ভারতবর্ষের  
প্রাচীন সম্রাজ্য কীর্তনের পটভিত্তি যেন ভারতবর্ষীয়  
ঐতিহ্যবাহুর অঙ্গ-অঙ্গাঙ্গী, যুগ, আত্মবিশ্বাস, শ্রদ্ধা-ভক্তি,  
১. শিক্তা-শিক্তা, কীর্তিমুখি লাভ-কাম্যে মুগ্ধ অহঙ্কারো, উভয়  
মহাকাব্যের সহযোগী লোকসঙ্গী। তবে যুগের বদলানের  
জন্য উভয় মহাকাব্যের সামাজিক, আচার-আচরণ,  
ঐতিহ্যমুখি লোকসঙ্গী। তবে যুগের বদলানের  
সময়কাল সমাজবর্ষা সম্পর্কে যথেষ্ট সন্তোষ ছিলেন, সে  
যুগের এমন কোন ঐতিহ্যমুখি নেই যা মহাভারতে  
আলোচিত হয়নি। রামায়ণেও আমরা লক্ষ্য করি সেই  
যুগের ঐতিহ্যমুখি কথনো, কখনো আল্প বা ঐতিহ্যমুখি ও  
আচার-আচরণে মনো কিছু পার্থক্য থাকলেও অধিকাংশ  
ক্ষেত্রেই উভয়ের মনো সমানই পরিলক্ষিত হয়। ভারতীয়  
সমাজজীবনে পুরানুক্রমে প্রাপ্ত আচার-আচরণ,  
৩. শিক্তা-শিক্তি প্রভাব কত সুপ্রভঙ্গী মহাকাব্য দুটি তার  
উজ্জ্বল সাক্ষী।

মহাকাব্যে ব্যঙ্গিত বিভিন্ন সমাজ এবং বৈশ্যবর্ষের বিভিন্ন  
মহাভারত মহাকাব্যেও প্রায় সর্গে রূপ, অর্থ ও জ্ঞানের  
কথের উল্লেখ পাওয়া যায়। মানুষের সব জায়গাই রূপ, অর্থ,  
৫. রাম ও লোকের যে কোন প্রকৃতির অথবা সব কীর্তির ধারা  
নিষ্কৃতি হয়ে থাকে। রামায়ণ মহাকাব্যে কতকিই  
পরমপুরুষার্ঘ্যরূপ রূপে কীর্তি করা হয়েছে এবং

অন্যভাবে গোপনপুরুষ বলা হয়েছে। আরো দশা হয়েছে  
যে রূপ নামক পুরুষার্ঘ্যে পাপনের কারণে অমূল্য অমূল্য  
পুরুষার্ঘ্যকে লাভ করতে পারি। মহাভারতে বোম্বার্ডেই  
পরম পুরুষার্ঘ্যরূপে কীর্তি করা হয়েছে। যদিও সাধারণ  
মানুষ যথেষ্ট রূপ, অর্থ ও কাম এই তিনটি পুরুষার্ঘ্যেই  
মতো মনো থাকে সেই তিন থেকে বিচার করতে পারি  
পরমপুরুষার্ঘ্যরূপে কীর্তি করা হয়েছে। তাই বলা হয়েছে  
এই রূপ পাপনের মাধ্যমেই মানুষ অর্থ এবং কামকে লাভ  
করতে পারে।

'দু' বাস্তব সঙ্গে 'মন' প্রত্যয় যোগ করে 'দর্শ' শব্দটির  
উৎপত্তি হয়েছে, যু + মন = দর্শ, যা আরও করে তৈরি করা  
যেবে উপনিষদে রূপকে এক 'দর্শনশীল' নিয়ন্ত্রণে রাখা  
করা হয়েছে, যার দ্বারা সমস্ত বিশ্বভাগ পরিচালিত হয়  
এবং জগতের নিয়ন্ত্রণশীল রক্ষিত হয়। অর্থাৎ 'যত'কে  
'দর্শ' বলা হয়েছে যত কীর্তনং ও জড়জগৎকে নিয়ন্ত্রিত  
ও পরিচালিত করে। জগতের অর্থাৎ বস্তু তার নিজস্ব  
নিয়মে, তার স্বভাব নিয়মে চলে এবং সেটাই তার রূপ।  
রামায়ণে রূপের ব্যুৎপত্তি দিয়ে বলা হয়েছে, রামায়ণে  
সমস্ত জগৎ যতই বা খালি করেনো যেন রাজাকে রূপ বলা  
হয়। সমস্ত বস্তুকে যতই নিয়ন্ত্রিত এবং অর্থাৎ কীর্তনের  
জন্য মানুষকে যতই 'অতঃপর'ই অনুসরণ করতে হয়  
সেটাই তার রূপ। যাকি তথা বিশ্ববর্ষীর জগতের জন্য কর্ম





এই কাম প্রত্যাশী। তবে কতক হতে হতে পাশ্চাত্য।  
 কামের, অধিকার কাম সুকর্ম হতে পারে না। কেননা  
 তা মানুষের উত্তর থেকেও কলিত করে জাগ্রত  
 করে না।

কিন্তু রামায়ণে কামের কোন লক্ষণ ফেনি। কিন্তু  
 মহাকাব্যে কেবল কামকে মানস সংকর এবং শাশ্বত  
 বলেছেন। মহাকাব্যে কামের লক্ষণ প্রসঙ্গে বলা হয়েছে -  
 মানুষের নাক জ্যান্মিমেব মসে ভোগান্তর সম্পর্শে যে  
 ক্রীতি জন্মায় তাকেই কাম বলা হয়েছে। রামায়ণে কামের  
 কোন লক্ষণ না দেওয়া হলেও দুই প্রকার কামের উল্লেখ  
 পাওয়া যায়। এক প্রকার কাম হল অভিলষিত বস্তুর  
 উপভোগ। দ্বিতীয়টি হল ক্রী-পুরুষের মিলনজনিত সুখ।  
 যদিও উভয় মহাকাব্যেই দুই প্রকার কাম থেকে মানুষকে  
 সচেতন থাকতে বলা হয়েছে। তথ্য সাধারণ মানুষই নয়,  
 কবি, লেখক এবং মুনি অকৃতিসের এই দ্বিতীয় প্রকার  
 কামের ফলে তাদের জীবন সর্বনাশ হয়েছে। যেমন  
 রামায়ণে আমরা লক্ষ্য করি বিখ্যাত কঠোর তপস্যায় মগ্ন  
 থাকার সময় মেনকা নামে এক সুন্দরীর রূপে মুক্ত হন  
 এবং কামাসক্ত হওয়ায় তিনি সিদ্ধির চরম সীমায় পৌঁছাতে  
 ব্যর্থ হন।

রামায়ণে আমরা লক্ষ্য করি রাজা লক্ষের কৈকেয়ীর  
 প্রতি অনুরক্ত হয়ে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হন। তার এই প্রতিজ্ঞা  
 রক্ষার্থে রামকে রাজ্য ছেড়ে বনবাস যাওয়ার আদেশ দেন।  
 যার ফলে লক্ষের নিদারুণ মানসিক কষ্ট ভোগ করেন।  
 অতিরিক্ত কামাসক্ত হয়ে অবিশেষতের মতো কাজ করলে  
 কী চরম পরিণতির সম্মুখীন হতে হয় যাব্দিকি তারই একটা  
 দৃষ্টান্ত উপস্থাপন করেছেন রাজা লক্ষের মধ্য দিয়ে।

মহাভারতে বলা হয়েছে কর্ম ও অর্থের কথা না ভেবে  
 যে ব্যক্তি কেবল কামের কথা চিন্তা করে সে ব্যক্তি নিন্দার  
 পাত্র। কিন্তু জীবন যে কামশূন্য নয় সেকথাও স্বীকার করা  
 হয়েছে। মানুষের কর্ম, অর্থ ও কাম এই তিনটির প্রতি  
 আসক্তি আছে। কিন্তু এই তিনটির মানবজীবনে প্রবল  
 কোনটি সেই প্রাণ প্রসঙ্গে রাম এবং ভীষ্মের মতোব মিল  
 লক্ষ্য করা যায়। বনবাসের প্রথম রাতে রাম তাঁর পিতার  
 দুঃখ কষ্ট দেখে বলেন, পিতার দুঃখ দেখে মনে হচ্ছে কর্ম,  
 অর্থ থেকে কামই প্রবল, সেইরূপ যুধিষ্ঠির যখন তার চার  
 ভাইকে ভিজাস্য করেন যে ত্রিবর্গের মধ্যে শ্রেষ্ঠ কোনটি।  
 ভীষ্ম প্রায়ের উত্তরে বলেন, কামই সব কিছুর মূল। কর্ম,

অর্থ লক্ষ্যের নিশ্চয়ই লক্ষ্য মান।  
 যাকে লক্ষ্য করেন আর কিছু করতে পারেন।  
 সব প্রয়োজনের অঙ্গান যাতে হয় সে  
 মোক্ষলাভের শর সুকলের অর্থাৎ কাম।  
 কামনা থাকে না যদি মোক্ষের সুকলের  
 উভয় মহাকাব্যেই কর্ম, অর্থ, কাম ও  
 চতুর্গণ বলা হয়েছে। মোক্ষই চতুর্গণের  
 সিদ্ধান্তই উভয় মহাকাব্যে। কিন্তু কাম  
 মহাকাব্যেই নানা রূপে বিভিন্ন বস্তুকে  
 মোক্ষের জয়গান শোনা হয়েছে।  
 চতুর্গণের প্রত্যেকটির যেমন কিছুই হয়  
 রামায়ণে তা পাওয়া যায় না। এখানে মোক্ষকে  
 রূপে প্রকাশ্যে, পরস্পর, স্বাস্থ্যের ইতি  
 পেয়ে থাকি।

তথ্যসূত্র :

১. ভাস্করী নৃসিংহরাম, কবিতা গণ ও গণ  
 পাবলিশার্স লি., প্রথম সংস্করণ, ১৯৭৮, কলকাতা  
 পাবনা
২. মাস শ্রেয়সের সংস্কৃত সাহিত্যের ইতিহাস  
 গৌতমিক), মশেল, কলকাতা  
 পাবনা
৩. তুলনামূলক আনন্দোন্নয়ন গায়ন ও  
 বস্যানাথায় বিবেকানন্দ কৃষ্ণ  
 বিহার
৪. বসু বুদ্ধেশ্বর, মহাভারতের কথা, এই দি সত্য,  
 কলিকাতা, ১৯৭৮  
 কলকাতা
৫. শাস্ত্রী জগদীশ, উপনিষৎ সংগ্রহ ১-২ খণ্ড,  
 কলকাতা, ১৯৭০  
 কলকাতা
৬. সিত্র, রাজেশ্বর মহাভারত চিত্র নবম  
 ১০৯২ বঙ্গ  
 লিখিত
৭. সেন মনোমতী রামায়ণ ও মহাভারত :  
 অসীম উদ্ভাস, কলিকাতা, ১, ১৯৭৭  
 লিখিত
৮. জয়দেব গোয়েন্দা, সচিত্র মহাভারত  
 প্রেস, গোরক্ষপুর, ২০১৪  
 লিখিত
৯. জয়দেব গোয়েন্দা, সচিত্র মহাভারত  
 প্রেস, গোরক্ষপুর, ২০১৪  
 লিখিত
১০. কৃষ্ণাঙ্গ বিচিত্র পট্টের সত্ত্বভেদ  
 লিখিত, দেবদত্ত নন্দী, ১৬৭৩  
 কলিকাতা, ১৩, ২০০০



এই কাম প্রয়োজনীয়। তবে কামকে হতে হবে পাত্রসম্বত।  
অসংঘট, অধিষ্ঠাতার কাম পুরুষার্থ হতে পারে না। কেননা  
যা মানুষের উচ্চতর বেদনগতকে কলঙ্কিত করে জাগ্রত  
করে না।

বাস্তবিক রামায়ণে কামের কোন লক্ষণ তেননি। কিন্তু  
মহাভারতে বেদব্যাস কামকে মানস সংহার এবং শাশ্বত  
বলেছেন। মহাভারতে কামের লক্ষণ প্রসঙ্গে বলা হয়েছে—  
মানুষের পক্ষ জানেন্দ্রিয়ের সঙ্গে ভোগসম্বন্ধ সংস্পর্শে যে  
ক্রীতি ক্রমায় তাকেই কাম বলা হয়েছে। রামায়ণে কামের  
কোন লক্ষণ না দেওয়া হলেও যুই প্রকার কামের উল্লেখ  
নাওয়া যায়। এক প্রকার কাম হল অভিসম্বিত বজ্র  
ঔপভোগ দ্বিতীয়টি হল স্ত্রী-পুরুষের মিলনজনিত সুখ।  
অধিও উভয় মহাকাব্যেই দুই প্রকার কাম থেকে মানুষকে  
সচেতন থাকতে বলা হয়েছে। শুধু সাধারণ মানুষই নয়,  
ঋষি, দেবতা এবং মুনি প্রভৃতির এই দ্বিতীয় প্রকার  
কামের ফলে তাদের জীবন সর্বনাশ হয়েছে। যেমন  
রামায়ণে আমলা সত্কা করি বিধামিত্র কর্তার তপস্যায় মম  
ধাকার সময় মেনকা নামে এক সুন্দরীর রূপে মুক্ত হল  
এবং কামসক্ত হওয়ায় তিনি সিদ্ধির চরম সীমায় পৌঁছাতে  
বর্থ হল।

রামায়ণে আমলা লক্ষ্য করি রাজা দশরথ কৈকেয়ীর  
প্রতি অনুবৃত্ত হয়ে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হল। তার এই প্রতিজ্ঞা  
রক্ষার্থে রামকে রাজ্য ছেড়ে বনবাস যাওয়ার আদেশ দেন।  
যার ফলে দশরথ নিদারুণ মানসিক কষ্ট ভোগ করেন।  
অতিরিক্ত কামসক্ত হয়ে অধিকারকের মতো কাজ করলে  
কী চরম পরিশ্রুতির সম্মুখীন হতে হয় বাস্তবিক ত্যাই একটা  
দৃষ্টান্ত উত্থাপন করেছেন রাজা দশরথের মধ্য দিয়ে।

মহাভারতে বলা হয়েছে ধর্ম ও অর্থে কথ্য না ভেবে  
যে ব্যক্তি কেবল কামের কথা চিন্তা করে সে ব্যক্তি নিন্দার  
পাত্র। কিন্তু জীবন যে কামশূন্য নয় সেকথাও স্বীকার করা  
হয়েছে। মানুষের ধর্ম, অর্থ ও কাম এই তিনটির প্রতি  
আসক্তি আছে। কিন্তু এই তিনটির মানবজীবনে প্রবল  
লেনাট সেই প্রথ প্রসঙ্গে রাম এবং ভীষ্মের মতের মিল  
লক্ষ্য করা যায়। বনবাসের প্রথম রাতে রাম তাঁর পিতার  
দুঃখ কষ্ট বেশ বনেন, পিতার দুঃখ দেখে মনে হচ্ছে ধর্ম,  
অর্থ থেকে কামই প্রবল, সেইরূপ যুধিষ্ঠির যখন তার চার  
ভাইকে দ্বিজ্ঞাসা করেন যে ত্রিবর্গের মধ্যে কোন্ কোন্টি  
তীম প্রশ্নের উত্তরে বলেন, কামই সব কিছুই মূল। ধর্ম,

অর্থ সংগ্রহের পিছনেই কাম আছে।

যাকে লাভ করলে তার কিছুই লক্ষ্য করা  
সব প্রয়োজনের অবসান ঘটে গঠি মম  
যোকগাতের পর পুরুষের অর্থাৎ কাম  
কামনা থাকে না তাই মোক্ষের পূর্ণার্থ কাম  
উভয় মহাকাব্যেই ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোক্ষ  
চতুর্বার্গ বলা হয়েছে। মোক্ষই চতুর্বার্গের  
সিদ্ধান্তই উভয় মহাকাব্যে কামের মূল  
মহাকাব্যেই নানা স্থলে বিভিন্ন ব্যক্তির মত  
মোক্কের জয়গান শোনা গিয়েছে।  
চতুর্বার্গের প্রত্যেকটির যেমন বিস্তারিত  
রামায়ণে তা পাওয়া যায় না। এখানে মোক্ষের  
রূপে ব্রহ্মলোক, পরমোক্ষ, স্বর্গলোক ইত্যাদি  
রূপে থাকে।

তথ্যসূত্র :

১. ভগবতী নৃসিংহপ্রসাদ, বাণীকি যম ও কাম  
পবেলিশার্শলি., প্রথম সংস্করণ, ১৯৬৯, কলিকতা  
২. দাস দেবকুমার সংস্কৃত সাহিত্যের ইতিহাস  
সৌকিক), সচেন, কলকাতা  
৩. তুলনামূলক আশোচনায় রামায়ণ ও মায়  
বংশোপাখ্যে বিবেকানন্দ কৃত ত্রিংশ  
৪. কনু কুমার, মহাভারতের কথা, এই সি সাক্ষা  
কলিকতা, ১৯৭৮  
৫. শাস্ত্রী ওপলীশ, উপনিষৎ সংগ্রহ ১-২, দ্বিতীয়  
বারলসী, ১৯৭০  
৬. মি.এ. ব্যক্তোশ্বর মহাভারত চিয়া নবম সংস্করণ  
১৩৯২ ওস  
৭. সেন মনোমীত রামায়ণ ও মহাভারত : ন্যাস  
ক্রমীয়া ভট্টাচার্য, কলিকতা, ১, ১৯৭৭  
৮. জয়দয়াল গোয়েন্দা, সংস্কৃত মহাভারতের  
শ্রেণ, গোবর্ধনপুর, ২০১৪  
৯. জয়দয়াল গোয়েন্দা, সংস্কৃত মহাভারতের  
শ্রেণ, গোবর্ধনপুর, ২০১৪  
১০. কৃতিবাস বিহরিচন্দ সচিত্র শতকাত রজন্য রচনা  
লাহিটী, দেবদগ নবী, দেবদগ মে, ৯।  
কলিকতা, ৭৩, ২০০০

কসমেত, স্বাভাবিকতার কাম সুকণ্ঠ হতে যাতে না। কসমেত  
তা মানুষের উচ্চতর দেহস্বভাবকে রক্ষিত করে জাগ্রত  
করে না।

বাস্তবিক রামায়ণে কাসের কোন লক্ষণ দেখানি। কিন্তু  
মহাভারতে কেম্বাস কাসকে মানস সংকর এবং শাশ্বত  
বলেছেন। মহাভারতে কাসের লক্ষণ প্রসঙ্গে গলা হয়েছে—  
মানুষের পক্ষ জ্ঞানেশ্বরের সঙ্গে ভেদাভেদের সম্পর্কে যে  
শ্রীতি ভঙ্গ্যম তাতেই কাস বলা হয়েছে। রামায়ণে কাসের  
কোন লক্ষণ না দেখা হলেও দুই প্রকার কাসের উল্লেখ  
পওয়া যায়। এক প্রকার কাস হল অভিলষিত বস্তুর  
উপভোগ দ্বিতীয়টি হল স্ত্রী-পুরুষের মিলনজনিত সুখ।  
যদিও উভয় মহাকাব্যেই দুই প্রকার কাস থেকে মানুষকে  
সচেতন থাকতে বলা হয়েছে। ওধু সাধারণ মানুষই নয়,  
ঋষি, দেবতা এবং মুনি প্রভৃতির এই দ্বিতীয় প্রকার  
কাসের ফলে তাদের জীবন সর্বনাশ হয়েছে। যেমন  
রামায়ণে আমরা লক্ষ্য করি বিশ্বাসিত কঠোর তপস্যায় মগ্ন  
ঋষিদের সময় মেনকা নামে এক সুন্দরীর রূপে সুভ হন  
এবং কামাসক্ত হওয়ার তিনি সিদ্ধির চরম সীমায় পৌঁছাতে  
স্বার্থ হন।

রামায়ণে আমরা লক্ষ্য করি রাজা দশরথ কৈকেয়ীর  
প্রতি অনুরক্ত হয়ে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হন। আর এই প্রতিজ্ঞা  
রক্ষার্থে রামকে রাজ্য থেকে বনবাস যাওয়ার আদেশ দেন।  
যার ফলে দশরথ নিস্বামী মানসিক কষ্ট ভোগ করেন।  
অতিরিক্ত কামসক্ত হয়ে অবৈধচক্রের মতো কাজ করলে  
স্বী চরম পরিণতির সম্মুখীন হতে হয় বাস্তবিক ত্যাই একটা  
দুর্ভাগ্য উপস্থাপন করেছেন রাজা দশরথের মধ্য দিয়ে।

মহাভারতে বলা হয়েছে ধর্ম ও অর্থের কথা না ভেবে  
যে ব্যক্তি কেবল কাসের কথা চিন্তা করে সে ব্যক্তি নিন্দার  
পাত্র। কিন্তু জীবন যে কামশূন্য নয় সেকথাও স্বীকার করা  
হয়তো। মানুষের ধর্ম, অর্থ ও কাম এই তিনটির প্রতি  
আসক্তি আছে। কিন্তু এই তিনটির মানবজীবনে প্রবল  
কোনটি সেই প্রশ্ন প্রসঙ্গে রাম এবং জীমের মতের মিল  
লক্ষ্য করা যায়। বনবাসের প্রথম রায়ে রাম তাঁর পিতার  
দুঃখ কষ্ট দেখে বলেন, পিতার দুঃখ দেখে মনে হচ্ছে ধর্ম,  
অর্থ থেকে কামই প্রবল, সেইরূপ যুধিষ্ঠির যখন তার চার  
ভাইকে বিজ্ঞাসা করেন যে যিৎপেরি মধ্যে শ্রেষ্ঠ কোনটি?  
স্বীম প্রহ্মের উত্তরে বলেন, কামই সব কিছুই মূল। ধর্ম,

যাকে লাভ করলে তার কিছুই সমস্যা  
সব প্রয়োজনের অবশ্যন ঘটে তাই হন  
মোকশ্যভের পর যুক্তিরে স্বার্থে কাম  
কামন থাকে না তাই থেকে সুখের  
উভয় মহাকাব্যেই ধর্ম, অর্থ, কাম  
চতুর্গণ বলা হয়েছে। মোক্ষই চতুর্গণের  
সিদ্ধান্তই উভয় মহাকাব্যে স্বীকৃত  
মহাকাব্যেই নানা যুক্তি দিয়ে  
মোক্ষের অর্থগান শোনা দিয়েছে।  
চতুর্গণেরি প্রত্যেকটিই যেমন বিস্তৃত  
রামায়ণে তা পাওয়া যায় না। এখানে কেবল  
রূপে ব্রহ্মলোক, পরলোক, স্বর্গলোক ইত্যাদি  
পেয়ে থাকি।

তথ্যসূত্র :

১. জামুন্সী সুসিংহসন্য, বাস্তবিক কাম ও মত  
পাবলিশার্স লি, প্রথম সংস্করণ, ১৯৭২, কলকাতা  
২. দাস দেবকুমার সংস্কৃত সাহিত্যের ইতিহাস  
সৌভাগ্য, সপ্তম, কলকাতা  
৩. তুলনামূলক আবেগনার রামায়ণ ও মত  
বন্দ্যোপাধ্যায় বিবেকানন্দ বুক স্টো  
৪. বসু সুকেন্দ্র, মহাভারতের কথা, এই দি স্কল  
কলিকাতা, ১৯৭৮  
৫. শান্তী অগনীশ, উপনিষৎ সংগ্রহ ১-২, যুক্ত  
বাবানলী, ১৯৭০  
৬. মিত্র, ব্যাকরণের মহাভারত চিত্রা নবম সংস্করণ  
১৯৯২ বন  
৭. সেন মনোমীত রামায়ণ ও মহাভারত : মত  
অসীম ভট্টাচার্য, কলিকাতা, ১, ১৯৭৭  
৮. জয়দামাল গোয়েন্দকা, বাস্তব মহাভারতের মত  
শ্রেণি, গোরক্ষপুর, ২০১৪  
৯. জয়দামাল গোয়েন্দকা, বাস্তব মহাভারতের মত  
শ্রেণি, গোরক্ষপুর, ২০১৪  
১০. কৃতিবাস বিবচিত্র সচিত্র সপ্তকাত প্রমাণ ও মত  
লাহিড়ী, দেবদত্ত নন্দী, দেবদত্ত ওম, ১৯৭৮  
কলিকাতা, ৭০, ২০০০

এই গান প্রত্যক্ষভাবেই। তবে কথ্যক হতে হবে শাস্ত্রাসংগত।  
সংস্কৃত, মহাকাব্যের গান সুন্দর্য হতে পারে না। কোনো  
এই সঙ্গীতের উত্তর প্রেক্ষাপটকে বর্ণনামূলক করে  
করবে না।

ব্যক্তিগত প্রকাশের ক্ষেত্রে কোন সঙ্গীত কোনটি। কিন্তু  
সংস্কৃত থেকে পান্না কখনো জানেন সত্যিকার এবং শাস্ত্র  
ব্যবহারে। মহাকাব্যের কাব্যে সঙ্গীত প্রকাশ করা হয়েছে—  
অনুভবের লক্ষণে। মহাকাব্যের সঙ্গীত কেবলমাত্র সঙ্গীতের যে  
ঐতিহ্য সঙ্গীত তাকেই কখনো বলা হয়েছে। রামায়ণের কাব্যের  
কোন সঙ্গীত না পড়লেই কখনো তাই প্রকারে কামের উদ্দেশ্য  
পাওয়া যায়। এক প্রকারে কখনো হলে অতিরিক্ত বর্ণনা  
উপলব্ধি বিহীন। হলে শ্রী-পুত্রের মিলনামূলক সুখ।  
বহিঃ উভয় মহাকাব্যেই দুই প্রকারে কখনো থেকে মানুষকে  
সত্যকর খবরতে বলা হয়েছে। তাই সঙ্গীতের মাঝেই না।

সংস্কৃত এবং মূলি প্রকৃতির এই দ্বিতীয় প্রকার  
কাব্যের তখনো জানেন সঙ্গীত সত্যিকার হয়েছে। যেমন  
মহাকাব্যের কাব্যে সঙ্গীত কখনো সত্যিকার উপলব্ধি বর্ণনা  
কাব্যের সঙ্গীত কখনো নামে এক সুন্দরীর মধ্যে সুখ হলে  
এক কাব্যসংগত হওয়ায় তিনি নিজের চরিত্র সীমায় সৌভাগ্যে  
ব্যর্থ হলে।

অন্যান্য প্রকারে সঙ্গীত কখনো সত্যিকার কৈকেয়ীর  
প্রতি অনুভব হতে প্রতিভাবৃত হলে। অর্থাৎ এই প্রতিভা  
ব্রহ্মার্দে জানতে সত্যিকার হতে ব্রহ্মার্দে সত্যিকার ব্যঙ্গ  
যায় বলে সত্যিকার নির্দেশ মানসিক কষ্ট জ্ঞান করেন।  
অতিরিক্ত কাব্যসংগত হয়ে অতিরিক্তের মধ্যে কখনো  
কী চরিত্র পরিচয়ের সঙ্গীত হতে হয় ব্যক্তিগত তারই একটি  
দৃষ্টান্ত উপস্থাপন করেছেন সত্যিকার সত্যিকারের মতো দিয়ে।

মহাকাব্যের বর্ণনা হয়েছে কখনো ও অর্থাৎ কখনো না তবে  
যে ব্যক্তি কোনো কাব্যের কথা চিন্তা করে সে ব্যক্তি নির্দেশ  
পায়। কিন্তু সত্যিকার যে কাব্যসংগত নয় সেব্যথাও স্বীকার করা  
হয়েছে। মানুষের কখনো ও কখনো এই তিনিটির প্রতি  
আসক্তি আছে। কিন্তু এই তিনিটির মানসিকভাবে প্রকাশ  
কোনটি সেই প্রকারে কখনো রাম এবং ভীমের মতোই ছিল  
সত্যিকার যায়। ব্রহ্মার্দে সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার  
সুখ কষ্ট সেবা করেন। নিজের সুখ সেবা করে হলে কখনো  
অর্ধ থেকে কখনোই প্রকাশ, সেইসঙ্গে মুষ্টিভিত্তিক কখনো তার গায়  
তাইকে নিজের কখনো যে প্রকারের মাঝে মধ্যে সত্যিকার।  
তীয় প্রকারের উদ্দেশ্য বলা, কখনোই সব কিস্তির মুখ। কখনো,

অর্থ সত্যিকারের নিশ্চিন্দেই কখনো হয়।  
যাকে গান করলে সত্যিকার অর্থ সত্যিকার সত্যিকার।  
সব মহাকাব্যেরই সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
উভয় মহাকাব্যেই সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
তখনোই বলা হয়েছে। সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
নিশ্চিন্দেই উভয় মহাকাব্যেই সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
মহাকাব্যেই বলা সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
তখনোই সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
কখনোই তা নাওয়া যায় না। এখনো সত্যিকার।  
অর্থাৎ সত্যিকার, পরস্পর, সত্যিকার, সত্যিকার সত্যিকার।  
সেই ব্যক্তি।

**উদ্ধৃতি :**

১. ভাস্কর্য, মুষ্টিভিত্তিক, ব্যক্তিগত সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
পতঞ্জলির বি., প্রথম সত্যিকার, ১১৫, সত্যিকার সত্যিকার।
২. গান সত্যিকারের সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
সত্যিকার, সত্যিকার, সত্যিকার।
৩. সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।
৪. সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
সত্যিকার, ১১৫।
৫. সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
সত্যিকার, ১১৫।
৬. সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
সত্যিকার, ১১৫।
৭. সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
সত্যিকার, ১১৫।
৮. সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
সত্যিকার, ১১৫।
৯. সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
সত্যিকার, ১১৫।
১০. সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার সত্যিকার।  
সত্যিকার, ১১৫।

এই রূপ প্রবেশকৃত। তবে লামকে হতে হবে শাস্তস্বর।  
 কসমে, অধিকারের রূপ পূর্ণকার হতে পারে না। কেননা  
 যা মানুষের উক্তও বেসমসঙ্গে কল্পিত করে জাহাজ  
 করে না।

কাল্পনিক রামায়ণে কায়ের কোন লক্ষণ নেই। কিন্তু  
 মহাকাব্যে বেথবাল কামকে মানস সত্তার এক স্বভাব  
 হয়েছে। মহাকাব্যে কায়ের লক্ষণ প্রত্যেক বলা হয়েছে—  
 মানুষের শব্দ জ্যান্মিত্রিতের সঙ্গে ভোগাত্তর সম্পর্কে যে  
 শ্রীতি ভঙ্গায় হাতেই কায় বলা হয়েছে। রামায়ণে কায়ের  
 কোন লক্ষণ না দেখা হলেও খুই প্রকার কায়ের উল্লেখ  
 পাওয়া যায়। এক প্রকার কায় হল অভিলষিত বস্তুর  
 উপভোগ বিহীন। হল শ্রী পূর্ণবের মিলনজনিত সুখ।  
 কৃত্রিম উভয় মহাকাব্যেই খুই প্রকার কায় থেকে মানুষকে  
 সচেতন থাকতে বলা হয়েছে। ওই সাধারণ মানুষই নয়,  
 কবি, দেবতা এবং মূনি প্রভৃতির এই তৃতীয় প্রকার  
 কায়ের সঙ্গে তাদের জীবন সর্বলশ হয়েছে। তেমন  
 রামায়ণে আমকা লক্ষ্য করে বিশ্বাসিত কর্তার উপসর্গের মধ্য  
 থাকার সময় মেনকা নামে এক সুন্দরীর রূপে মুক্ত হল  
 এবং রামসত্ত হওয়ায় তিনি সিদ্ধির চরম সীমায় পৌঁছাতে  
 সক্ষম হল।

রামায়ণে আমকা লক্ষ্য করে রাজা দশরথ কৈকেয়ীর  
 প্রতি অনুরক্ত হয়ে প্রতিজ্ঞারত হল। তার এই প্রতিজ্ঞা  
 স্বকর্তে রামকে রাজ্য থেকে বনবাসে যাওয়ার আদেশ দেন।  
 যার ফলে দশরথ নিদারুণ মানসিক কষ্ট ভোগ করেন।  
 অভিবিক্ত কামসত্ত হয়ে অবিকৃতকো মতো কাজ করলে  
 কী চরম পরিণতির সম্মুখীন হতে হয় কাল্পনিক তারই একটা  
 দৃষ্টান্ত উপাধন করেছেন রাজা দশরথের মধ্য দিয়ে।

মহাকাব্যে বলা হয়েছে কর্ম ও অর্থের কথা না ভেবে  
 যে ব্যক্তি কেবল কায়ের কথা চিন্তা করে সে ব্যক্তি নিদার  
 পাশ। কিন্তু জীবন যে কামশূন্য নয় সেকথাও স্বীকার করা  
 হয়েছে। মানুষের কর্ম, অর্থ ও কাম এই তিনটির প্রতি  
 আসক্তি আছে। কিন্তু এই তিনটির মানবজীবনে প্রবল  
 কোনটি সেই প্রশ্ন প্রত্যেক রাম এবং জীবের মতের মিল  
 লক্ষ্য করা যায়। বনবাসের প্রথম রাতে রাম তাঁর পিতার  
 দুঃখ কষ্ট দেখে বলেন, পিতার দুঃখ দেখে মনে হচ্ছে কর্ম,  
 অর্থ থেকে কামই প্রবল, সেইরূপ যুবতির যখন তার চার  
 ভাইকে বিজ্ঞাসা করেন যে ত্রিভুর্গের মধ্যে কোনটি  
 তীব্র প্রাণের উত্তরে বলেন, কামই সব কিছুতে মূল। কর্ম,

যদি সকলের শিখরেই কাম যায়,  
 আরেক দিক কামের আর কিছুই কামের  
 সব প্রয়োজনে অগম্যন ঘটে তাই তা  
 মোক্ষপথেই সব শূন্যতের অর্থি কামের  
 কামের থাকে না তাই মোক্ষকে শূন্যতের  
 উভয় মহাকাব্যেই কর্ম, অর্থ, কাম ও  
 চতুর্ভুর্গ বলা হয়েছে। মোক্ষই চতুর্ভুর্গের  
 শিখরেই উভয় মহাকাব্যে স্বীকৃত হয়।  
 মহাকাব্যেই নানা ফলে বিভিন্ন ব্যক্তির  
 মোক্ষের জাগরণ পোনা পিতামহ। তাই  
 চতুর্ভুর্গের প্রত্যেকটির যেমন বিদ্যুত ফল  
 রামায়ণে তা শওরা যায় না। এখানে মোক্ষের  
 রূপে স্বকলোক, পরলোক, স্বর্গের ইতি  
 পেয়ে থাকি।

তথ্যসূত্র :

১. ভদ্রকী নৃসিংহসেন, কাল্পনিক রাম ও রাম  
 কাল্পনিক শি., প্রথম সংস্করণ, ১৯৯২, কলকাতা।
২. পদ্য বৈষ্ণবের সংস্কৃত সাহিত্যের ইতিহাস  
 (মৌলিক), সত্বেশ, কলকাতা।
৩. তুলনামূলক আলোকনয় রামায়ণ ও রামায়ণ  
 বন্দোপাধায় বিবেকানন্দ মুক্ত চিন্তা  
 ৪. কসু ব্রহ্মসেন, মহাকাব্যের কথা, এম এম এ  
 কলিকাতা, ১৯৭৮।
৫. শ্রীমতী জগদীশ, উপনিষৎ সংগ্রহ ১-২, কলিকাতা  
 বঙ্গবাসী, ১৯৭০।
৬. মিত্র, রামায়ণের মহাকাব্য চিন্তা নবম সংস্করণ  
 ১৯৯২ বঙ্গ।
৭. সেন মনোহর রামায়ণ ও মহাকাব্য, অক্ষয়  
 ভদ্রীয়া ভট্টাচার্য, কলিকাতা, ১, ১৯৭৭।
৮. জগদবাল গোত্বেশ্বর, সপ্তকিত্ত মহাকাব্যের  
 স্রোত, গোবর্ধনপুর, ২০১৪।
৯. জগদবাল গোত্বেশ্বর, সপ্তকিত্ত মহাকাব্যের  
 স্রোত, গোবর্ধনপুর, ২০১৭।
১০. কৃত্তিবাস বিরাচিত সচিত্র সপ্তকিত্ত মহাকাব্যের  
 শাহিত্যী, মেঘনথ নন্দী, মেঘনথ মে, স  
 কলিকাতা, ৭০, ২০০০।

এই কথ প্রয়োগসমূহ : এতে কামকে হতে হবে শাস্তস্বরূপ।  
 অসহ্য, অধিকারের কাম পুনর্বার হতে পারে না। কেননা  
 বা অনুভবের উচ্চতর খেপসজ্ঞাকে কলঙ্কিত করে আশ্রয়  
 করে না।

একটি রামায়ণে কামে কোন লক্ষণ ফেনি। কিন্তু  
 মহাভারতে বেদব্যাস কামকে মানস সংকর এবং শাখত  
 বলেছেন। মহাভারতে কামের লক্ষণ প্রসঙ্গে বলা হয়েছে—  
 মানুষের শর জ্বলন্তভাবে সনে ভোগ্যবস্তুর সংস্পর্শে যে  
 প্রীতি জন্মায় তাকেই কাম বলা হয়েছে। রামায়ণে কামের  
 কোন লক্ষণ না দেওয়া হলেও দুই প্রকার কামের উল্লেখ  
 পাওয়া যায়। এক প্রকার কাম হল অজিকারিত বস্তুর  
 উপভোগ্য দ্বিতীয়টি হল স্ত্রী-পুরুষের মিলনজনিত সুখ।  
 যদিও উভয় মহাকাব্যেই দুই প্রকার কাম থেকে মানুষকে  
 সতর্কতন থাকতে বলা হয়েছে। শুধু সাধারণ মানুষই নয়,  
 পতি, দেবতা এবং যুনি প্রকৃতির এই ত্রিতীয় প্রকার  
 কামের ফলে তাদের জীবন সর্বনাশ হয়েছে। যেমন  
 রামায়ণে আমরা লক্ষা করি বিশ্বাসের কঠোর তপস্যায় মগ্ন  
 থাকার সময় মেনকা নামে এক সুন্দরীর রূপে মুগ্ধ হন  
 এবং কানসতে হওয়ার তিনি সিদ্ধির চরম সীমায় পৌঁছাতে  
 পারেন।

রামায়ণে আমরা লক্ষ্য করি রাজা দশরথ কৈকেয়ীর  
 প্রতি অনুগত হয়ে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হন। আর এই প্রতিজ্ঞা  
 রক্ষার্থে রামকে রাজ্য থেকে বনবাসে যাওয়ার আদেশ দেন।  
 যার ফলে দশরথ নিরাপন্ন মানসিক কষ্ট ভোগ করেন।  
 অতিরিক্ত কামানন্দ হয়ে অবিকোচকেন মতো কাড় করলে  
 কী চরম পরিণতির সম্মুখীন হতে হয় বাস্তবিক তখনই একটা  
 দৃষ্টান্ত উপস্থাপন করেছেন রাজা দশরথের মধ্য দিয়ে।

মহাভারতে বলা হয়েছে ধর্ম ও অর্থের কথা না ভেবে  
 যে যুক্তি বেল কামের কথা চিন্তা করে সে যুক্তি নিম্নার  
 পাত্র। কিন্তু জীবন যে কামশূন্য নয় সেকথাও স্বীকার করা  
 হয়েছে। মানুষের ধর্ম, অর্থ ও কাম এই তিনটির প্রতি  
 আসক্তি আছে। কিন্তু এই তিনটির মানবজীবনে প্রবল  
 কোনটি সেই প্রশ্ন প্রসঙ্গে রাম এবং ভীষ্মের মতের মিল  
 লক্ষ্য করা যায়। বনবাসের প্রথম রাত্রে রাম তাঁর পিতার  
 দুঃখ কষ্ট দেখে বলেন, পিতার দুঃখ দেখে মনে হচ্ছে ধর্ম,  
 অর্থ থেকে কামই প্রবল, সেইরূপ যুধিষ্ঠির যখন তার চার  
 ভাইকে জিজ্ঞাসা করেন যে ত্রিবর্ণের মধ্যে কোঠ কোনটি?  
 তীব্র প্রশ্নের উত্তরে বলেন, কামই সব কিছুই মূল। ধর্ম,

অর্থ সকলের পিছনেই গায় আছে।  
 থাকে পাত ভরলে তার কিছুই লক্ষ্য  
 সব প্রয়োজনের অবধান ঘটি যাই হা  
 মোক্ষপাত্রে পর শূন্যের অর্থ কাম  
 কামনা থাকে না তাই মোক্ষের পূর্বাধ  
 চতুর্থা বলা হয়েছে। মোক্ষই সুখের  
 সিদ্ধান্তই উভয় মহাকাব্যে স্পষ্ট  
 মহাকাব্যেই নানা রূপে বিভিন্ন দিক  
 মোক্ষের স্বয়ংগন সোনা দিয়েছে।  
 চতুর্থা প্রত্যেকটির যেমন কিছু করে  
 রামায়ণে তা পাওয়া যায় না। এখানে মোক্ষের  
 রূপে ব্রহ্মলোক, পরলোক, স্বর্গলোক ইত্যে  
 পেয়ে থাকি।

**তথ্যসূত্র :**

১. জমুতী মুনিঃপ্রসাদ, বাস্তবিক ধর্ম ও কাম  
 পরমেশ্বর সি, প্রথম সংস্করণ, ১৯৯৯, ৬০০  
 পৃষ্ঠা, কলকাতা
  ২. দাস দেবপ্রসাদ সংস্কৃত সাহিত্যের ইতিহাস  
 সৌভাগ্য, সতেন্দ্র, কলকাতা
  ৩. তুলনামূলক সাহিত্যের ইতিহাস, বাস্তবিক ধর্ম ও কাম  
 বঙ্গোপনিবেশী, প্রথম সংস্করণ, ১৯৯৯, ৬০০  
 পৃষ্ঠা, কলকাতা
  ৪. বসু ব্রজেন্দ্রনাথ, মহাভারতের কাম, এই দিক  
 কলিকাতা, ১৯৭৬
  ৫. শাস্ত্রী জগদীশ, উপনিষৎ সংগ্রহ ১-২, ৬০০  
 বাবান্দী, ১৯৭০
  ৬. শ্রী, রামায়ণের মহাভারত চিত্রা নবম সংস্করণ  
 ১৯৯২ বঙ্গ
  ৭. সেন মনোমোহন রামায়ণ ও মহাভারত : ১-২, ৬০০  
 অসীমা ভট্টাচার্য, কলিকাতা, ১, ১৯৭৭
  ৮. অধ্যয়ন গোয়েন্দা, বাস্তবিক মহাভারতের অর্থ  
 সেন, গোলকপুর, ২০১৯
  ৯. জগদমাল গোয়েন্দা, বাস্তবিক মহাভারতের অর্থ  
 সেন, গোলকপুর, ২০১৯
১০. কৃত্তিবাস বিবর্তিত পত্রিকা সপ্তকায় রামায়ণের অর্থ  
 পাঠ্যক্রম, দেবদাস নন্দী, খেচর ও সেন, ১৯৭০  
 কলিকাতা, ৭০, ২০০০

**জ্ঞানের পদার্থবিদ্যা**

৩

অনিন্দিত

আজকের  
যোখন  
ISSN 0871-5819

আজকের  
**যোখন**

বিশেষ সংখ্যা  
মে - জুন, ২০১৮

সাহিত্যে নারী  
Women in Texts

প্রকাশক  
আজকের যোখন



## সূচিপত্র

সম্পাদকীয়

Foreword

বাংলাদেশের বাংলা উপন্যাসে নারী

প্রফেসর এস. সামাদি

প্রসঙ্গ সুশীলার উপাখ্যান :

অদিতি স্যানাজী

পুরুষতন্ত্রের আকাঙ্ক্ষিত নারীপ্রতিমা নির্মাণগাথা

21

বাংলা কথাসাহিত্যে নাচনী প্রসঙ্গ

আদিত্য প্রসাদ কাঞ্জি

28

বৈষ্ণবীয় আবহে নারী কথাসাহিত্যের

আলোকে এক সমালোচনাসংক্রান্ত সন্ধান

অপালা মল্লিক

35

কথাসাহিত্যিক সাবিত্রী রায়ের রোমান্টিক কবিসত্ত্বের অন্বেষণ

গোপা বিশ্বাস

41

হাজার চুরাপীর মা : মাতৃক গৌরবে মহীয়সী এক নারী

হৈমন্তী মণ্ডল

47

শান্তি শুভ : সংস্কারবিরোধী এক অভিনেত্রী

জয়শ্রী রায়

53

নারী স্বরূপের মানস ভিন্নতা : প্রসঙ্গ রবীন্দ্র উপন্যাস

মোহাঃ বাইরুল বাসার

61

সূচিত্রা ভট্টাচার্যের মিতিন মাসি : গোয়েন্দা কাহিনীর অন্য ভুবন

ললিতা রায়

65

বিভূতিকৃষ্ণের চিরন্তন জননী : সর্বজয়া

নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়ের ছোটগল্পে নারীর ভূমিকা

মাধব সরকার

72

রবীন্দ্র রচনায় চিত্রিত নারী

মোহ, মহসীন আলী

78

আশাপূর্ণা দেবীর ছোটগল্প : নারীর দর্পণে নারীর মন

মুদুলা বিশ্বাস

82

নরেন্দ্রনাথ মিত্রের ছোটগল্পে নারী চরিত্রের জটিলতা

নির্মাল্য মণ্ডল

90

মহাশ্বেতার স্ত্রীপদী, কানাইলালের স্ত্রীপদী : ক্ষমতার ভাষা, প্রতিবাদের নন্দনতন্তু

মোহা গুণবাইদুল্লাহ ইসলাম

107

আলপনা ঘোষের গল্পকথা

রোহন রায়

114

জ্যোতির্ময়ীর চোখে জ্যোতির্ময়ী : শিকল হেঁড়ার গান

সংহিতা সিন্ধু

121

বাংলা কথাসাহিত্যের জগতে মানিক বন্দ্যোপাধ্যায়ের কলমে নারী : ফিরে দেখা

শিল্পী বকসী

129

বাসলা ছড়ায় নারী : পোকে ও সাহিত্যে

সঞ্জয় কুমার ঘোষ

134

সুচরিতা ও ললিতা: একটি তুলনামূলক আলোচনা ও  
বর্তমান সময়ের প্রেক্ষিতে প্রাসঙ্গিকতা

শৌভিক চট্টোপাধ্যায়

141

শুভ্রা সামন্ত

146

153

বোধন

## জ্যোতিময়ীর চোখে 'জ্যোতিময়ী' : শিকল ছেঁড়ার গান

সঞ্জয়কুমার ঘোষ

সহকারী অধ্যাপক, বাংলা বিভাগ,  
গোলবা মহাবিদ্যালয়

ঊনবিংশ শতকের বাংলা সাহিত্যে আধুনিক যুগের সূত্রপাত ঘটার পর বাংলার সামাজিক, সাহিত্যিক, সাংস্কৃতিক জগতে দেখা দিল পরিবর্তন। এই শতকের আগে বাংলা সাহিত্যে ছিল পুরুষপ্রাধান্য। মহিলের সাহিত্যিক নিদর্শন চোখে পড়ে খুব সামান্যই। কিন্তু ঊনবিংশ শতকের মাঝামাঝি সময় থেকে ধীরে ধীরে মহিলাই আত্মপ্রকাশ করেন কবি, গল্পকার, ঔপন্যাসিক ও প্রাবন্ধিক রূপে। অন্তঃপুরচারিণীদের মধ্যে ক্রী-শিক্ষা প্রচলন সম্ভবত এর প্রধান কারণ।

বাংলা সাহিত্যের প্রথম উল্লেখযোগ্য নারী-সাহিত্যিক হিসাবে স্বর্ণকুমারী দেবীর নাম চিরস্মরণীয়। তাঁর তাঁর পূর্বেই হেমঙ্গিনী দেবী, নবীনকালী দেবী, শিবসুন্দরী দেবীর উপন্যাস প্রকাশিত হয়েছে, প্রকাশিত হয়েছে কুসুমকুমারী দেবী, প্রসন্নমতী দেবীর রচনা - তবু নারী সাহিত্যিকদের গদ্যে রচিত বিশিষ্ট সাহিত্যিক নিদর্শন অন্য প্রথম লাভ করলাম স্বর্ণকুমারী দেবীর লেখনীতে। তবে তাঁর আগে উপরিউক্ত লেখিকাদের সাহিত্যের ঐতিহ্য আমরা অস্বীকার করতে পারি না। তাই কোন একক প্রচেষ্টায় নয়, বাংলা সাহিত্যের নারীদের রচিত সাহিত্যে ধারাটি সমৃদ্ধ হয়েছে বহু নারীর সমবেত সাহিত্য-সাধনার দ্বারা। এই সাহিত্য-সাধনার ধারায় স্বর্ণকুমারী দেবীর পরবর্তী প্রজন্মের একটি বিশেষ উল্লেখযোগ্য নাম জ্যোতিময়ী দেবী।

ঊনবিংশ শতকের শেষ দশকে আবির্ভূত হয়ে সারা জীবন জ্যোতিময়ী দেবী অত্যন্ত গভীরতর সাহিত্য-সাধনায় রত ছিলেন। তাঁর সাহিত্য-সাধনার সূত্রপাত হয়েছিল প্রধানত কবিতা রচনার মধ্যে দিয়ে। পরবর্তীকালে সাহিত্যের বিভিন্ন আঙ্গিকে তিনি তাঁর প্রতিভার স্বাক্ষর রেখেছেন। গল্প, উপন্যাস, প্রবন্ধ, ভ্রমণকাহিনী, জীবনী, আত্মজীবনী, কিশোর উপযোগী সাহিত্য প্রভৃতি বিভিন্ন সাহিত্যক্ষেত্রে তাঁর শানিত লেখনীর পরিচয় পাওয়া যায়। তবে কথাসাহিত্যিক হিসাবে বাংলা সাহিত্যে তিনি বিশেষ মর্যাদার আসনে অধিষ্ঠিত।

ভারতের উত্তর-পশ্চিম প্রান্তে রাজস্থানের জয়পুর শহরে ২৩ জানুয়ারি ১৮৯৪ খ্রিস্টাব্দে (১০ মাঘ ১৩০১ বঙ্গাব্দ) জ্যোতিময়ীর জন্ম। পিতা অরিনাশচন্দ্র সেন ও মাতা সরলা দেবী। জ্যোতিময়ী শ্রীর্ধামু ছিলেন। তাঁর মৃত্যু ১৮ নভেম্বর ১৯৮৮ খ্রিস্টাব্দে (১ অগ্রহায়ণ ১৩৯৫ বঙ্গাব্দ), তখন তাঁর বয়স ৯৫ বছর।

জ্যোতিময়ী তাঁর সাহিত্য জীবন শুরু করেছিলেন কবি ও প্রাবন্ধিক হিসাবে। দীর্ঘ জীবনে তিনি কবিতা, প্রবন্ধ ও ছোটগল্প লিখেছেন অসংখ্য। কিন্তু ১৯৩২ খ্রিস্টাব্দ থেকে ১৯৮৪ খ্রিস্টাব্দে - এই পঞ্চাশ বছরের বেশি সময়ে তিনি মাত্র পাঁচটি উপন্যাস রচনা করেছেন। সংখ্যায় খুব কম হলেও গুণগত মানের বিচারে উপন্যাসগুলি অত্যন্ত সমৃদ্ধ। স্বতন্ত্র বৈশিষ্ট্যসম্পন্ন উপন্যাসগুলিতে সমাজ-সংসার-পরিবার ও মানুষ সম্পর্কে লেখিকার বিশেষ ধরনের দৃষ্টিভঙ্গির প্রকাশ ঘটেছে। নারীকে তিনি দেখেছেন অন্যচোখে। তাদের জীবনের বিভিন্ন রূপকে তিনি ফুটিয়ে তুলেছেন তাঁর উপন্যাসে।

জ্যোতিময়ী দেবীর প্রথম উপন্যাস 'ছায়াপথ' ধারাবাহিকভাবে প্রকাশিত হয়েছিল নীলা রায় সম্পাদিত 'জয়শ্রী' পত্রিকায় ১৩৩৯ বঙ্গাব্দের বৈশাখ সংখ্যা থেকে ১৩৪০ বঙ্গাব্দের ভাদ্র সংখ্যা (এপ্রিল ১৯৩২ থেকে আগস্ট ১৯৩৩) পর্যন্ত। ১৩৪১ বঙ্গাব্দের মাঘ মাসে (জানুয়ারি, ১৯৩৫ খ্রিস্টাব্দ) উপন্যাসটি গ্রন্থাকারে প্রকাশিত

হবে। 'ছায়াপথ' উক্ত পত্রিকার সমসাময়িক বঙ্গাব্দকে লেখিকা এক সবলা, প্রখর চাকরি করে, আর্থিক দিক থেকে স্বাভাবিক জীবনে বেঁচে থাকার একমাত্র উপায় হিসেবে 'ছায়াপথ'-এর নারী পত্রের আদম লোভকে ফোভ :

"আমাকে বাংলা পারবে না। আম পুরুষ মানুষ নয় হয় পিতা, অথ আমরাও থাকি ধরণের পাত্রীত্ব মন যোগাতে 'দেবো কাকে? এত বেশি যে

এখানে সুপ্রিয়ার উক্তির মধ্যে 'প্রিয়' অর্থলোলুপ, আদম, দুঃশেষপর্যন্ত দাদার বন্ধু

থবে সে দৃঢ় সংকল্প ছিল তা' না। পুরুষতান্ত্রিক সমাজের প্রতি প্রয়োজন নেই, তখন চাকরির

খঁটা বিভাস মেনেও নিতে পছন্দে চেয়েছিল যে, বিভাসে পোঁছেও আমরা স্পষ্ট জানতে

অধিকার-আকাঙ্ক্ষার পরিবর্তে "কাল চলো দুজনে যে

এখানে সুপ্রিয়ার উত্তর শুনা সন্দেহই, তারই উত্তরের বা

চলিবে। ব্যক্তিত্বের এই যে সুপ্রিয়া একদিন অর্থগৃহ তন্ময় স্বনির্ভরতার মাটির কারো নেই, তাকে তার

# একুশ শতক : বাংলা ও বাঙালি

সম্পাদনা

ড. মধু মিত্র  
পাণ্ডিয়া ব্যানার্জী



বঙ্গীয় সাহিত্য সংসদ

IKUSH SHATAK : BANGLA O BANGALI

A Collection of essays on Literature, language, Art and Culture of Bengal in 21st Century, Edited by Dr. Madhu Mitra & Papiya Banerjee, Published by Debasis Bhattacharjee, Bangiya Sahitya Samad, 6/2 Ramnath Majumder Street, Kolkata-9, July : 2019, Rs. 500.00

গ্রন্থস্বত্ব : বহরমপুর গার্লস কলেজ, মুর্শিদাবাদ

প্রকাশক এবং স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া এই বইয়ের কোনো অংশেরই কোনোরূপ পুনরুৎপাদন বা কোনো যান্ত্রিক উপায়ের মাধ্যমে প্রতিলিপি করা যাবে না। এই শর্ত লক্ষিত হলে উপযুক্ত আইনি ব্যবস্থা গ্রহণ করা হবে।

প্রথম প্রকাশ  
জুলাই, ২০১৯

প্রকাশক  
দেবাশিস ভট্টাচার্য  
বঙ্গীয় সাহিত্য সংসদ  
৬/২, রমানাথ মজুমদার স্ট্রিট  
কলকাতা : ৭০০০০৯

প্রচ্ছদ  
অতনু গাঙ্গুলী

অঙ্কন বিন্যাস  
শালিনী ভট্ট  
১৯/এইচ/এইচ গোয়াবাগান স্ট্রিট  
কলকাতা : ৭০০০০৬

মুদ্রক  
অম্বালা প্রিন্টার্স  
কলকাতা : ৭০০০০৯

ISBN: 978-93-88988-17-9

মূল্য : পঁচাত্তর টাকা

## সূচিপত্র

একুশ শতকের বাংলা ও বাঙালি :		
বাংলাদেশের প্রেক্ষাপট	৯	—গোলাম মুস্তাফা
দেশভাগ, প্রব্রজন, অভিবাসন : অস্তিত্বের সংকট		
ও অসমের সাম্প্রতিক বাংলা সাহিত্য	৩০	—দীপেন্দু দাস
প্রসঙ্গ সরস্বতীর গাজন	৪১	—শক্তিনাথ বা
বিশ্বায়ন—একুশ শতক—তিনকন্ঠের কথা জগৎ	৫৭	—বিকাশ রায়
বাণী বসুর অমৃত : একুশ শতকের দর্পণে	৭১	—হেনা সিন্ধা
আত্মপরিচয়ের খোঁজে বাঙালি : প্রাগাধুনিক পর্ব		
থেকে একুশ শতকের অভিমুখ	৭৭	—মধু মিত্র
অনুভূতির বর্ণমালা : প্রচৈত গুপ্ত'র গল্প-৩৩	৮৯	—পাপিয়া ব্যানার্জী
সাহিত্যে 'ইকোক্রিটিসিজম' এবং 'ইকোফেমিনিজম'	৯৯	—আনিসুর রহমান
বৃহত্তর চাকদেহের ওঁরাও সম্প্রদায়ের পর্ব ও গানে		
একুশ শতকের প্রভাব	১০৪	—সত্যরঞ্জন বিশ্বাস
একুশ শতকের বাংলা কবিতা :		
বাঙালির বহুকৌণিক উচ্চারণ	১১৮	—অরিজিৎ ভট্টাচার্য
একুশ শতকে মুসলমান পত্রপত্রিকায়		
প্রকাশিত সমাজ-চিত্র	১২৪	—হাসনারা খাতুন
সুনীল গঙ্গোপাধ্যায় ও তাঁর গোবুলিবেলার কবিতা	১৩১	—সুমিত বন্দ্যোপাধ্যায়
একুশ শতকে পরিবর্তিত মূল্যবোধ ও		
বাঙালির বিনোদন	১৪৪	—নীতীশ ঘোষ
একুশ শতকে বাংলায় গৌণধর্ম চর্চার		
বৈচিত্র্য ও প্রাসঙ্গিকতা	১৫৩	—শুভঙ্কর দাস
সোশ্যাল মিডিয়ায় বাঙালি সাহিত্যের চর্চা :		
একটি একুশ শতকীয় সভাবনা	১৬০	—রাফেল পন্ডা
একুশ শতক ও একটি সিনেমা	১৬৬	—সুতর্পা মুখোপাধ্যায়

একুশ শতকের বাংলা ছোটগল্পে গ্রন্থটির ব্যবহার গ্রন্থসমূহ	৩২৪	— তুষার দে
কমলেশ পালের কবিতার উত্তরণ : বিশেষ থেকে একবিংশ শতাব্দী	৩৪১	— বৃন্দাবন বিশ্বাস
একুশ শতক : বিশ্বায়ন ও বাংলা ছোটগল্প	৩৪৬	— সফিকুল হাসান মল্লিক
একুশ শতকে বাংলা ভাষার গঠন	৩৫৪	— মোঃ আফরুক সের
একুশ শতকের আন্তর্জাতিক খ্যাতিসম্পন্ন ঐতিহাসিক চিত্রিত পালিত	৩৫৮	— সতীপ্রসাদ দে
বাণী বসুর পদ্য : একুশ শতকের সাহিত্যের পালাবদলের চিত্র	৩৬৬	— মৌসুমী সিংহ
কবি কৃষ্ণা বসুর দৃষ্টিতে একবিংশ শতাব্দীর বাঙালি নারী	৩৭১	— মিঠুন দত্ত
বিশ্বায়নের আগ্রাসন ও বাংলার সাংস্কৃতিক স্বকীয়তার অবনমন	৩৭৬	— পাপিয়া বিশ্বাস
একুশ শতকে চৈতন্যচর্চা	৩৮২	— শ্রীবাস বিশ্বাস
বীরভূমে লোকসংস্কৃতির চর্চা—একুশ শতক	৩৮৯	— নারায়ণগোপাল কৈবর্ত
কবি জয় গোস্বামীর একুশ শতকে প্রকাশিত কাব্যে প্রকৃতি ও প্রেম ভাবনা এবং ভাষাশৈলী	৩৯৩	— সুতপা ঝড়ঙ্গী
একুশ শতকে লোকসংস্কৃতির আলোকে লালনের প্রাসঙ্গিকতা	৪০১	— পুলকেশ মণ্ডল
বিশ্বায়ন ও বাংলা সংস্কৃতি	৪১০	— ননীগোপাল মালো
'আমার জীবন' ও একুশ শতকের বাঙালি নারী	৪১৭	— ইন্দ্রাণী মজুমদার
একুশ শতকের পরিবর্তিত মূল্যবোধ ও বাঙালির বিনোদন	৪২২	— শ্রাবণী সরকার
বিশ্বায়ন ও আমরা—এক ঝগকে	৪২৯	— সুপম মুখার্জী
নৃসিংহপ্রসাদ ভাদুড়ীর ভাবনার প্রাচীন সমাজ ও একুশ শতক	৪৩৪	— অম্বরা সাহা
বিশ্বায়ন ও একুশ শতকে বঙ্গ সংস্কৃতি	৪৪০	— রঞ্জুণী সরকার
একুশ শতকের বাঙালি সংস্কৃতিক ড. সীতানামা আচার্য	৪৪৪	— শতাব্দী চ্যাটার্জী
বিশ্বায়ন ও একুশ শতকের পরিবর্তিত বাঙালি	৪৫৩	— অঞ্জনা সীতা

# একুশ শতকে চৈতন্যচর্চা

## শ্রীবাস বিশ্বাস

বাংলাদেশের ঐতিহাসিক কর্মে, সাহিত্য-সংস্কৃতিতে, সৃষ্টিশীল-কল্পনায় চৈতন্যদেবের প্রভাব প্রত্যক্ষ পড়তেই মু-কাবেই পড়েছে। তাঁর জীবনকালেই তাঁকে নিয়ে চর্চা শুরু হয়েছে। ষোড়শ-সপ্তদশ শতক পেরিয়ে অষ্টাদশ শতকের কাব্য-কবিতায় সে ধারা অব্যাহত ছিল। আসলে চৈতন্যদেব প্রভাবিত গ্রেমধর্ম তথা ভক্তিবাদ মানবতাত্ত্বিক হতে পেরেছিল। তাহিত্যে উনিশ শতকে রেনেসাঁসের কালেও মানুষ সমানভাবে তাঁকে গ্রহণ করেছে। আর সেই চর্চার ধারা বিশ শতক পেরিয়ে একুশ শতকেও প্রবহমান। বর্তমান নিবন্ধে আমরা 'একুশ শতকে চৈতন্যচর্চা' বিষয়ে আলোকপাত করবো।

মধ্যযুগে চৈতন্যচর্চার ধারা ছিল কাব্য-কবিতা নির্ভর। আধুনিককালে বিশেষ করে একুশ শতকে গদ্যের ধারায় চৈতন্যচর্চার অনেক ব্যাপ্তি ঘটেছে। প্রবন্ধ, জীবনীগ্রন্থ, উপন্যাস, গল্প, পত্র-পত্রিকা এমনকি লোকসাহিত্য ও সংস্কৃতির বিভিন্ন ধারায় চৈতন্যদেবের কথা উঠে এসেছে। অবশ্রীকুমার সান্যাল ও অশোক ভট্টাচার্যের সম্পাদনায় ২৩টি প্রবন্ধ নিয়ে প্রকাশিত হয়েছে 'চৈতন্যদেব : ইতিহাস ও অবদান' নামক গ্রন্থটি। প্রত্যেক প্রাবন্ধিক তাঁদের নিজ নিজ দৃষ্টিভঙ্গি নিয়ে চৈতন্যদেবকে নিয়ে ভেবেছেন এবং তাঁদের গবেষণালব্ধ অভিমত প্রকাশ করেছেন। সঙ্গে রেখেছেন প্রামাণিক তথ্য এবং সূত্রের প্রয়োগ ও উল্লেখ এবং পরিপূর্ণ ঐতিহাসিক দৃষ্টি।

গ্রন্থের দীর্ঘ ভূমিকাটি বিশেষ তাৎপর্যপূর্ণ। যার মধ্যে সূত্রাকারে চৈতন্যজীবনের নানা দিক উঠে এসেছে। চৈতন্যদেব সমকালীন বাংলাদেশের ভৌগোলিক-রাজনৈতিক, অর্থনৈতিক-সামাজিক ইতিহাসের কথা, চৈতন্যজীবনের কথা, চৈতন্য পরিমন্ডলের কথা, গৌড়ীয় বৈষ্ণবধর্মের ইতিহাসের কথা, গৌড়ীয় বৈষ্ণবধর্ম ও উপ সঙ্প্রদায়ের কথা, গৌড়ীয় বৈষ্ণব রসতত্ত্বের কথা ইত্যাদি। এমনকি বাংলা ভাষার বাইরে অন্যান্য ভাষার (ওড়িয়া ভাষা, ব্রজভাষা, ওড়রাভাষা ভাষা ইত্যাদি) সাহিত্যেও চৈতন্যদেবকে নিয়ে যে চর্চা হয়েছে সে দিকগুলির অনেকটা উঠে এসেছে।

শ্রীচৈতন্যের আবির্ভাবের ৫২৫ বছর পূর্তিকে সামনে রেখেই অধ্যাপক তাপস বসুর সম্পাদনায় প্রকাশিত হয়েছে 'শ্রীচৈতন্য: একালের ভাবনা' (২০১৪) গ্রন্থটি। একাধিক মননশীল, প্রবন্ধের মধ্যে উঠে এসেছে চৈতন্যজীবনের নানান দিক এবং একালের দৃষ্টিভঙ্গিতে চৈতন্য সম্পর্কে লেখকের ভাবনা-চিত্রা।

অধ্যাপক তাপস বসু 'ইতিহাস পুরুষ শ্রীচৈতন্য গণ-আন্দোলনের পুরোধা' বলে মন্তব্য করেছেন— 'ইনকিলাব্ জিন্দাবাদ অথবা 'বন্দেমাতরম্' বা ভারতমাতা জিন্দাবাদ শ্লোগান দিতে দিতে কোন মিছিল পথ পরিক্রমা করেছে।... কিংবা সম্প্রতি ঘটে যাওয়া অন্যান্য-অত্যাচার-অবিচারের বিরুদ্ধে জেহাদ ঘোষণা বা প্রতিবাদ প্রতিরোধ করা। এই প্রেক্ষাপটে আন্দোলন গড়ে তোলা। এই ছবির সঙ্গে সামুজা খুঁজে পাওয়া যাচ্ছে পাঁচশো বছর আগে স্বতন্ত্র মিলনের।

**VOICES:  
A NATIONAL RESEARCH ANTHOLOGY  
ON NORTHEAST INDIAN ENGLISH  
POETRY**

**Editors**  
**Dr. Subhashis Banerjee**  
**Department of English (JNC)**  
**&**  
**Dr. Tuhin Majumdar**  
**Department of English (KAMV)**

*Phendhuay*



**©: Editors**

**Date of Publication: 8<sup>th</sup> January 2021**

**All Rights Reserved**

No part of this publication may be reproduced, transmitted or stored in a retrieval system, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying recording or otherwise, without the prior permission of the editors.

**Website: [www.bookrivers.com](http://www.bookrivers.com)**

**Email: [publish@bookrivers.com](mailto:publish@bookrivers.com)**

**Address: C-1484, Indira Nagar, Lucknow 226016**

**ISBN: 978-81-948248-0-0**

**MRP: 550.00 INR**

*(The chapters of the book reflect exclusively the authors' understanding of the subject. The affiliating institutions and the editors are not responsible for any dispute regarding the subject matters and the content of the chapters.)*

## CONTENTS

1. Politics of Language: Ngangom's "A Poem for Mother" 23  
*-Dr Ankur Konar*
2. Water as a Recurrent Motif in Poems of Mamang Dai: A Close Reading 35  
*-Paromita Datta*
3. Poetry of the Anthropocene from Northeast India 49  
*-Mehdi Hasan Chowdhury*
4. Tracing the Paradox of Meaning in the Mizo Poetry: A Revolutionary Road towards Elimination, Assimilation and Resistance 76  
*-Dr Prasenjit Panda*
5. Voice of the Bodo Foothills: Poems of Anil Boro 90  
*-Dr Sanziou Boro*
6. The Strange Affair of Anthology Making and Syllabus Design: The Poetry of Robin S. Ngangom 103  
*-Dr Rizia Begum Laskar*
7. Miya Poetry and the Language Question 124  
*-Dr Sourav Kumar Nag*
8. Mysticism and Mamang Dai's River Poems 135  
*-Dr Chandan Kumar Panda*

9. Resisting Socio-Political Ostracism: A Reading of Selected Poems of Nini Vingurian, Lungalang and Yumlam Tana 154  
-Ananya Banerjee
10. Wailing Mountains: 'A Far Cry' from the Northeast 176  
-Dr Tuhin Majumdar
11. "I Live on the Edge": Desire for Space in Robin Ngangom's Select Poetry 194  
-Manali Choudhury
12. Poetry of North East as Balm of the Soul and its Universal Appeal 217  
-Madhu Sriwastav
13. Caught between the Troubled Streams: Lament of the Native in Chandrakanta Murasingh's Poems 240  
-Sree Prasad R.

CHAPTER-II  
"I LIVE ON THE EDGE": DESIRE FOR SPACE IN  
ROBIN NGANGOM'S SELECT POETRY

-Manall Choudhury

Robin S. Ngangom is perhaps the most noted poetic voice in the North-East Indian literature scene. He is known to have created his own brand of poetry, by first composing his poems in English and then translating them into his mother tongue, Meiteilon. Having been born in Imphal, Ngangom has had a first-hand experience of the crises that are ingrained into the existence of the population of this part of India, be it social, political, cultural or psychological. These crises have gradually created a chasm between who he is made to be and who he actually wants to be. In his search for his true identity, he addresses the distance that has been created due to such a collision between his desired Self and his reality. This distance is further heightened when he has to physically move away from his homeland, away from his family, especially his mother, to pursue better opportunities which are not made available to him in his homeland. With time, there emerges in him a deep sense of withdrawal from his true identity, his true space, pushing him to a peripheral existence. Through his poetry, Ngangom may be seen to make a journey inward, from the edge, towards the creation of a space where he could be close to his true identity. This space, Ngangom desires, may be devoid of the collisions that have so far defined his existence. The creation of such a

Voices | 193

Choudhury

# একুশ শতক : বাংলা ও বাঙালি

সম্পাদনা

ড. মধু মিত্র  
পাপিয়া ব্যানার্জী



বঙ্গীয় সাহিত্য সংসদ

**EKUSH SHATAK : BANGLA O BANGALI.**

A Collection of essays on Literature, language, Art and Culture of Bengal in 21st Century. Edited by Dr. Madhu Mitra & Papiya Banerjee, Published by Debasis Bhattacharjee, Bangiya Sahitya Samsad, 6/2 Ramanath Majumder Street, Kolkata-9, July : 2019. Rs. 500.00

গ্রন্থস্বত্ব : বহরমপুর গার্লস কলেজ, মুর্শিদাবাদ

প্রকাশক এবং স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া এই বইয়ের কোনো অংশেরই কোনোরূপে পুনরুৎপাদন বা কোনো যান্ত্রিক উপায়ের মাধ্যমে প্রতিলিপি করা যাবে না। এই শর্ত অঙ্কিত হলে উপস্থিত অধিকার বহরমপুর গার্লস কলেজের হবে।

প্রথম প্রকাশ

জুলাই, ২০১৯

প্রকাশক

দেবীশঙ্কর ভট্টাচার্য

বাংলা সাহিত্য সংসদ

৬/২ রামনাথ মজুমদার স্ট্রিট

কলকাতা : ৭০০০০৯

প্রচ্ছদ

সংগে গাঙ্গুলী

অক্ষয় বিনোয়

শালিনী ভট্টাচার্য

১৯/এইচ/এইচ গোস্বামীগান স্ট্রিট

কলকাতা : ৭০০০০৬

মুদ্রক

অজয় প্রিন্টার্স

কলকাতা : ৭০০০০৯

ISBN: 978-93-88988-17-9

মূল্য : পাঁচশো টাকা

## সূচিপত্র

একুশ শতকের বাংলা ও বাঙালি : বাংলাদেশের প্রেক্ষাপট	৯	—গোলাম মুস্তাফা
দেশভাগ, প্রব্রজন, অভিবাসন : অস্তিত্বের সংকট ও অসমের সাম্প্রতিক বাংলা সাহিত্য	৩০	—দীপেন্দু দাস
গ্রন্থ সত্ত্বতীর রাজন	৪১	—শক্তিমাথ ঝা
বিশ্বায়ন—একুশ শতক—তিনকনোর কথা জগৎ	৫৭	—বিকাশ রায়
বাণী বসুর অমৃত্যু একুশ শতকের দর্পনে	৭১	—হেনা সিন্ধা
আত্মপরিচয়ের ঝঞ্জে বাংলা : প্রাগায়ুগিক দর্প	৭৭	—মধু মিত্র
থেকে একুশ শতকের অভিমুখ	৯৯	—পানিরা ব্যানার্জী
অনুহৃতির বর্ণমালা : প্রাচ্য ও পশ্চিম গল্প-৩৩	৯৯	—আনিসুর রহমান
সাহিত্যে 'ইকোলজিক্যালিজম' এবং 'ইকোফেমিনিজম'	১০৪	—সত্যরঞ্জন বিশ্বাস
বৃহত্তর চান্দবহুর ঐরাও সম্প্রদায়ের পরব ও গানে		
একুশ শতকের প্রভাব		
একুশ শতকের বাংলা কবিতা :		
বাঙালির বহুকৌণিক উচ্চারণ	১১৮	—অরিন্দ্র ভট্টাচার্য
একুশ শতকে মুসলমান পরপরিচয়		
প্রকাশিত সমাজ-চিত্র	১২৪	—হাসনারা খাতুন
দুর্নীতির পাল্পাণ্যম '৩' ঊর্গে গোমুলিবেলার কবিতা	১৩১	—সুমিত্র বন্দ্যোপাধ্যায়
একুশ শতকে পরিবর্তিত মূল্যবোধ ও		
বাঙালির বিনোদন	১৪৪	—নীতীশ ঘোষ
একুশ শতকে বাংলায় গৌণধর্ম চর্চার		
বৈচিত্র্য ও গ্রামসংস্কৃতি	১৫৩	—তত্বদাস
সোশাল মিডিয়াম বাঙালি সাহিত্যের চর্চা :		
একটি একুশ শতকীয় সম্ভাবনা	১৬০	—রাহুল পড়া
একুশ শতক ও একটি সিনেমা	১৬৬	—সুতপা মুখোপাধ্যায়

একুশ শতকের বাংলা ছোটগল্প		
প্রযুক্তির ব্যবহার প্রসঙ্গ	৩৩৪	—তুয়ার দে
কমলেশ পালের কবিতার উত্তরণ :		
বিংশ থেকে একবিংশ শতাব্দী	৩৪১	—বৃন্দাবন বিশ্বাস
একুশ শতক : বিশ্বায়ন ও বাংলা ছোটগল্প	৩৪৬	—সফিকুল হাসান মল্লিক
একুশ শতকে বাংলা ভাষার গঠন	৩৫৪	—মোঃ আবদুলকরিম সেন
একুশ শতকের সামাজিক ব্যতিসম্পন্ন ঐতিহাসিক চিত্রেত পালিত	৩৫৮	—সতীপ্রসাদ দে
বন্দী বসুর গল্প : একুশ শতকের সাহিত্যের পালাবদলের চিত্র	৩৬৬	—মৌসুমী সিংহ
কবি কৃষ্ণা বসুর দৃষ্টিতে একবিংশ শতাব্দীর বাঙালি নারী	৩৭১	—মিঠুন দত্ত
বিশ্বায়নের আগ্রাসন ও বাংলার সংস্কৃতিক চর্চায়তার অবনমন	৩৭৬	—পাণ্ডিত্য বিশ্বাস
একুশ শতকে চৈতন্যচর্চা	৩৮২	—শ্রীবাস বিশ্বাস
দৈনন্দিন জীবনসংস্কৃতির চর্চা—একুশ শতক কবি জ্ঞান প্রসূতির একুশ শতকে প্রকাশিত কাব্যে	৩৮৯	—নারায়ণপাল কৈবর্ত
প্রকৃতি ও প্রেম জীবন : একুশ শতাব্দীর একুশ শতকে জীবনসংস্কৃতির আলোক	৩৯৬	—সুতপা বড়সী
পাঠনের প্রাসঙ্গিকতা	৪০১	—গুলকেশ মণ্ডল
বিশ্বায়ন ও বাংলা সংস্কৃতি	৪১০	—মনীষগোপাল মালো
'অসহায় জীবন' ও একুশ শতকের বাঙালি নারী	৪১৭	—ইন্দিরা মজুমদার
একুশ শতকের পরিবর্তিত মূল্যবোধ ও বাঙালির নিয়মন	৪২২	—শ্রাবণী সরকার
বিশ্বায়ন ও আমরা—এক কালকে	৪২৯	—সুপম মুখার্জী
নৃসিংহপ্রসাদ ভাদুড়ীর জীবনায় প্রাচীন সমাজ ও একুশ শতক	৪৩৪	—অশুভা সাহা
বিশ্বায়ন ও একুশ শতকে বঙ্গ সংস্কৃতি	৪৪০	—রঞ্জিতী সরকার
একুশ শতকের বাঙালি সংস্কৃতিবিদ ড. সীতানাথ আচার্য	৪৪৪	—শতাব্দী চ্যাটার্জী
বিশ্বায়ন ও একুশ শতকের পরিবর্তিত বাঙালি	৪৫৩	—অঞ্জনা খাঁড়া



পুরানের নবনির্মাণ

# সাম্প্রতিক সাহিত্য

সম্পাদনা

স্নিগ্ধা চট্টোপাধ্যায়

## বীরভূমে লোকসংস্কৃতির চর্চা-একুশ শতক

নারায়ণগোপাল কৈবর্ত

নিজস্বওশে, বৈশিষ্ট্যভরা ভারতীয় সংস্কৃতি বিশ্ব দরবারে সম্মানীয় এবং গুরুত্বপূর্ণ। বংশপরম্পরায় ভারতীয়রা তাদের সংস্কৃতির ধারক ও বাহক। বীরভূমেও এর ব্যতিক্রম ঘটেনি। বীরভূমে মূলত স্থানীয়ভাবে অনাৰ্য জাতির প্রাধান্য বেশি। রাত অফলের অন্তর্ভুক্ত হওয়ার ফলে শ্রমজীবীরা প্রধান্য দেখা যায়। এখানে গ্রামের বিশাল জনগোষ্ঠীর নিজস্ব জীবন প্রণালীর মাধ্যমে শতকের পর শতক ধরে যে বহুমুখী ও বিচিত্রমুখী সংস্কৃতি গড়ে তুলেছে তা বীরভূমে লোকসংস্কৃতি নামে অভিহিত। বীরভূম হল পশ্চিমবঙ্গের লোকসংস্কৃতির অন্যতম পীঠস্থান। এখানকার দালমাটি, নটনালা, পাহাড়, জঙ্গলময়, ভূপ্রকৃতি, জলবায়ু, এখানকার পল্লীপাঠ, উপপাঠ, সিঁড়িপাঠ, সাধু, বৈষ্ণব, বাউল, ফকির, বহু মন্দির, আখড়া, আশ্রম, গির্জা, মসজিদ, আদিবাসী সাঁওতাল, এবং বৈষ্ণব, জৈন, হিন্দু, মুসলমান, লোকচার, চাষবাস, পোষাক-পরিচ্ছদ দীর্ঘকাল ধরে এই ভূখণ্ডের সংস্কৃতির ধারাকে পুষ্ট করেছে।

শ্রমজীবীরা বহিরাগতদের সংস্কৃতির জোয়ারে না ভেসে তারা নিজস্ব সংস্কৃতির সত্তাকে ধরে রেখে তাদের সংস্কৃতির বৃদ্ধির মধ্যে তারা আবদ্ধ ছিল। পূর্ব পুরুষদের কাছে প্রত্যক্ষভাবে সে অভিজ্ঞতা অর্জন করে তাকে অবলম্বন করেই জীবনযাত্রা নির্বাহ করে, নিজস্ব সংস্কৃতির পটভূমিতে সমন্বয়ধর্মী বাতাবরণ সৃষ্টি করে মিলনের সংস্কৃতিতে রূপান্তরিত হয়েছিল। সমালোচনা করে বলা হয় লোকসংস্কৃতি প্রধানত ঐতিহ্যমুখী, গতানুগতিক ও মধুর। গ্রামবাসীরা প্রাতিষ্ঠানিক শিক্ষার সুযোগ পায় না। স্বাতন্ত্র্য বজায় রাখার নামে প্রাচীন সংস্কারপ্রথা ও ঐতিহ্যকে আঁকড়ে ধরে। কিন্তু এই অভিযোগ ঠিক নয়। সরলতা, সজীবতা ও অকৃত্রিমতা লোকসংস্কৃতির বৈশিষ্ট্য। জাতির আত্মপরিচয় তার লোকসংস্কৃতি। সাধারণ মানুষের ভাষা, জীবনবোধ, মনোভা, সাহিত্য, পেশা এসব নিয়েই গড়ে ওঠে লোকসংস্কৃতি। এটা সহজাত, সহজিয়া আর সহনীয় হয়ে যাওয়া নদীর মতো। প্রখ্যাত সমাজবিজ্ঞানী স্যার মেটকাপের মতে—“গ্রামের মনুষ্য জীবনধারণের প্রয়োজনীয় খাদ্য ও পণ্য নিজেরাই উৎপাদন ও বিতরণ করে, এজন্য তাদের মনুষ্য হস্ত হস্তে হয় না। বাংলা স্বল্পভূমি ও স্বয়ংসম্পূর্ণ গ্রামগুলিকে ছোট ছোট রাষ্ট্র বলেছেন।” এই ধরনের প্রভাবে এ সব হারিয়ে যেতে পসেছে। এখন গ্রামে সে চতুর্মুখ নাই, গোয়ালভরা নাই, পুকুর মাছ নাই, চালে গড় নাই, গোলাভরা ধান নাই।

বীরভূমে বিভিন্ন মন্তুও ভাদুগান, টুসুগান, মেটুগান, মনসামঙ্গলগান, বাউল গান, মগর গান, মনুগান, সাঁওতালগীতি, মুসলমানদের বিয়ের গান, ধর্মপূজা, মনসাপূজা, দুর্গাপূজা, কল্যাণ ইত্যাদি বীরভূমে লোকসংস্কৃতিতে ও বৈচিত্র্যের মধ্যে ঐক্যের প্রতিফলন ঘটেছে। মনসামঙ্গলগান তাদের পক্ষে অসাধ্য হয়ে পড়েছে সামান্য খরচের অনুষ্ঠানগুলি এখন খরচহীন হয়ে পড়েছে। এখনও আমরা মরে বেঁচে আছি। আমাদের লোকসংস্কৃতি এখন ও সব ঠিক আছে। বীরভূমে লোক সংস্কৃতির কতকগুলি সংক্ষিপ্ত পরিচয় এই খানে তুলে ধরার চেষ্টা করছি—

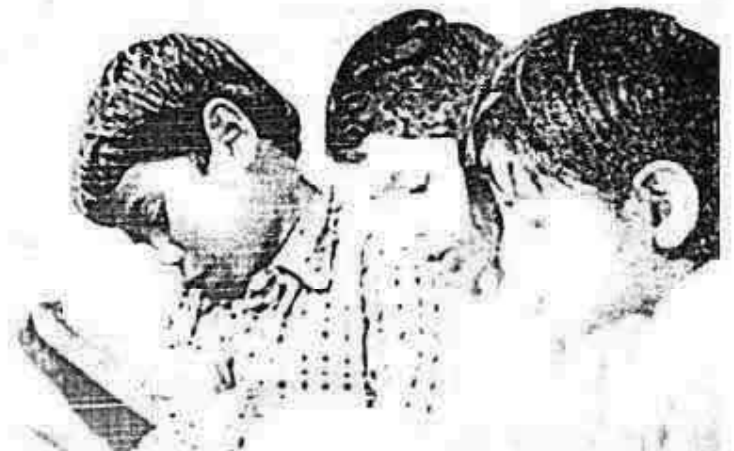
NP

# THE RIGHT OF CHILDREN TO FREE AND COMPULSORY EDUCATION ACT, 2009:

## PROSPECTS AND CHALLENGES



Edited By:  
**Parimal Sarkar**  
**Sanat. K. Ghosh**



## Right to Education - from the Perspective of Differently-abled Learners

*Sohini Ghosh*

### Introduction


The right of every child to education is proclaimed in the Universal Declaration of Human Rights (1948) as well as in the convention on the Rights of the Child (1989), strongly reaffirmed in the World Declaration on Education for All (1990) and commitment to United Nations Charter for Person with Disabilities (UNCRPD, 2007). Each Child is different with different learning needs, learning speeds and programming for education. Among these learners, some have more specialized needs than others, but the commitment to ensure their education too has been enshrined in Salamanca (1994).

The Right of Children to Free and Compulsory Education Act or Right to Education Act (RTE), is an Act of the Parliament of India enacted on 4 August 2009, which describes the modalities of the importance of free and compulsory education for children between 6 and 14 in India under Article 21a of the Indian Constitution. India became one of 135 countries to make education a fundamental right of every child when the Act came into force on 1 April 2010.

The Act makes education a fundamental right of every child between the ages of 6 and 14 and specifies minimum norms in elementary schools. It requires all private schools to reserve 25% of seats to children (to be reimbursed by the state as part of the public-private partnership plan). Kids are admitted in to private schools based on economic status or caste based reservations. It also prohibits all unrecognized schools from practice, and makes provisions for no donation or capitation fees and no interview of the child or parent for admission. The Act also provides that no child shall be held back, expelled, or required to pass a board examination until the completion of elementary education. There is also a provision for special training of school drop-outs to bring them up to par with students of the same age.

The RTE Act requires surveys that will monitor all neighbourhoods, identify children requiring education, and set up facilities for providing it. The World Bank education specialist for India, Sam Carlson, has observed: "The RTE Act is the first legislation in the world that puts the responsibility of ensuring enrolment, attendance and completion on the Government. It is the parents' responsibility to send the children to schools in the US and other countries."

The Right to Education of persons with disabilities until 18 years of age is laid down under a separate legislation - the Persons with Disabilities Act. A number of other provisions regarding improvement of school infrastructure, teacher-student ratio and faculty are made in the Act.



**The Right of Children to Free and Compulsory Education Act, 2009: Prospects and Challenges** by *Dr. Parimal Sarkar and Prof. (Dr.) Sanjay K. Ghosh* published by New Delhi Publishers, New Delhi.

© Publisher

First Edition 2019

ISBN: 978-93-88879-56-9

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise without written permission from the publisher and authors.

**New Delhi Publishers**

90, Samik Vihar, Mohan Garden, New Delhi – 110 059

Tel: 011-23256188, 9971676330

E-mail: [ndpublishers@gmail.com](mailto:ndpublishers@gmail.com)

Website: [www.ndpublisher.in](http://www.ndpublisher.in)

**Branch Office:**

21B Flat-GC, Green Park,

Southwest, Kolkata – 700013

ইশ্বর ২০০ : নবরূপে ঐতিহাসিক মূল্যায়ন  
সম্পাদনা : সুমন মুখার্জী  
প্রথম প্রকাশ : ডিসেম্বর ২০২০

Ishwar 200 : Nabarupe Aitihāsik Mulyayan  
Edited by Suman Mukherjee  
First Publication : December 2020

© সম্পাদক

প্রকাশক এবং সম্পাদকের লিপিত অনুমতি ছাড়া এই বইয়ের কোনো অংশেরই  
কোনোমাত্র পুনঃপ্রকাশন বা কোনো দ্বিতীয় উপায়ে মাধ্যমে প্রতিলিপি  
করা যাবে না। অন্যথায় আইনি ব্যবস্থা গ্রহণ করা হবে।

ISBN : 978-93-88868-63-1

প্রচ্ছদ : রেচিন্দু সান্যাল

আশাদীপ-এর পক্ষে অনিরুদ্ধ মণ্ডল কর্তৃক ১০/২বি রমানাথ মজুমদার স্ট্রিট  
কলকাতা ৭০০ ০০৯ থেকে প্রকাশিত, অক্ষয় বিন্যাসে লেজা ডট কম,  
৪৪/১-এ বেনিয়াটোলা লেন, কলকাতা ৭০০ ০০৯ এবং জয়শ্রী প্রেস  
৯১/১বি বৈষ্ণবানা রোড কলকাতা ৭০০ ০০৯ থেকে মুদ্রিত।

৫০০ টাকা

## সূচিপত্র

সমসাময়িক কাল	১১
সংস্কৃত	২৩
সমসাময়িক ইতিহাসবোধ	
সমসাময়িক ও তাঁর ইতিহাস চেতনা : প্রসঙ্গ বাংলার ইতিহাস ও জীবনচরিত	২৫
শ্রীশ্রী অচার্য	
সামাজিক বিদ্যাসাগর	
সমসাময়িক কৃষিক্ষেত্র : একটি আশ্বেষণ	৩৩
শ্রীশ্রী রায়	
সমসাময়িক বিজ্ঞান ভাবনা	
সমসাময়িক বিজ্ঞানচেতনা : একটি পর্যালোচনা	৪৮
শ্রীশ্রী প্রমোদ	
সমসাময়িক জনস্বাস্থ্য, চিকিৎসা ও পরিবেশ ভাবনা	
সমসাময়িক বিজ্ঞানচেতনা ও জনস্বাস্থ্য ভাবনা : একটি ঐতিহাসিক অধ্যয়ন	৫৯
শ্রীশ্রী পাল	
সমসাময়িক বিদ্যাসাগর : একটি ঐতিহাসিক অনুসন্ধান	৭১
শ্রীশ্রী মল্লিক	
সমসাময়িক চিকিৎসক বিদ্যাসাগর : একটি পর্যালোচনা	৮৪
শ্রীশ্রী সিন্ধু	
সমসাময়িক হোমিওপ্যাথি চিকিৎসা : একটি ঐতিহাসিক অধ্যয়ন	৯২
শ্রীশ্রী সান্দ্র	
সমসাময়িক পরিবেশ চিন্তা : প্রসঙ্গ শকুন্তলা ও সীতার বনবাস	৯৭
শ্রীশ্রী হোসেন	
সমসাময়িক অর্থনৈতিক চিন্তা	
সমসাময়িক বিদ্যাসাগরের কৃষি-ভাবনা : একটি ঐতিহাসিক পর্যালোচনা	১০৩
শ্রীশ্রী সরকার	

সংস্কৃত প্রজ্ঞার নাম : ঈশ্বর	
শিক্ষা বর্জন	২০৩
শিক্ষা সংস্কারক বিদ্যাসাগর	
বিদ্যাসাগরের শিক্ষাভাবনা	
শিবাজী সেন	২০৯
ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর ও ইংরেজি শিক্ষা	
স্বর্গীয় রত্ন	২১৭
ঐতিহাসিক ও বিদ্যাসাগর	
বৈষ্ণব কুমার মণ্ডল	২২৩
প্রাথমিক শিক্ষা সংস্কারে ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগরের অবদান	
শ্রীকৃষ্ণগোপাল হনাতী	২৩১
ভাষা ও সাহিত্যের বিকাশে বিদ্যাসাগরের অবদান	
শিবাজী সেনের বিদ্যাসাগর : প্রসঙ্গ শকুন্তলা ও সীতার বনবাস	
শিবাজী সেন	২৩৫
সংস্কৃত সাহিত্য সংস্কার এবং বিদ্যাসাগর : একটি আলোচনা	
শ্রীকৃষ্ণ কুমার সরকার	২৪৪
সংস্কৃত শিক্ষা সংস্কারের বিকাশ ও বিদ্যাসাগর : একটি পর্যালোচনা	
স্বর্গীয় রত্ন	২৫১
বিদ্যাসাগরের শকুন্তলা ও সীতার বনবাস : একটি সমীক্ষা	
স্বর্গীয় রত্ন	২৫৯
সংস্কৃত ভাষা-সাহিত্য বিদ্যাসাগর	
শিবাজী সেন	২৬৫
ভাষা এবং সংস্কৃত ভাষা-সাহিত্য ও সংস্কৃতির প্রসারে বিদ্যাসাগরের অবদান	
শিবাজী সেন	২৭২
শিক্ষাসংস্কার ও নারীশিক্ষা	
শিবাজী সেন ও বিদ্যাসাগর	
শিবাজী সেন	২৭৬
শিক্ষাসংস্কার ও নারীর ক্ষমতায়ন	
শিবাজী সেন কৈবর্তী	২৮৫
সংস্কৃত সংস্কারক বিদ্যাসাগর	
শিবাজী সেনের বাংলায় নারী : সামাজিক বিপন্নতা ও তার দূরীকরণে	
শিবাজী সেনের প্রয়াস এবং কিছু অসম্পূর্ণ সুমিত ভট্টাচার্য	২৮৯
শিবাজী সেন, বিধবা বিবাহ ও বিদ্যাসাগর : একবিংশ শতাব্দীর চোখে	
শিবাজী সেন	৩০৯



## বিদ্যাসাগর ও নারীর ক্ষমতায়ন

নাডুগোপাল কৈবর্ত্য

ঊনবিংশ শতাব্দীর সমাজ-সংস্কার, শিক্ষাসার ও নারীর ক্ষমতায়নে প্রাণপুরুষ ছিলেন ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর। কবিগুরু রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের মতে—“তার দেশের লোক যে বৃদ্ধ বন্ধ হয়ে আছেন, বিদ্যাসাগর সেই যুগকে ছাড়িয়ে জন্মগ্রহণ করেছিলেন।”<sup>১</sup> ঈশ্বরচন্দ্র রাজা রামমোহন রায় এবং ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর এই তিনজন ছিলেন ঈশ্বরচন্দ্রনাথের জীবনের আদর্শ। বিদ্যাসাগরের কর্মক্ষেত্র মোটামুটি বাংলাদেশেই সীমাবদ্ধ ছিল এবং তাঁর কর্মধারা, শিক্ষা বিস্তার, সংস্কৃত ভাষায় অধ্যয়ন ও সমাজ সংস্কারের নৈবেদ্যই প্রসারিত ছিল। তবুও তিনি বিরাট ব্যক্তিত্বসম্পন্ন মানুষ ছিলেন। তাঁর ব্যক্তিত্ব সংস্কারের সক্রীর্ণ সীমাকে ছাড়িয়ে গিয়েছিল।

ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর ১৮২০ খ্রিস্টাব্দে মেদিনীপুর জেলার বীরসিংহ গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। তাঁর পিতার নাম ঠাকুরদাস বন্দ্যোপাধ্যায় ও মাতার নাম ভগবতী দেবী। প্রকৃতি সংস্কৃত কলেজে তিনি পড়াশোনা করেন। ব্যাকরণ, কাব্য, অলঙ্কার, বেদান্ত, ন্যায়, জ্যোতিষ ও ধর্মশাস্ত্র বিষয়ে গাণ্ডিত্য লাভ করে মাত্র ত্রিশ বছর বয়সে তিনি বিদ্যাসাগর উপাধি লাভ করেন। তিনি প্রথমে ফোর্ট উইলিয়াম কলেজে এবং পরে স্কটল্যান্ড কলেজের অধ্যাপনা করেন। সংস্কৃত কলেজে অধ্যক্ষরূপে তিনি এই কলেজে প্রচুর সংস্কার ও পুনর্গঠন করেন। সংস্কৃত শিক্ষার প্রসারের জন্য তিনি সংস্কৃত কলেজ ও অ-ব্রাহ্মণ শ্রেণির ছাত্রদের ভর্তির ব্যবস্থা করেন। শিক্ষাক্ষেত্রে বিশেষ করে সংস্কৃত শিক্ষার প্রসারে তিনি বিপ্লব সৃষ্টি করেছেন, যার ফল শুধু সুদূরপ্রসারী নয়, সমগ্র পশ্চিম পাক্ষে অভ্যন্তর উপযোগী হয়েছে।

বিদ্যাসাগর বুঝেছিলেন নারীজাতি অনগ্রসর ও কুসংস্কারাচ্ছন্ন হয়ে থাকলে সমাজ পিছুনে থাকবে। তিনি উপলব্ধি করেন—“স্বীজাতি আপেক্ষাকৃত দুর্বল ও সামাজিক নিয়ন্ত্রণে পুরুষজাতির নিত্যস্ত অধীন—এই দুর্বলতা ও অধীনতা নিবন্ধন, তাহার পুরুষজাতির নিকট অবনত ও অগদস্থ হইয়া কালহরণ করিতেছে।”<sup>২</sup>

এই অবহেলিত, লাঞ্ছিত নারীকে মুক্তি দিতে পারে শিক্ষা, তাই তিনি নারীশিক্ষা ক্ষেত্রে অগ্রণীর ভূমিকা নেন। তিনি প্রথম বাংলার গদ্যকে সরস ও মধুর করে সাধারণের হৃদয়বন্দনা করে তুলেছিলেন। এজন্য তাকে বাংলা গদ্যের জনক বলা হয়। ছাত্রছাত্রীদের শিক্ষণীয় পাঠ্যপুস্তকের অভাব দূর করার জন্য—প্রথম বর্ষপরিচয়, কথামালা, বোধোদয়, সপ্তম পঞ্চবিংশতি, শকুন্তলা, সীতার বনবাস, আশ্রিতবিশ্বাস, আখ্যান মঞ্জরী, চরিতাবলী,

# একুশ শতক : বাংলা ও বাঙালি

সম্পাদনা

ড. মধু মিত্র  
পাপিয়া ব্যানার্জী



বঙ্গীয় সাহিত্য সংসদ

**Webinar Organizing Committee**

**Convener:**  
Dr. Arghadip Paul

**Co-convener:**  
Smt. Sujista Chatterjee

**Technical Directors:**  
Sri Ashis Biswas

**Members:**  
Dr. Md. Nasir Uddin Mondal  
Sri Debraj Howlader  
Sri Rejaul Molla  
Sri Shiv Narayan Verma  
Dr. Rana Das Choudhuri  
Smt. Monakati Bhascas  
Smt. Madhu Sriwastav



**BAMANPUKUR HUMAYUN KABIR MAHAVIDYALAYA**  
Bamanpukur, Minakhan, North 24 Parganas



Price : 500/-

BHKM Publication No. 1

**LEARNING ENVIRONMENT FOR THE 21<sup>ST</sup> CENTURY:  
ISSUES AND CHALLENGES**



Edited by  
Dr. Arghadip Paul



**BAMANPUKUR HUMAYUN KABIR MAHAVIDYALAYA**  
Bamanpukur, Minakhan, North 24 Parganas

LEARNING ENVIRONMENT FOR THE 21<sup>ST</sup> CENTURY:  
ISSUES AND CHALLENGES

Edited by  
Dr. Arghadip Paul

Proceedings of  
**ICSSR-ERC Sponsored International Webinar**  
On  
**Learning environment for the 21<sup>st</sup> Century:  
Issues and Challenges**

*Organised by*

**Department of Education, Bamanpukur Humayun kabir Mahaviylalaya**

*In Collaboration with*

**Internal Quality Assurance Cell, B.H.K Mahavidyalaya**

*Edited by : Dr. Arghadip Paul*



**Bamanpukur Humayun Kabir Mahavidyalaya**  
Bamanpukur, Minakhan, North 24 Parganas, Pin - 743425

***Published by;***

***Principal***

Bamanpukur Humayun Kabir Mahavidyalaya  
Bamanpukur, Minakhan, North 24 Parganas  
West Bengal, India

***Copyright@ Principal, B.H.K.Mahavidyalaya***

***Date of Publication: 16<sup>th</sup> February, 2021***

***All correspondence should be addressed to:***

***The Principal***

Bamanpukur Humayun Kabir Mahavidyalaya  
Bamanpukur, Minakhan, North 24 parganas  
Pin: 743425, West Bengal, India

Email: [jqacbhkmv@gmail.com](mailto:jqacbhkmv@gmail.com) / [bhkm2007@gmail.com](mailto:bhkm2007@gmail.com)

***Cover designed by:***

***Priyanka Printers***

***ISBN – 978-81-948929-1-5***

***Printed by:***

***Priyanka Printers***  
95/1, Purba Sinthee Road  
Kolkata- 700030

<b>11. CHANGING SCENARIO OF LEARNING ENVIRONMENT IN THE COVID- 19 PANDEMIC SITUATION</b> By Dr. Uma Sinha	86
<b>12. ONLINE LEARNING DURING COVID-19 PANDEMIC IN NAGALAND: A PANACEA</b> By Moameren Pongen and Dr. Chubakumzuk Jamir	92
<b>13. STUDENTS PERCEPTION AND ATTITUDE TOWARDS ONLINE EDUCATION DURING COVID-19 PANDEMIC IN BRAHMAPUTRA VALLEY OF ASSAM, INDIA</b> By Dr. Diganta Kumar Das	101
<b>14. ROLE OF TEACHER IN DESIGNING POSITIVE LEARNING ENVIRONMENT</b> By Kamalika Chakraborty	113
<b>15. FUTURISTIC PERSPECTIVES ON BLENDED LEARNING: CHARACTERISTICS, MODELS AND CONSTRAINTS IN IMPLEMENTATION</b> By Shyma Usman Abdulla & Dr. Mumthas N. S.	120
<b>16. CORRELATION OF LEARNING ENVIRONMENT AND ACADEMIC ACHIEVEMENT OF HIGHER SECONDARY STUDENTS</b> By Dr. Md. Afroz Alam	129
<b>17. YOUTUBE LIVE STREAMS AND POMODORO TECHNIQUE: ENSURING EFFECTIVE LEARNING ENVIRONMENTS IN TIMES OF COVID-19</b> By Geetanjali Malhotra & Aejaz Masih	136
<b>18. A STUDY ON THE STUDENTS' PREFERENCES TO COPE WITH THE CHANGING LEARNING ENVIRONMENT IN HIGHER EDUCATION</b> By Rituparna Hajra & Sanjib Kumar Gupta	144
<b>19. LEARNING ENVIRONMENT FOR 2021 CENTURY IN VIEW OF DISTANCE EDUCATION IN INDIAN CONTEXT</b> By Swadesh Deepak	155
<b>20. THE ROLE OF TEACHER'S IN DESIGNING A POSITIVE LEARNING ENVIRONMENT FROM HIGHER EDUCATION</b> By Ramavath Naresh	165
<b>21. TEACHER'S ROLE IN DESIGNING POSITIVE LEARNING ENVIRONMENT</b> By Manam. Sreenivasulu	171
<b>22. LEARNING ENVIRONMENT AS REFLECTED IN NATIONAL EDUCATIONAL POLICY 2020</b>  By Tinku Khatri	179
<b>23. LEARNING ENVIRONMENT AS REFLECTED IN NATIONAL EDUCATION POLICY- 2020</b> By Devananda AC	187

**A STUDY ON THE STUDENTS' PREFERENCES TO COPE WITH THE  
CHANGING LEARNING ENVIRONMENT IN HIGHER EDUCATION**

*Rituparna Hajra\* & Sanjib Kumar Gupta†*

---

**ABSTRACT**

Global pandemic Covid-19 has made immense impact in every sphere of human society including a significant shift in education from offline mode to online mode. Blackboards and white screens are shifted to mobile and laptop screens. The e-learning becomes indispensable part in the academic arena. Even the recent education policy of India encourages e-learning. All the academic programmes are conducted through online platform. University Grant Commission (UGC) allows various human resource development centers to shift in online mode. Different institutions are also used e-platform for different course in paid version as well unpaid version. Major advantage of these online courses is their easy accessibility where people can access the course from their suitable place. Wider participants, proper scope for interactions, economic and ecological viability, and hassle-free environment are the other important favorable aspects of online mode education. To run these courses, it is required a suitable set up according to the demands including device, live streaming medium, communication medium, time slot, course fees etc. These sources (factors) have plenty of choices (levels). This study aims to find the preference factors of students and their association with management of online platform. Feedback from students has been taken. Percentage response corresponding to each levels of a factor has been calculated to determine highest important levels for each factor. Mobile is selected as a device using which people want to participate courses. WhatsApp is the preferable communication medium. Morning slot with 3 hours/ day is preferable time slot. Google meet

---

\* *Department of Geography, Polba Mahavidyalaya, Email:*


*rituparnahajra2502@gmail.com*

† *Department of Statistics, Sarsuna College, Email: gsanjib.stat@gmail.com*

Mukand Babel · Andreas Haarstrick ·  
Lars Ribbe · Victor R. Shinde ·  
Norbert Dichtl  
Editors

# Water Security in Asia

Opportunities and Challenges in the Context  
of Climate Change

 Springer



*Editors*

Mukand Babel  
Asian Institute of Technology  
Bangkok, Thailand

Lars Ribbe  
TH Köln  
Köln, Germany

Norbert Dichtl  
TU Braunschweig  
Braunschweig, Germany

Andreas Haarstrick  
TU Braunschweig  
Braunschweig, Germany

Victor R. Shinde  
Asian Institute of Technology  
Bangkok, Thailand

ISSN 2364-6934

Springer Water

ISBN 978-3-319-54611-7

<https://doi.org/10.1007/978-3-319-54612-4>

ISSN 2364-8198 (electronic)

ISBN 978-3-319-54612-4 (eBook)

© Springer Nature Switzerland AG 2021

This work is subject to copyright. All rights are reserved by the Publisher, whether the whole or part of the material is concerned, specifically the rights of translation, reprinting, reuse of illustrations, recitation, broadcasting, reproduction on microfilms or in any other physical way, and transmission or information storage and retrieval, electronic adaptation, computer software, or by similar or dissimilar methodology now known or hereafter developed.

The use of general descriptive names, registered names, trademarks, service marks, etc. in this publication does not imply, even in the absence of a specific statement, that such names are exempt from the relevant protective laws and regulations and therefore free for general use.

The publisher, the authors and the editors are safe to assume that the advice and information in this book are believed to be true and accurate at the date of publication. Neither the publisher nor the authors or the editors give a warranty, expressed or implied, with respect to the material contained herein or for any errors or omissions that may have been made. The publisher remains neutral with regard to jurisdictional claims in published maps and institutional affiliations.

This Springer imprint is published by the registered company Springer Nature Switzerland AG  
The registered company address is: Gewerbestrasse 11, 6330 Cham, Switzerland

# Contents

## Part I Water Security Landscape

- 1 **Water, Food Security and Asian Transition: A New Perspective  
Within the Face of Climate Change** ..... 3  
P. R. Khanal
- 2 **Consolidating Drought Projections—Eastern Australia** ..... 17  
Shahadat Chowdhury and Michael Sugiyanto
- 3 **Planning for Climate Change and Mechanisms for Co-operation  
in Southeast Asia's Sesan, Sekong and Srepok Transboundary  
River Basin** ..... 31  
N. J. Souter, D. Vollmer, K. Shaad, T. Farrell, H. Regan, M. E. Arias,  
T. A. Cochran, and T. S. Andelman
- 4 **Environmental Security Issues No Longer of Secondary  
Importance for Regional Cooperation or Conflict:  
The Case of the Mekong River** ..... 45  
Christian Ploberger
- 5 **Enhancing and Operationalizing Water Security:  
Present Landscape and Emerging Research Needs** ..... 61  
Mukand S. Babel and Victor R. Shinde

## Part II Water Security Assessment and Planning

- 6 **The Threats to Urban Water Security of Indonesian Cities** ..... 73  
R. W. Triweko
- 7 **River Basin Planning for Water Security in Sri Lanka** ..... 85  
U. S. Imbulana
- 8 **Water Quality Index: A Tool for Wetland Restoration** ..... 99  
Nitin Bassi

<b>9</b>	<b>A Framework for Implementing Integrated Water Resources Management at River Basin Level in Indonesia</b> .....	<b>111</b>
	R. W. Triweko	
<b>10</b>	<b>A Study on Developing Theoretical Framework, Dimensions, and Indicators of Urban Water Security in Indonesia</b> .....	<b>123</b>
	J. E. Wuysang and S. B. Soeryamassoeka	
<b>11</b>	<b>Micro Level Vulnerability Assessment of Estuarine Islands: A Case Study from Indian Sundarban</b> .....	<b>135</b>
	R. Hajra, A. Ghosh, and T. Ghosh	
<b>12</b>	<b>Assessing Water Security at District Level: A Case Study of Bangkok, Thailand</b> .....	<b>155</b>
	A. Onsomkrit, M. S. Babel, V. R. Shinde, and V. P. Pandey	
<b>13</b>	<b>Assessment of Water Security in Indonesia Considering Future Trends in Land Use Change, and Climate Change</b> .....	<b>167</b>
	S. Tarigan and Y. Kristanto	
<b>Part III Water Availability Assessment</b>		
<b>14</b>	<b>Application of Hydrological Study Methodologies Used in African Context for Water Security in Asian Countries</b> .....	<b>181</b>
	D. P. C. Laknath and T. A. J. G. Sirisena	
<b>15</b>	<b>Implementation of Budyko Curves in Assessing Impacts of Climate Changes and Human Activities on Streamflow in the Upper Catchments of Dong Nai River Basin</b> .....	<b>195</b>
	Thi Van Thu Tran, Long Phi Ho, and Quang Phuoc Phung	
<b>16</b>	<b>Contribution of Snow and Glacier in Hydropower Potential and Its Response to Climate Change</b> .....	<b>207</b>
	R. B. Chhetri, N. M. Shakya, and N. R. Sitoula	
<b>17</b>	<b>Assessment of Variation of Streamflow Due to Projected Climate Change in a Water Security Context: A Study of the Chaliyar River Basin, India</b> .....	<b>223</b>
	S. Ansa Thasneem, Santosh G. Thampi, and N. R. Chithra	
<b>18</b>	<b>Addressing Water Resources Shortfalls Due to Climate Change in Penang, Malaysia</b> .....	<b>239</b>
	N. W. Chan, A. A. Ghani, Narimah Samat, R. Roy, M. L. Tan, and Haliza Abdul Rahman	
<b>19</b>	<b>Assessing the Physical Water Availability and Revenue Aspect of WUAs Under New Governance System: Case Studies of Pakistan</b> .....	<b>251</b>
	S. Ahmad, S. R. Perret, M. Imran, and S. A. Qaisrani	

# Chapter 11

## Micro Level Vulnerability Assessment of Estuarine Islands: A Case Study from Indian Sundarban



R. Hajra, A. Ghosh, and T. Ghosh

**Abstract** The estuarine islands of Indian Sundarban are highly vulnerable due to erosion, flooding, and population pressure. Quantitative assessment of vulnerability at micro-region level in this delta is still limited, which acts as a barrier to formulate effective implementable management strategies for increasing resilience. This study quantified the level of vulnerability using 783 household survey data from twenty-seven sampled 'Mouza' (lowest administrative boundary; village) through cluster random sampling, from the Sagar, Ghoramara, and Mousuni islands. Mouza level analysis has been carried out following the 'Composite Vulnerability Index' (CVI) considering physical and social variables like erosion, housing condition, electrification, population density, adult education, sanitation, and economic status as the major percentage of people 'Below Poverty Line' (BPL). Result suggests that all these Mouzas are within the rank of 'moderate to high' vulnerability and susceptible to both socio-economic and environmental changes. The 'hot spot' Mouzas identified are Sapkhali, Ghoramara, Bankimnagar, Shibpur, and Baliara, while 66% of remaining Mouzas are at the edge of vulnerability, and further deterioration of socio-ecological conditions may convert those into highly vulnerable. Considering the ecological importance of this delta, identification of thrust areas and action research to increase social resilience should be a priority to minimize the existing vulnerable conditions in this region.

**Keywords** CVI · BPL · Estuarine Islands · Vulnerability · Resilience · Indian Sundarban

A. Ghosh · T. Ghosh (✉)  
School of Oceanographic Studies, Jadavpur University, Kolkata, West Bengal, India

R. Hajra  
Department of Geography, Polba Mahavidyalaya, Hooghly, West Bengal, India

© Springer Nature Switzerland AG 2021  
M. Babel et al. (eds.), *Water Security in Asia*, Springer Water,  
[https://doi.org/10.1007/978-3-319-54612-4\\_11](https://doi.org/10.1007/978-3-319-54612-4_11)

# আধুনিক বাংলা উপন্যাসের গতিপ্রকৃতি

(১৯৪৭-২০২০)

সম্পাদনা

অজয় সাহা

আশাদীপ

১০/২বি, রমানাথ মজুমদার স্ট্রিট

কলকাতা-৭০০ ০০৯

Adhunik Bangla Upanyaser Gatipraktiti (1947-2020)  
Edited by Ajoy Saha  
First Publication : September 2020

প্রথম প্রকাশ : সেপ্টেম্বর, ২০২০

গ্রন্থ-বহু : অজয় সাহা

অক্ষর বিন্যাস :  
রেজা হুট কম

৪৪/১এ, বেনিগটোলা লেন,  
কলকাতা-৭০০ ০০৯

প্রচ্ছদ : তপসু সান্যাল

প্রকাশক এবং সম্পাদকের লিখিত অনুমতি ছাড়া এই বইয়ের কোনো  
আংশেই কোনোরূপ প্রকাশনা বা কোনো ব্যক্তিক উপায়েই মাধ্যমে  
প্রতিলিপি করা যাবে না। অন্যথায় আইনি ব্যবস্থা গ্রহণ করা হবে।

ISBN : 978-93-88868-61-7

অপরাধ-এর পক্ষে অতিরিক্ত মতল কর্তৃক ১০/২বি, রমানাথ মজুমদার স্ট্রিট  
কলকাতা-৭০০ ০০৯ থেকে প্রকাশিত এবং ডি. ডি. এন্ড কোম্পানী ৬৫, সীতারাম  
মেম স্ট্রিট, কলকাতা-৭০০ ০০৯ থেকে মুদ্রিত।

দাম ৪০০ টাকা

পঠা পুস্তকের বহিরে যিনি প্রথম পত্রতে শিখিয়েছিলেন  
মাকসুমা আখতারিকা জাহাঙ্গীর মুখতারিগ লকমলে  
এই গ্রন্থ অর্পণ করছি

## সূচিপত্র

### পর্ব-১

- বাংলা উপন্যাসের ধারার পরিচয়  
পশ্চিমবঙ্গের বাংলা উপন্যাসের ধারা (১৯৪৭-২০২০)  
অপেক্ষাকৃত চট্টোপাধ্যায় ২১  
বরেন্দ্র উপন্যাসের বাংলা উপন্যাসের ধারা (১৯৪৭-২০২০)  
প্রীত্বের চক্রবর্তী ৩৯  
হিন্দুস্তান বাংলা উপন্যাসের ধারা (১৯৪৭-২০২০)  
দৌলতী গুল ৪১  
উত্তর-পূর্ব ভারতের বাংলা উপন্যাস :  
পরিচয় ও নির্ধারিত উপন্যাসের পাঠপ্রতিক্রিয়া  
অজিত কুমার মিত্র ৬০  
বাংলাদেশের উপন্যাসের ধারা (১৯৪৭-২০২০)  
শবিক অজিত ৬৪

### পর্ব-২

- বিষয়বস্তু আন্দোলন  
স্বদেশ-পরবর্তী বাংলা রাজনৈতিক উপন্যাস  
উত্তম চ্যাটার্জী ৭৭  
বাংলা ঐতিহাসিক উপন্যাসের গতিপ্রকৃতি (১৯৪৭-২০২০)  
পদ্ম মুখোপাধ্যায় ৮৭  
শৈল্পিক উপন্যাস ও পুস্তককল্পিত উপন্যাসের ক্ষুদ্র বিন্যাস :  
প্রবন্ধ স্বদেশী পরবর্তী বাংলা উপন্যাস  
দীপক সরকার ৯৪  
স্বদেশ-উত্তর বাংলা উপন্যাসে উদ্ভাস সমস্যা  
দৌলতী গুল ১০৫  
স্বদেশ-উত্তর বাংলা উপন্যাসে শ্রমজীবী শ্রেণির সামাজিক বিবর্তন  
বসন্তী কুমারী ১১০

স্বদেশ-উত্তর বাংলা উপন্যাসে স্বল্পতরু ভাষিত উত্তর

সোপান গুল ১২৫

বিগত চল্লিশ বছরের বাংলা উপন্যাস (১৯৮০-২০২০) :

প্রবন্ধ জামশেদীন ও আতিক মনুখ

অক্ষয় পান্ডা ১৩৭

কর্মজগতে নারীর ভূমিকা : প্রবন্ধ স্বদেশী-উত্তর বাংলা উপন্যাস

সুমনা গুল ১৪৪

স্বদেশী-উত্তরকালে কিছু বিধবার সামাজিক অবস্থান :

প্রবন্ধ বাংলা উপন্যাস

অক্ষয় কুমার ১৬০

### পর্ব-৩

উপন্যাস ও ঐপন্যাসিকের আন্দোলন

ঐতিহ্য ও আধুনিকতার বিরোধিতার আলোকে 'স্বদেশী নিবন্ধন'

অনীক ভট্টাচার্য ও প্রবীণকুমার সেনগুপ্ত ১৭৭

'লৌহকপট' : কাব্যবাদের মনস্তত্ত্ব ও অস্তিত্বের অন্বেষণ

ফেলুচন্দ্র সাহা ১৮৪

'দোলনা' : মাতৃহত্যার অধিকার এবং তার নীতি

রীতা জর্জি দে ১৯০

যে বাঁচতে চায় সে বাঁচে : নীলা মজুমদারের উপন্যাস

স্বদেশী কবু ২০২

অদ্বৈত মল্লবর্মণের জীবনদৃষ্টিতে বাংলা সমাজের জীবনসঞ্চার

পবিত্র বিশ্বাস ২১৬

টেনিলা-স্বদেশী ও কবনে উদ্ভাস

সকিলা কবু ২২৪

'স্বদেশী' : এক মস্তকালীন সময়ের অন্বেষণ

সঞ্জয় ভের ২৩১

বাজলি মধ্যবিত্তের মলিন : প্রমাণ চৌধুরীর উপন্যাস

শুভম চ্যাটার্জী ২৩৭

মহাশ্বেতা দেবীর উপন্যাসে আবিষ্কার জননীকন

মামুন রশিদ খান ২৪৭

## ‘স্বরলিপি’ : এক সঙ্কটকালীন সময়ের আখ্যান

সঞ্জয় কুমার ঘোষ

প্রতিবাদী উপন্যাসের ধারায় একটি বিশেষ উল্লেখযোগ্য নাম সাবিত্রী রায়। বিশ শতকের চতুর্থ দশকে তাঁর সাহিত্যিক জীবনের সূচনা। সাবিত্রী রায়ের জন্ম ১৯১৮ খ্রিস্টাব্দের ২৮ এপ্রিল ঢাকায় বুড়িগঙ্গার পাশে অবস্থিত উয়াড়ি পল্লিতে। তাঁর প্রগতিশীল, বিদগ্ধ, বিদ্রোহী মনন তিনি পেয়েছিলেন উত্তরাধিকারসূত্রে। ছোটবেলা থেকেই তিনি সাহিত্য রচনা শুরু করেছিলেন। তবে তাঁর রচনা প্রথম প্রকাশিত হয়েছিল ১৯৪৪ খ্রিস্টাব্দের ২৯ ডিসেম্বর “‘চোখের জল ফেলো না মেরিয়ানা’ (অনুবাদ) ‘অরনি’ পত্রিকায় প্রকাশিত হয়েছিল”। কবিতা, গল্প, উপন্যাস — তিন আঙ্গিকেই ছিল তাঁর অবাধ যাতায়াত।

সাবিত্রী রায়ের প্রথম উপন্যাস ‘সৃজন’ প্রকাশিত হয় ১৯৪৬ খ্রিস্টাব্দে। মোট আটটি উপন্যাস তিনি রচনা করেছেন। এর মধ্যে দুটি মহাকাব্যিক উপন্যাস। তাঁর তৃতীয় উপন্যাস ‘স্বরলিপি’র প্রকাশ ১৯৫২ খ্রিস্টাব্দের সেপ্টেম্বর মাসে। স্বাধীনতা-উত্তর ভারতে শাসক শ্রেণির হাতে নিপীড়িত জনতার অজেয় মানবতার দলিল হিসেবে এই উপন্যাসটিকে আমরা চিহ্নিত করতে পারি।

‘স্বরলিপি’ উপন্যাসটির নামকরণ অত্যন্ত তাৎপর্যপূর্ণ। এই উপন্যাস কমিউনিস্ট আন্দোলনের একটি বিশেষ অধ্যায়কে কেন্দ্র করে রচিত। স্বরলিপির সপ্তম অধ্যায় যেমন সুবিন্যস্ত হয়ে গায়কের সঙ্গীতে আনে মূর্ছনা, তেমনি সমকালীন জীবনের নানা তরঙ্গাভিঘাত মরা জীবনে এনে দেবে সুস্থ প্রেরণা, তাই হয়ত বোঝাতে চেয়েছিলেন লেখিকা। তাঁর প্রথম দুটি উপন্যাস ‘সৃজন’ ও ‘ত্রিশ্রোতা’ তে কংগ্রেসের অহিংস আন্দোলনের ব্যর্থতা ও প্রকৃত স্বাধীনতা লাভের জন্য সাম্যবাদী আন্দোলনের অনিবার্যতা দেখিয়েছেন সাবিত্রী রায়। একজন কমিউনিস্ট হিসেবে তিনি বিশ্বাস করতেন, কংগ্রেসের আপোষকামী আন্দোলন সাম্রাজ্যবাদের তোষণ মাত্র। এর পাশাপাশি ‘স্বরলিপি’ উপন্যাসে সাবিত্রী রায় সাম্যবাদীদের ত্যাগ, নিষ্ঠা, জাতি-ধর্ম নির্বিশেষে মানুষকে ভালোবাসার ক্ষমতা ও শোষণমুক্ত শ্রেণিহীন সমাজ গঠনের জন্য যুগপৎ সাম্রাজ্যবাদ-সামন্ততন্ত্র ও মৌলবাদী শক্তিগুলির বিরুদ্ধে সংগ্রামের প্রয়োজনীয়তার কথা ব্যক্ত করেছেন। কমিউনিজমকে সাবিত্রী রায় অকুণ্ঠচিত্তে সমর্থন করতেন, কিন্তু কখনই কমিউনিস্ট মতাদর্শকে বিচার না করে শুধুমাত্র অন্ধভাবে সমর্থন করেননি।



# Sundarbans Mangrove Systems A Geo-Informatics Approach

Edited by  
Anirban Mukhopadhyay, Debashis Mitra, and  
Sugata Hazra

 **CRC Press**  
Taylor & Francis Group  
Boca Raton, London, New York  
A WILEY-INTERSCIENCE PUBLICATION



First edition published 2022  
by CRC Press  
6000 Broken Sound Parkway NW, Suite 300, Boca Raton, FL 33487-2742

and by CRC Press  
2 Park Square, Milton Park, Abingdon, Oxon, OX14 4RN

© 2022 selection and editorial matter, Anirban Mukhopadhyay, Debashis Mitra and Sugata Hazra;  
individual chapters, the contributors

CRC Press is an imprint of Taylor & Francis Group, LLC

Reasonable efforts have been made to publish reliable data and information, but the author and publisher cannot assume responsibility for the validity of all materials or the consequences of their use. The authors and publishers have attempted to trace the copyright holders of all material reproduced in this publication and apologize to copyright holders if permission to publish in this form has not been obtained. If any copyright material has not been acknowledged please write and let us know so we may rectify in any future reprint.

Except as permitted under U.S. Copyright Law, no part of this book may be reprinted, reproduced, transmitted, or utilized in any form by any electronic, mechanical, or other means, now known or hereafter invented, including photocopying, microfilming, and recording, or in any information storage or retrieval system, without written permission from the publishers.

For permission to photocopy or use material electronically from this work, access [www.copyright.com](http://www.copyright.com) or contact the Copyright Clearance Center, Inc. (CCC), 222 Rosewood Drive, Danvers, MA 01923, 978-750-8400. For works that are not available on CCC please contact [mpkbookspermissions@tandf.co.uk](mailto:mpkbookspermissions@tandf.co.uk)

*Trademark notice:* Product or corporate names may be trademarks or registered trademarks and are used only for identification and explanation without intent to infringe.

ISBN: 978-0-367-53881-1 (hbk)  
ISBN: 978-0-367-53883-5 (pbk)  
ISBN: 978-1-003-08357-3 (ebk)

Typeset in Times  
by codeMantra

# Contents

Preface.....	ix
Acknowledgments.....	xi
Editors.....	xiii
Contributors.....	xv
Introduction.....	xix

## **SECTION 1 Remote Sensing of Mangroves**

<b>Chapter 1</b> Remote Sensing of Mangroves.....	3
<i>Dewan Mohammad Enamul Haque, Tonoy Mahmud, Azmery Iqbal Afnan, Shamima Ferdousi Sifa, and Md. Kamruzzaman Tusar</i>	
<b>Chapter 2</b> Does Mid-Resolution Landsat Data Provide Sufficient Accuracy for Image Classification and Mapping at Species Level? A Case of the Bangladesh Sundarbans, Bay of Bengal.....	33
<i>Manoj Kumar Ghosh and Lalit Kumar</i>	
<b>Chapter 3</b> Effect of Statistical Relative Radiometric Normalization on Spectral Response of Mangrove Vegetation of Indian Sundarbans – A Comparative Performance Evaluation on Sentinel 2A Multi-Spectral Data.....	47
<i>Abhisek Santra, Debashis Mitra, and Shreyashi S. Mitra</i>	
<b>Chapter 4</b> Remote Sensing as a Tool for Mangrove Ecosystem Mapping and Monitoring: On Sundarbans' Perspective.....	67
<i>Kaushik Gupta, Niloy Pramanick, and Anirban Mukhopadhyay</i>	

## **SECTION 2 Ecology of Sundarbans a Geo-Informatics Approach**

<b>Chapter 5</b> Plant Diversity Assessment in Indian Sundarban Mangroves: A Geoinformatics Approach.....	95
<i>Subrata Nandy, Muna Tamang, and S.P.S. Kushwaha</i>	

<b>Chapter 6</b>	Spatio-Temporal Distribution of Microforams in the Sundarbans Mangrove Forest, Bangladesh: Response to Ecological Imbalance .....	109
	<i>Tumpa Saha, Mahmud Al Noor Tushar, Premanondo Debnath, and Subrota Kumar Saha</i>	
<b>Chapter 7</b>	Change Analysis of Biophysical Parameters of Mangrove Forests over Indian Sundarbans using Geospatial Techniques: A Special Emphasis on Leaf Area Index and Percentage Canopy Cover .....	125
	<i>Apratim Biswas and Chalantika Laha Salui</i>	

### **SECTION 3 Ecosystem Services Analysis using GIS**

<b>Chapter 8</b>	Economic Valuation of Ecosystem Services of Sundarbans Natural Reserve Region, India .....	145
	<i>Srikanta Sannigrahi, Francesco Pilla, Bidroha Basu, Arunima Sarkar Basu, P.S. Roy, and P.K. Joshi</i>	
<b>Chapter 9</b>	An Appraisal of Tourism Industry as Alternative Livelihood in Indian Sundarbans.....	167
	<i>Rituparna Hajra and Tuhin Ghosh</i>	
<b>Chapter 10</b>	An Analysis of Small-Scale Fisheries Management Status by Focusing on Degrading Fisheries Resources in the Sundarbans .....	189
	<i>Indrajit Pal, Afshana Parven, Md. Ashik-Ur-Rahman, Mohammad Sofi Ullah, and Khan Ferdousour Rahman</i>	

### **SECTION 4 Vulnerability of Sundarbans through Geospatial Analysis**

<b>Chapter 11</b>	Biophysical Vulnerability Assessment of Indian Sundarbans Mangrove.....	217
	<i>Sayani Datta Majumdar, Niloy Pramanick, and Sugata Hazra</i>	

---

# 9 An Appraisal of Tourism Industry as Alternative Livelihood in Indian Sundarbans

*Rituparna Hajra*  
Polba Mahavidyalaya

*Tuhin Ghosh*  
Jadavpur University

## CONTENTS

9.1	Introduction .....	167
9.2	Data and Methods.....	170
9.3	Livelihood Issues in the Islands of Indian Sundarbans Delta .....	171
9.4	Tourism Profile of Indian Sundarbans.....	172
	9.4.1 Nature and Wildlife Attractions .....	172
	9.4.2 Religious Attractions .....	176
9.5	Pilgrimage Tourism: An Alternative Livelihood.....	177
9.6	Discussion.....	185
9.7	Strategy for Tourism Industry as GSTC.....	185
	References.....	186

## 9.1 INTRODUCTION

Tourism industry is well known for its contribution to global Gross Domestic Product (GDP) which is around USD 8.9 trillion (10.3% to total GDP) in the year 2018 (World Travel & Tourism Council 2019). It brings economic value through revenue generation and foreign money exchange to many countries. This sector has significant direct and indirect impact on country's economy. Environment friendly practices in tourism industry also benefit the natural environment along with employment provision and cultural exchange (Ramgulam et al. 2012). The development and prosperity of this economic sector strongly depend on the environmental and socio-cultural resources (Gebhard et al. 2007). Tourism is now considering growing civilian industry which has almost 330 million jobs contribution to employment sector in year 2018 (World Travel & Tourism Council 2019). The 5% increasing trend per annum in tourism industry sector in recent decades is showing that many countries have considered

ENVIRONMENT AND ITS  
SUSTAINABILITY IN INDIA: A JOURNEY  
THROUGH RECENT TIMES

# ENVIRONMENT AND ITS SUSTAINABILITY IN INDIA: A JOURNEY THROUGH RECENT TIMES

Edited by  
**Senjuti Saha**

Published by  
**Birufatio**



**Birufatio**

Environmental sustainability  
is a complex issue that  
requires a holistic approach  
to address the interconnected  
challenges of climate change,  
pollution, and resource depletion.  
This book explores the current  
state of environmental  
sustainability in India and  
offers insights into the  
challenges and opportunities  
ahead.

Environment and Its Sustainability in India: A Journey  
through Recent Times edited by Sanjull Saha

**First Impression:**

April 2022

© Women's Christian College, Kolkata

**Cover photo:** by Anindya Basu -

"Floricultural tracts near Kasai Railway Bridge"

**Jacket design:** Adwaita Krishna Basu

**Layout:** Parantap Chakraborty

**Published by:** Parantap Chakraborty

Birujatio Sahitya Sammiloni

Kalinmohan Pally, Ward no.-6

Bolpur, PIN-731204

Ph no. +91 96357 27331

**Printed at:** Sarat Impressions Pvt. Ltd.  
18B, Shyamacharan Dey Street,  
Kolkata - 700073

**Price:** Rs. 600

**ISBN:** 978-93-91736-30-9

All rights reserved.  
No part of this  
publication may be  
reproduced, distribut-  
ed, or transmitted in  
any form or by any  
means, including pho-  
tocopying, recording,  
or other electronic or  
mechanical methods,  
without the prior  
written permission of  
the copyright holder.



ofo/tvns

**ENVIRONMENT AND ITS  
SUSTAINABILITY IN INDIA: A JOURNEY  
THROUGH RECENT TIMES**

**Edited by Senjuti Saha**

**Patron:**

**Prof. Ajanta Paul**

**Principal, Women's Christian College**

**Kolkata**



## Contents

Foreword	7
Preface	9
Acknowledgement	11

### Chapters

1. Floriculture - A Way of Life: A take on Panskura Block, East Medinipur District, West Bengal, India - Adrija Bhattacharjee and Dr. Anindya Basu	13
2. Changing Landuse Patterns and their Impact on Rural Development of Gosaba Block, South 24 Parganas - Aniya Kumar Sarkar and Prof. Dr. Pannalal Das	31
3. A Brief Assessment of Coastal Vulnerability of Gopalpur and Surrounding Coast of Odisha - Debangana Bhattacharya and Prashasti Bhattacharyya	45
4. Interrogating the Severity of Covid 19 Pandemic in Mega Cities across the Globe: Need to move towards Sustainable Cities - Dr. Jayita Mukhopadhyay	61
5. Shrimp Farming in Relation to Environmental- Ecological degradation, Socio-Economic vulnerability and Land-Use Change in Namkhana CD Block, South 24 Parganas, West Bengal - Moumita Ghosh & Lakshminarayan Satpati	73
6. A Perception Study Based on Honey Collectors of Maipith Baikunthapur GP, Kultali - Piu Mandal	83
7. Analytical Vistas on Influence of Modern Societies on Transformation of Selected Tribal Communities in Jalpaiguri and Alipurduar Districts of West Bengal - Purnima Mallick	96

8. The Environmental Perception and Attitude of the Coal Workers: A Case Study from Raniganj Coalfield - Dr. Rituparna Hajra and Sanjib Kumar Gupta	107
9. Decoding Awareness Level and Mind-set about Pollination Service of Honeybees: A Case Study of Malda District, West Bengal, India - Sanghamitra Purkait and Dr. Anindya Basu	122
10. Geographical Ethics: Indian Perspectives to meet the Challenges of Environmental Hazards - Dr. Sarada Mandal	135
11. Community Perception of Ecosystem Services Provided by Water Birds with Changing Landscape of East Kolkata Wetland - Sayani Saha and Dr. Rahi Soren	150
12. A Comparative Study of the Social Environment of Senior Citizens on Rural and Urban Backdrops - A Case Study - Shovona Das and Dr. Manisha Deb Sarkar	170
13. Impact of the Growth of Farmhouses on Vegetation Cover in Peri-urban Delhi - Somajita Paul and K. G. Saxena	189
<b>Figures and Images</b>	<b>207</b>

## The Environmental Perception and Attitude of the Coal Workers: A Case Study from Raniganj Coalfield

Dr. Rituparna Hajra & Sanjib Kumar Gupta

### Introduction

In the energy driven world, contribution of coal is indispensable and hence, its extraction is unavoidable and most profitable. Mining sector is also an important source to create employment opportunities and enhanced livelihoods. Coal is a pre-dominant source of energy in India and has contributed significantly to strengthen the economy of the country. Since 1970, Eastern Coalfield limited (ECL) was operating coal mining activities in the eastern part of India and has been the one of the most profit-making company of the country (Garada, 2015). Despite of its important role in industrialization of the country, mining activity is associated with environmental degradation. The impact of mining is long term and devastating as it has negative impacts on local air and water quality, depletion of natural resources, decrease in rainfall, loss of cultivable land etc (Mishra and Das, 2017; OECD 2002). The environmental problems are increasing over the years because of the increasing quantum of mining output, mine industries production. Therefore, these activities are threatening the socio-ecological safety in the mining area leading to unsustainable condition. This study mainly focuses on the Raniganj coal field area due to its reported vulnerability (Goswami, 2015; Bandopadhyay, 2014; Singh et al., 2010; Singh and Yadav, 1995). Coal mining operation is associated with

ইতিহাসের  
বিশ্বকোষ  
বিশ্বকোষের  
ইতিহাস

অতীতের ভারত ও আজকের গবেষণা

সম্পাদনা

কৌস্তভ মণি সেনগুপ্ত

কপিরাইট © প্রত্যয় নাথ, কৌস্তভ মণি সেনগুপ্ত ২০২১  
প্রথম সংস্করণ: ডিসেম্বর ২০২১  
প্রথম ই-বুক সংস্করণ: ২০২১

সর্বস্বত্ব সংরক্ষিত।

এই বইটি এই শর্তে বিক্রীত হল যে, প্রকাশকের পূর্বলিখিত অনুমতি ছাড়া বইটি বর্তমান সংস্করণের বাঁধাই ও আবরণী ব্যতীত অন্য কোনও রূপে বা আকারে ব্যবসা অথবা অন্য কোনও উপায়ে পুনর্বিক্রয়, ধার বা ভাড়া দেওয়া যাবে না এবং ঠিক যে-অবস্থায় ক্রেতা বইটি পেয়েছেন তা বাদ দিয়ে স্বত্বাধিকারীর কোনও প্রকার সংরক্ষিত অধিকার খর্ব করে, স্বত্বাধিকারী ও প্রকাশক উভয়েরই পূর্বলিখিত অনুমতি ছাড়া এই বইটি কোনও ইলেকট্রনিক যান্ত্রিক, ফটোকপি, রেকর্ডিং বা পুনরুদ্ধারের সুযোগ সংবলিত তথ্যসম্পন্ন করে রাখার পদ্ধতি বা অন্য কোনও যান্ত্রিক পদ্ধতিতে পুনরুৎপাদন, সম্পন্ন বা বিতরণ করা যাবে না। এই শর্ত লঙ্ঘিত হলে উপযুক্ত আইনি ব্যবস্থা গ্রহণ করা হবে। এই বইয়ের সামগ্রিক বর্ণসংস্থাপন, প্রচ্ছদ এবং প্রকাশকৃত অন্যান্য অলংকরণের স্বত্বাধিকারী শুধুমাত্র প্রকাশক।

ISBN 978-93-5425-010-1 (print)

ISBN 978-93-5425-026-2 (e-book)

প্রকাশক: আনন্দ পাবলিশার্স প্রাইভেট লিমিটেড

হেড অফিস: ৯৫ শরৎ বোস রোড, কলকাতা ৭০০ ০২৬

রেজিস্টার্ড অফিস: ৪৫ বেনিয়াটোলা লেন, কলকাতা ৭০০ ০০৯

CIN: U22121WB1957PTC023534

মুদ্রক: নবমুদ্রণ প্রাইভেট লিমিটেড, সিপি ৪, সেক্টর ৫, সল্ট লেক সিটি,  
কলকাতা ৭০০০৯১

# ইতিহাসের বিতর্ক, বিতর্কের ইতিহাস

অতীতের ভারত ও আজকের গবেষণা

সম্পাদনা

প্রত্যয় নাথ, কৌস্তুভ মণি সেনগুপ্ত

ভূমিকা

রণবীর চক্রবর্তী



আনন্দ

## সূচি

রণবীর চক্রবর্তী  
ভূমিকা [নয়]

কৌস্তুভ মণি সেনগুপ্ত ও প্রত্যয় নাথ  
প্রাক্-কথন [পঁয়ত্রিশ]

জয়িতা পাল  
আর্য সমস্যা: ইতিহাস ও বিতর্ক ১

কণাদ সিংহ  
প্রাচীন ভারতে ইতিহাস-চেতনা ও ঐতিহাসিক পরম্পরা ২১

দেব কুমার ঝাঞ্জ  
রাজা, রাষ্ট্র, রাজনীতি: প্রাচীন ভারতীয় প্রেক্ষিত ৫৪

সংযুক্তা দত্ত  
আদি-মধ্যযুগের রাষ্ট্রিক অর্থনীতি: সামন্ততন্ত্র ও অন্যান্য প্রসঙ্গ ৮৭

কাশশাফ গনী  
মধ্যযুগীয় ভারতে ইসলাম: ধর্ম, সমাজ, রাজনীতি ১২১

প্রত্যয় নাথ  
'লেভায়াথান না কাণ্ডজে বাঘ?': মুঘল রাষ্ট্রের চরিত্র ১৫৬

শান্তনু সেনগুপ্ত  
আদি-আধুনিক ভারত মহাসাগর: পটপরিবর্তনের ইতিহাস ১৮৯

# আদি-আধুনিক ভারত মহাসাগর পটপরিবর্তনের ইতিহাস

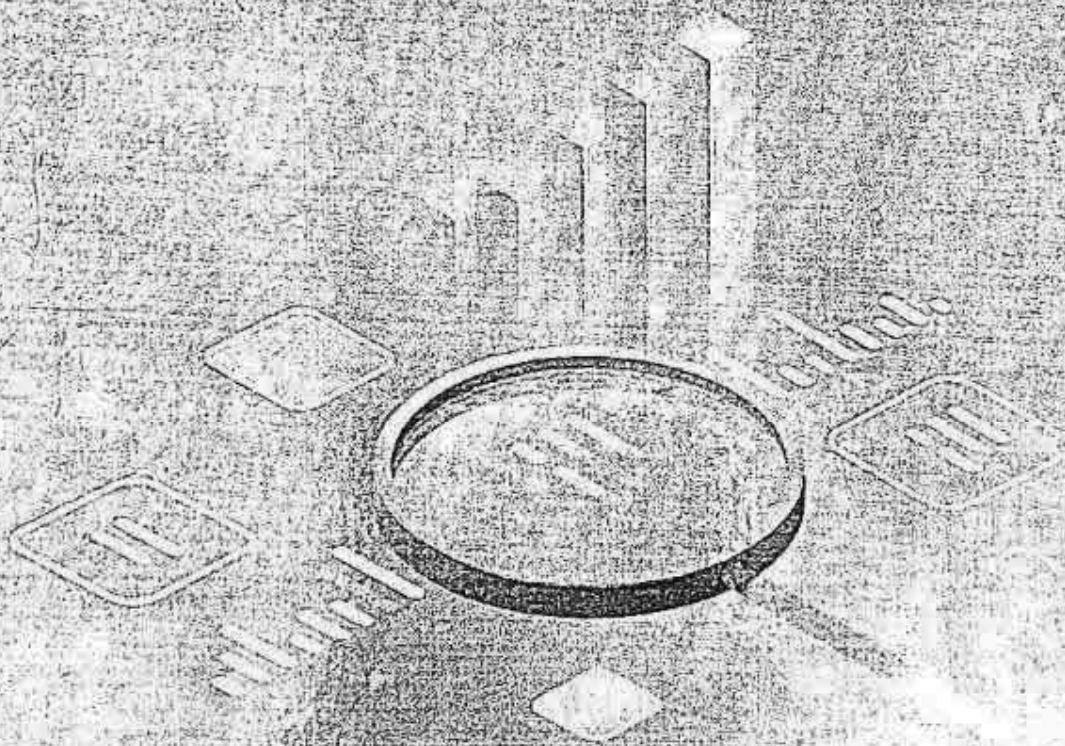
শান্তনু সেনগুপ্ত

ভূগোল বইয়ের পাতা বা মানচিত্রের দিকে তাকালে দেখা যাবে যে অস্ট্রেলিয়ার পশ্চিম উপকূল থেকে আফ্রিকার পূর্ব উপকূল পর্যন্ত বিস্তৃত জলরাশি ভারত মহাসাগর বলে চিহ্নিত। মহাসাগরের উত্তর সীমায় ভারতীয় উপমহাদেশ, দক্ষিণে অ্যান্টার্কটিকা, পশ্চিমে আফ্রিকা, পূর্বদিকে দক্ষিণ-পূর্ব এশিয়া ও অস্ট্রেলিয়ার ভূখণ্ড একে ঘিরে রেখেছে। ডাঙার সঙ্গে জলের পারস্পরিক সম্পর্ক এবং তারা একে অপরকে কীভাবে প্রভাবিত করে, তা না দেখলে সমুদ্রের সঙ্গে মানবসমাজের সংযোগের গুরুত্ব বোঝা যায় না। বাণিজ্য, নৌ-চলাচল, সমুদ্র-নিয়ন্ত্রণের রাজনীতি ও সাগর ব্যবহার করে জনগোষ্ঠীর চলাচল সামগ্রিক অঞ্চলের বিবর্তনের উপর প্রভাব বিস্তার করেছিল। এই প্রক্রিয়াকে বোঝার আগ্রহ থেকেই গড়ে ওঠে সমুদ্রের ইতিহাসচর্চা।

কাল বা সময়ের দৃষ্টিভঙ্গি থেকে দেখলেও ভারত মহাসাগরের বহুমাত্রিক চরিত্র বোঝা যায়। এই অঞ্চলে প্রাচীন যুগ থেকে চলে আসা দূরপথের বাণিজ্য ও অর্থনৈতিক আদানপ্রদানের ইতিহাসের কথা মাথায় রেখে অনেক ইতিহাসবিদ একে বিশ্বায়নের আঁতুড়ঘর বলেন।<sup>১</sup> একেক সময়ের একেক বাণিজ্যিক গোষ্ঠীর নজর দিয়ে দেখলে ভারত মহাসাগরের চেহারা যেন পালটে পালটে যায়। মধ্যযুগে ইসলামের উত্থান ও প্রসারের পর প্রধানত আরব বণিকদের ভারত মহাসাগর জুড়ে কার্যকলাপ ও বিশেষ করে সমুদ্রের পশ্চিম অংশে হাঙ্গের মৌরসিপাট্রা আরবি পরিভাষায় একে 'আল-বকর আল-হিন্দি' বা



# AN OUTLINE OF EDUCATIONAL RESEARCH



EDITED BY  
DR. SHYAMSUNDEAR GANZAL

VIJAY PUBLISHERS

# AN OUTLINE OF EDUCATIONAL RESEARCH

Editors: DR. SHYAMSUNDAR BAIRAGYA and JAYANTA METE

## RED'SHINE PUBLICATION

232, Bilton road, Perivale, Greenford

Passcode: UB6 7HL London, UK.

Call : +44 7842 336509

In Association with,

RED'MAC INTERNATIONAL PRESS & MEDIA. INC

India | Sweden | UK

Text © Editors, 2021

Cover page ©RED'SHINE Studios, Inc, 2021

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or used in any form or by any means- photographic, electronic or mechanical, including photocopying, recording, taping, or information storage and retrieval systems- without the prior written permission of the author.

ISBN: 978-1-257-00505-5

ISBN-A: 10.257/005057

DIP: 18.10.1257005057

DOI: 10.25215/1257005057

Price: £ 15

First Edition: June, 2021

The views expressed by the authors in their articles, reviews etc. in this book are their own. The Editors, Publisher and owner are not responsible for them.

Website: [www.redshine.uk](http://www.redshine.uk) | Email: [info@redshine.uk](mailto:info@redshine.uk)

Printed in UK | Title ID: 90937394

**AN OUTLINE OF  
EDUCATIONAL  
RESEARCH**

EDITORS

**Dr. Shyamsundar Bairagya  
Jayanta Mete**

FOREWORD

**Prof. Mita Banerjee**

*red'shine*  
publication

CHAPTER NO.	NAME OF THE TITLE	
24.	<b>A Holistic View of Grounded Theory</b> <i>Swacchatoya Ghosal</i>	401
25.	<b>Ethnography in Educational Research</b> <i>Anumita Das</i>	432
26.	<b>Phenomenological Research Method</b> <i>Dr. Rsehma Khatun</i>	448
27.	<b>Mixed Method Research</b> <i>Camellia Yasmin</i>	462
28.	<b>Meta-Analysis in Educational Research Studies</b> <i>Dr. Sohini Ghosh</i>	483
29.	<b>Computer Technology in Research</b> <i>Dr. Nandini Banerjee, Dr. Amarnath Das &amp; Puja Pal</i>	499
30.	<b>Research Report</b> <i>Girish Chandra Dehury</i>	513
31.	<b>Referencing</b> <i>Sudhindra Roy</i>	544
32.	<b>Crafting a research report</b> <i>Dr. Chitralkha Maiti &amp; Dr. Atreya Paul</i>	560
33.	<b>Research Ethics</b> <i>Dr. Umakant Prasad</i>	578

PAGE  
?

## TEACHER EDUCATION: CONTEMPORARY ISSUES, PRACTICES & PROSPECTS

by: *Dr. Nandini Banerjee, Dr. Amarnath Das*

### RED'SHINE PUBLICATION

232, Bilton road, Perivale, Greenford

Passcode: UB6 7HL London, UK.

Call : +44 7842 336509

In Association with,

RED'MAC INTERNATIONAL PRESS & MEDIA. INC

India | Sweden | UK

Text © *Editors*, 2021

Cover page ©RED'SHINE Studios, Inc, 2021

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or used in any form or by any means- photographic, electronic or mechanical, including photocopying, recording, taping, or information storage and retrieval systems- without the prior written permission of the author.

ISBN: 978-1-304-49009-4

ISBN-10: 1-304-49009-2

ISBN-A: 10.1/304490092

DIP: 18.10.1304490092

DOI: 10.25215/1304490092

First Edition: August, 2021

The views expressed by the authors in their articles, reviews etc. in this book are their own. The Editors, Publisher and owner are not responsible for them.

Website: [www.redshine.uk](http://www.redshine.uk) | Email: [info@redshine.uk](mailto:info@redshine.uk)

| Title ID: 1304490092

<b>CHAPTER NO.</b>	<b>NAME OF THE CHAPTER</b>	
12.	<b>Teacher Education and Development of Teaching Skills</b> <i>Ranajit Dhara, Arup Barik</i>	
13.	<b>Teacher Education &amp; Professionalism</b> <i>Sudeshna Majumdar</i>	368
14.	<b>Teacher Education: Evaluation &amp; Development</b> <i>Babusona Bej</i>	376
15.	<b>Agencies of Teacher Education</b> <i>Dr. Sohini Ghosh, Dr. Shyamsundar Bairagya</i>	395

## Chapter- 28

# Meta-Analysis in Educational Research Studies

---

Dr. Sohini Ghosh

The overall goal of this article is to acquaint the reader with the procedures and assumptions involved with the approaches of Meta-Analysis proposed by Hunter Schmidt Jackson (1982). Meta-Analysis provides a strong alternative to the more traditional review methods. Meta-Analysis as proposed by Glass (1976) is a set of statistical methods designed to accumulate experiential and causal-comparative quantitative results across the independent studies that address a related set of wider research questions. Here, the method of conducting Meta-Analysis has been described to make it applicable in Educational Studies. It also presents the formulas and procedures needed for converting study statistics to a common metric, calculating the sample weighted mean 'r' and 'd', and correcting the range restrictions and sampling or measurement errors. Meta-Analysis uses the summary statistics from the individual study as data point. The key-assumption of this analysis method is that each study providing different estimates of the underlying relationships within the population. It can help to gain more accurate representation of the population relationship than is provided by the individual researcher.

The contemporary society is demanding to invent, develop and identify countless innovative ideas and knowledge to solve the emerging problems in everyday life within a shortest possible time. Meta-Analysis is a set of statistical methods designed to accumulate experiential and causal-comparative results across the independent studies that addresses a related set of research questions against the



# TEACHER EDUCATION

CONTEMPORARY ISSUES,  
PRACTICES & PROSPECTS

FOREWORD BY PROF. (DR.) PABITRA SARKAR

EDITORS

DR. NANDINI BANERJEE

DR. AMARNATH DAS



## Agencies of Teacher Education

Dr. Sohini Ghosh, Dr. Shyamsundar Bairagya

### Abstract:

The agencies of teacher education have been functioning at all the international, national, state and district levels to regulate and facilitate the quality of teacher education. In the country, these agencies have their respective vision, mission, objectives and functions to organize and promote teacher education in the country. Also these facilitate collaborations among teachers of different levels of education and with the high level internationally recognized researchers and research organizations. The main aim of the present article is to make an account of different primary and secondary agencies of teacher education at the international, national, state and district levels. Almost 13 agencies of Teacher Education from International, National and State levels with their respective Vision, Mission, Objectives and Functions have been discussed here.

*Keywords: Agencies of Teacher Education, UNESCO, National level teacher education institutes, State level teacher education institutes.*

# Futures of Education: Learning to Become

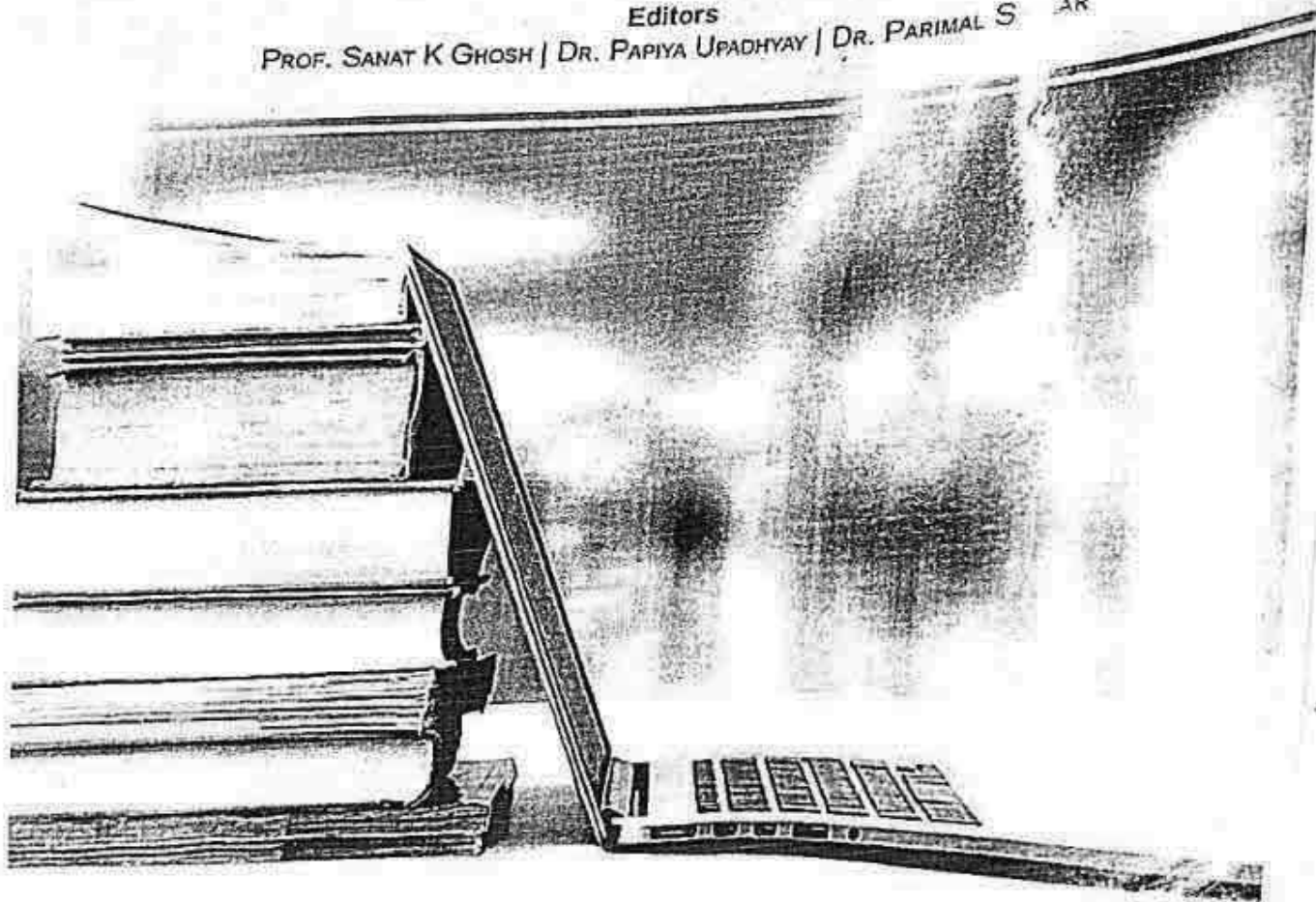
*An Initiative to re-imagine how knowledge and learning can shape the future of humanity*

**Editor-In-Chief**

PROF. SUBHA SANKAR SARKAR  
Vice Chancellor  
Netaji Subhas Open University

**Editors**

PROF. SANAT K GHOSH | DR. PAPIYA UPADHYAY | DR. PARIMAL SARKAR



NETAJI SUBHAS OPEN UNIVERSITY

ion

First Edition  
February, 2021

z

**Published by**  
Registrar  
NETAJI SUBHAS OPEN UNIVERSITY  
DD-26, Sector-1, Salt Lake  
Kolkata-700064  
West Bengal, India  
Website: [www.wbnsou.ac.in](http://www.wbnsou.ac.in)

**ISBN: 978-93-82112-74-7**

**Printed by**  
Prabaha  
45, Raja Rammohan Roy Sarani  
Kolkata - 700 009

**Cover Design**  
Dr. Papiya Upadhyay  
Dr. Parimal Sarkar

**Disclaimer**  
The views expressed by the authors are personal and do not necessarily represent the views of the University

This publication entitled "Futures of Education-Learning to Become" is available under a Creative Commons Attribution-Non Commercial-ShareAlike 4.0 (International) license: <https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

Price : Rs. 350.00

<b>Learning to become the Development of Human Resources and society for Better Tomorrow</b> Rimita Bhar	240
<b>Four Pillars of Education And Digitalization: 21st Century Context</b> Ruchira Ray and Banshi Badan Bhowmik	251
<b>Challenges of 'Education For All' - A Review In The Indian Context</b> Rumti Das and Indrani Ghosh	258
<b>Artificial Intelligence (AI): Recent approaches to modernize school education system in India.</b> Rupa Das	266
<b>Education For All In India: The Major Challenges And Possible Solutions</b> Sabir Ahmed, Md Mahasin Ali and Sonia Chattopadhyay	274
<b>Inclusive Education: A step towards realizing the dream of "Education for All"</b> Sangeeta Singh Hada	280
<b>ICT based Education: A vision for Level-Play field</b> Santanu Patra and Papiya Upadhyay	286
<b>Learning To Become Initiative Is The Need of Our Future India: Re-imagining The Future of Humanity</b> Santu Biswas, Monalisa Sarkar and Parimal Sarkar	299
<b>Mobile Learning: Rethinking Media Education In The Pandemic Situation And Thereafter</b> Sukla Roy and Indrani Ghosh	305
<b>'Learning to Be' to 'Learning to Become': A Journey towards Quality Education for All</b> Sohini Ghosh	314

## **'Learning to Be' to 'Learning to Become': A Journey towards Quality Education for All**

**Dr. Sohini Ghosh**

Assistant Professor, Polba Mahavidyalaya, Hooghly,  
WB, Pin- 712148; E-mail: hazra.sohini@gmail.com

### **Abstract**

*Reviewing four very significant international documents, the present study aims to trace the UNESCO journey towards the establishment of worldwide 'Quality Education for all' during the period of last half-a-century. Firstly, in 1972, the report of the International Commission on the Development of Education was published under the chairmanship of Edgar Faure. The report is known as "Learning to be: the World of Education Today and Tomorrow". It aimed to assist States in formulating respective national strategy for the development of quality education in the changing universe. Emphasis was on the needs of the international community which were reflected in terms of common problems, trends, and goals of promoting democracy through education, providing opportunity to every individual learner for self-actualization, and the need for life-long education. Secondly, In 1996, the report of International Education Commission, entitled, "Learning: The Treasure Within" was published as the outcome of a three-year study by an International Commission, chaired by Jacques Delors. This report considered the requirement for education of the twenty-first century capable of tapping and nurturing the rich potential for learning inherent in every individual. Education is viewed, firstly, in its social setting - in the light of the challenges of global interdependence, enhanced democratic participation and sustainable development. The report defined the 'four pillars of learning' - Learning to be, Learning to know, Learning to do and Learning to live together. At the same time, it reviewed the possibilities of formal and non-formal education in the context of a learning society. A series of pointers and recommendations are in the document that has become required studying for anyone with a professional or informal interest in educational studies. Thirdly, the "Education for All Global Monitoring Report" (GMR) has become the prime instrument to assess global progress towards achieving the EFA goals. In the year 2007 the report was developed by an independent team and published by UNESCO, aimed to inform, influence, and sustain genuine commitment to 'education for all'. Fourthly, the "Futures of*

UGC-HRDC, University of Calcutta  
Interdisciplinary Refresher Course in  
Environment Studies 2021



**ENVIRONMENTAL CRISIS IN 21<sup>ST</sup> CENTURY:  
TOWARDS CONSCIENCE AND SUSTAINABILITY**

Editor

*Dr. Pritha Bhattacharjee*

Conducted by  
DEPARTMENT OF ENVIRONMENT SCIENCE  
UNIVERSITY OF CALCUTTA

**ENVIRONMENTAL CRISIS IN 21<sup>ST</sup> CENTURY:  
TOWARDS CONSCIENCE AND SUSTAINABILITY**

**PROCEEDINGS OF  
INTERDISCIPLINARY REFRESHER COURSE IN ENVIRONMENTAL SCIENCE  
UGC-HRDC, University of Calcutta**

**ISBN : 978-81-956065-8-0**

**2021**

**Department of Environmental Science  
35, Ballygunge Circular Road  
Kolkata 700019**

***Published by :* Dr. Pritha Bhattacharjee  
Asst. Professor and Head,  
Department of Environmental Science  
Co-ordinator, Refresher course  
Editor email: [pbenvs@caluniv.ac.in](mailto:pbenvs@caluniv.ac.in)**

***Assisted by:*  
Dr. Manabi Paul,  
Indraneel Rakshit & Shrinjana Dhar**

***Design and Printed by :*  
Creative Data Centre  
58/32, Prince Anwar Shaw Road  
Kolkata 700 045  
Email: [creative.174\\_dc@yahoo.co.in](mailto:creative.174_dc@yahoo.co.in)**

# INDEX

<b>Sl. No.</b>	<b>Topics</b>
1.	Foreward from Director, UGC-HRDC
2.	From the Co-ordinator's desk
3.	A Kaleidoscope of Memories- The Department of Environmental Science
4.	Schedule of the program
5.	Abstracts by subject Experts
6.	Microteaching
7.	Minireviews



## সংস্কৃত সাহিত্যে পরিবেশসচেতনতা (Environmental Awareness in Sanskrit Literature)

Preetam Mandal

Department of Sanskrit, Polba Mahavidyalaya, Hooghly, 712148, India

### সারসংক্ষেপ-

কবি প্রকৃতির সজ্ঞান। তাঁর মন সেই আবেগমান কাল থেকে প্রকৃতির দ্বারাই লাগি হয়েছে নিবিড়ভাবে। প্রকৃতির অসুস্থতা যখনই জুড় থাকে কবির মনে। এই প্রকৃতি ছয়ং বেথাও মানবজীবনের গতিভূমিরূপে গুরুত্ব অর্জন করেছে, কখনও বা প্রকৃতি হয় উঠেই সজীব সজায় মানবজীবনের শ্যাধ্যাকরণ। তাই সরাসরি থেকে বা চরিত্র সৃজন বা কাহিনীসৃজনের সৌকুম্যার্থে থেকে, তাঁর দৃষ্টিতে ধরা পড়েছে প্রকৃতির অনন্য পাঠ। বর্তমানে যে পরিবেশজাবনা ও পরিবেশকলিক দৃষ্টিভঙ্গির সঙ্গে আমরা সরাসরি মুখোমুখি হই, সংস্কৃত সাহিত্যে সেই প্রত্যক্ষ ও সচেতন পরিবেশজাবনা অনুপস্থিত। তবে বৈদিক সংস্কৃত সাহিত্যে, লৌকিক সংস্কৃত সাহিত্যে ও সংস্কৃত ভাষায় রচিত বিবিধ শাস্ত্র গৃহ পর্যালোচনা করলে সাহিত্যের বিবিধ স্থানে পরিবেশরক্ষা বিষয়ে সংস্কৃত ভাষায় রচিত বিবিধ শাস্ত্রগৃহ পর্যালোচনা করলে সাহিত্যের বিবিধ স্থানে পরিবেশরক্ষা বিষয়ে সংস্কৃত সাহিত্যিকদের জাবনা প্রকাশিত হতে দেখা যায়। বিবিধ প্রকারের মনুষ্যচরিত্র পরিষ্কারের মনে উচিত দৃষ্টিতে পরিবেশের মোকাবিলায় জন্য পরিবেশে বিজ্ঞানীরা প্রধান নানা পদ্ধতি অবলম্বন করেছেন। কিন্তু সংস্কৃত সাহিত্যের লেখকগণ জ্ঞানালোকের দ্বাা জ্ঞানোজ্বলিত। পরিবেশে কি কারণে ঘূর্ণি হতে পারে, কিভাবে মানুষ তার পরিজন সামগ্ৰিক প্রাকৃতিক জগতের সাথে সুস্থ ও স্বভাবসুন্দরভাবে বসবাস করতে পারে, কি থাকলে বা না থাকলে মনুষ্যজগৎ ও প্রকৃতির ঙ্গতি হতে পারে এবং কিভাবেই বা জীবী বিপদের প্রতিরোধ করা যেতে পারে।

### সূচনা -

উদ্ভিদ, প্রাণী ও মানুষের সুস্থ ও স্বভাবসুন্দরভাবে বেঁচে থাকার জন্য যে পারিপার্শ্বিক অবস্থার দরকার হয়, তাই পরিবেশ বলে। প্রকৃতির সমস্ত দান অর্থাৎ জল, বাতাস, মাটি, উদ্ভিদ, প্রাণী ও মানুষ- এই সমস্ত বিষয় মিলেমিশে একসঙ্গে তৈরী হয়েছে পরিবেশ। কিন্তু মানুষ ও মনুষ্যচরিত্র যাদের স্বৈচ্ছাচারিতার মূলে প্রকৃতি আজ বিপর্যস্ত। প্রকৃতি ধ্বংসের সাথে সাথে প্রাণিজগৎ হারিয়ে গেলোছে তাঁর স্বাভাবিক বিকাশের ক্ষমতা। বিভিন্ন পরিবেশসাম্য জগৎকে উদ্ভিন্ন করে তুলেছে এবং বিশ্বের সমস্ত পরিবেশবিদগণ প্রকৃতির অমূল্য দানকে সংরক্ষণ করার জন্য সামগ্ৰিক প্রয়াস করে চলেছেন। আর তাই পরিবেশবিজ্ঞান নামে একটি নতুন বিজ্ঞানমাধ্যমও সৃষ্টি হয়েছে। কিন্তু প্রাচীন ভারতীয় সংস্কৃত সাহিত্যে অনুসন্ধান করলে দেখা যাবে, পরিবেশসচেতনতা যেটী ভারতীয় মনুষ্যসমাজে ব্যাপকভাবে বিদ্যমান ছিল এবং উন্নয়নের বিদ্বজ্জন এ বিষয়ে গভীর চিন্তা জাবনাও করতেন।

### বৈদিক সাহিত্যে পরিবেশজাবনা-

গাছপালা, প্রাণিজগৎ, মানবসমাজ এবং জুপ্রকৃতির উপাদান-উপবরণ পাহাড়, নদী, সাগর, মাটি, জল, আশুনা, আকাশ-বাতাসের সম্বন্ধপরস্পরায় নিয়ে প্রাণীলীক বিদ্যাচর্চা না হলেও মতর্ক আন্দোলনা, মনোযোগ, আবেগ-অনুভব প্রকাশের ইতিহাস ভারতে বেশ প্রাচীন। অথর্বসংহিতার পৃথিবীসূক্ত (১২/১) ৩৩টি মন্ত্রকবিতা জুড় রয়েছে ঢাকা পর্বত, ধূলি-পাথর-সমাকীর্ণ বিজুত মাঠঘাট, বনজঙ্গল, নদী, সাগর, মেঘ, ছয় ষড়ুর সমাগম, ধান যম ইত্যাদি ফসলে, স্বীকৃতিপত্র, সাগ চতুস্পদ ও ছিপাহ প্রাণী সব কিছুকে নিয়ে পৃথিবীর পরিচয় দিয়েছিলেন এক শ্রমি কবি। তাঁর চোখে এই পৃথিবী আমাদের মা, আমরা তার সজ্ঞান- 'মাটা ভূমিঃ পুরো অহং পৃথিব্যাঃ।' আমাদের কল্যাণ পৃথিবীতেই নিহিত- 'ভূমে মাতর্নিধৌ মা জন্মা সুপুর্জিতম।' সুধার মতো জলধারা তারই দান- 'সুধা ন আপস্তম্বে ঙ্গরত্ব।' আমাদের জীবন ও ঘর্ষ আম্মু তার কাছ থেকে পাওয়া চাই- 'মা নো ভূমিঃ প্রাণস্যর্ধুদধাতু।' এই মার্জিত বাক্য জান পা যেনে তুচ্ছ স্বীকৃতি পত্রের ঙ্গতিমাধন করবার আবেগেরও তাই আমাদের নেই- 'পশ্চাত্য দক্ষিণসম্ব্যক্ত্যাং মা স্বাধির্মহি ভূম্যাম।' মাটির পৃথিবীর সঙ্গে জীবজগতের এই অস্তরঙ্গতা বৈদিক সাহিত্যে বারবার প্রকাশিত হয়েছে।

### লৌকিক সাহিত্যে পরিবেশজাবনা-

লৌকিক সংস্কৃত সাহিত্যেও পরিবেশজাবনার পরিচয় পাওয়া যায়। যেমন- রঘুবংশে রামচন্দ্র চোদ বছর পর আযোধ্যায় ফেরার সময় অনুভব করেন-সরযু নদী মায়ের মতো অপার মোহে মীতল বাতাস ছড়িয়ে তরঙ্গের বাড়িয়ে সজ্ঞানকে যেন কাছে পেতে চাইছে।

**DECODING COVID-19  
AND  
THE ISSUES ASSOCIATED**

*Editor-in-Chief*

**Gour Chandra Ghosh**

All Rights Reserved

First Published : May, 2022

Published by  
Granthamitra  
K. Mitra  
72/2B, Patuatola Lane  
Kolkata-700 009

D. T. P. Compose  
A. K. Enterprise  
72/2B, Patuatola Lane  
Kolkata-700 009

Printed by  
Narayan Printing  
3, Muktaram babu lane  
Kolkata-700 007

Jacket Design : Ritodip Ray

Price : ₹ 350.00

*Rupees Three hundred fifty only*

\$ : 14.00

£ : 11.30

ISBN : 978-93-84104-90-0

# DECODING COVID-19 AND THE ISSUES ASSOCIATED

Editor-in-Chief

**Dr. Gour Chandra Ghosh**

Board of Editors

**Dr. Kalipada Sarkar**

**Dr. Anuradha Sinha**

**Dr. Tapas Adhikari**

**Dr. Avijit Sutradhar**

**Dr. Abhijit Datta**

**Prof. Kanchan Roy**

**Asst. Prof. Abhrangsu Kr. Sarkar**

Distributor

**Mitram**

37A, College Street

Kolkata-700 073



**Granthamitra**

72/2b, Patuatola Lane, Kolkata-700 009

e-mail : [pmitram@gmail.com](mailto:pmitram@gmail.com)

[progressivepubl@yahoo.co.in](mailto:progressivepubl@yahoo.co.in)

Mobile : 9830305810, Whatsapp : 9038296630

**Part III**  
**COVID-19 and Pandemic Realities in  
Social Life**

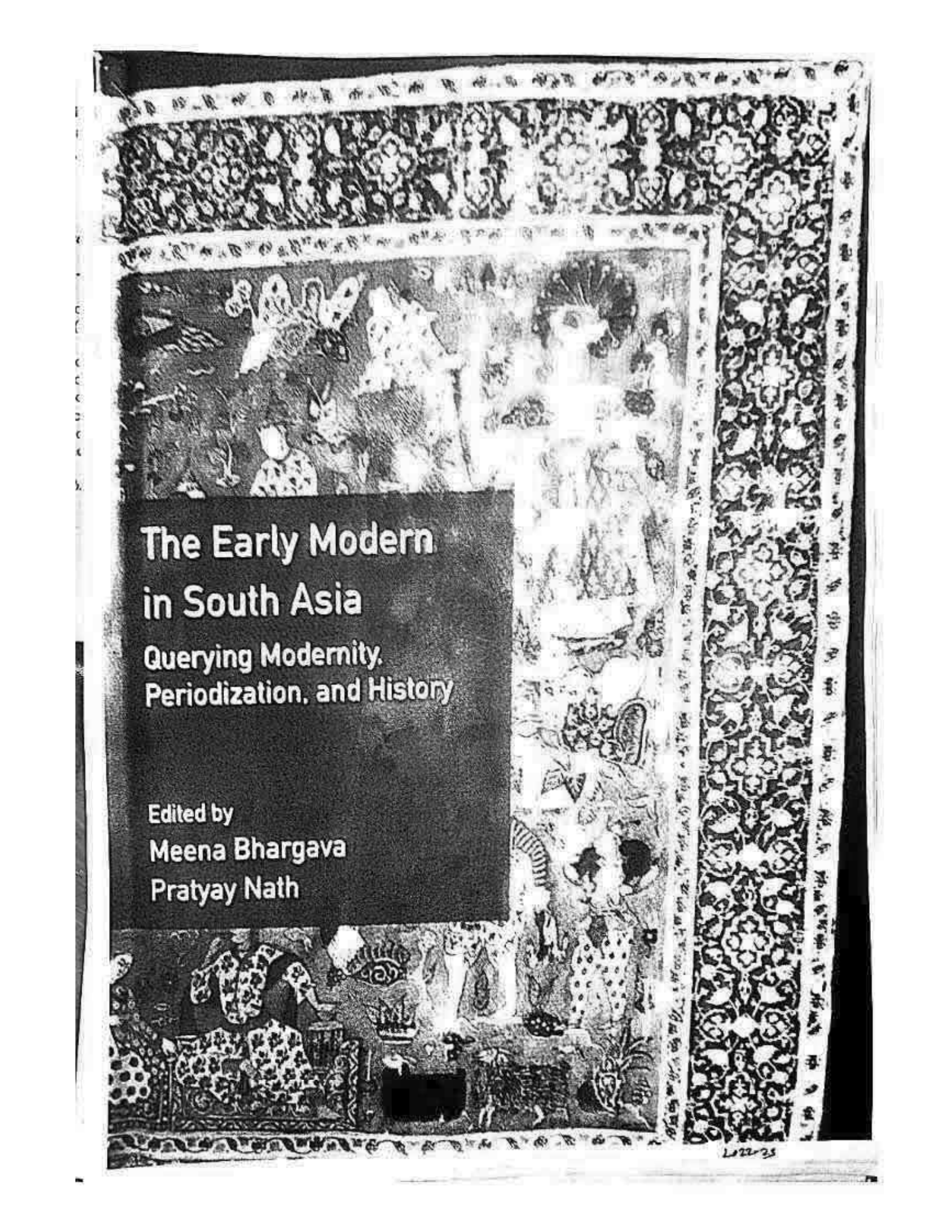
- Ranjita Chakraborty 105-126  
Pandemic and the Social Fabric : Reflections on India
- Arpita Paul 127-134  
Effect of COVID-19 on Middle Class
- Kalyani Pakhrin 135-141  
The Crisis of COVID-19 Amplifying Gender Inequality
- Munna Thakur 142-152  
The Condition of Person with Disability in Covid-19  
Pandemic Situation in India
- Ranjan Mitra 153-162  
Impact of COVID-19 Pandemic on Indian Society
- Swagata Bhattacharya 163-172  
Pandemic, Patriarchy and Indian Women : An Overview

**Part IV**  
**Ethical Questions around  
COVID-19**

- Subhashree Indra 175-180  
COVID-19 : Some Moral Issues
- Subrata Mandal 181-194  
Crisis of Humanity During COVID-19 in India
- Sankha Suvra Sanyal 195-201  
Stress and Mental Health in the wake of COVID-19

**Part V**  
**Impact of COVID-19 on  
Economic Development, Migrant  
Workers and the Tea Growers**

- Gour Das 205-212  
The Impact of COVID-19 on our Society and Economy



**The Early Modern  
in South Asia**

**Querying Modernity,  
Periodization, and History**

**Edited by  
Meena Bhargava  
Pratyay Nath**

# **The Early Modern in South Asia**

Querying Modernity, Periodization, and History

*Edited by*  
**Meena Bhargava**  
**Pratyay Nath**

 **CAMBRIDGE**  
UNIVERSITY PRESS

**CAMBRIDGE**  
**UNIVERSITY PRESS**

University Printing House, Cambridge CB2 8BS, United Kingdom

One Liberty Plaza, 20th Floor, New York, NY 10006, USA

477 Williamstown Road, Port Melbourne, vic 3207, Australia

314 to 321, 3<sup>rd</sup> Floor, Plot No.3, Splendor Forum, Jasola District Centre,  
New Delhi 110025, India

103 Penang Road, #05-06/07, Visioncrest Commercial, Singapore 238467

Cambridge University Press is part of the University of Cambridge.

It furthers the University's mission by disseminating knowledge in the pursuit of  
education, learning and research at the highest international levels of excellence.

[www.cambridge.org](http://www.cambridge.org)

Information on this title: [www.cambridge.org/9781009215374](http://www.cambridge.org/9781009215374)

© Cambridge University Press 2022

This publication is in copyright. Subject to statutory exception  
and to the provisions of relevant collective licensing agreements,  
no reproduction of any part may take place without the written  
permission of Cambridge University Press.

First published 2022

Printed in India by Avantika Printers Pvt. Ltd.

*A catalogue record for this publication is available from the British Library*

ISBN 978-1-009-21537-4 Hardback

Cambridge University Press has no responsibility for the persistence or accuracy  
of URLs for external or third-party internet websites referred to in this publication,  
and does not guarantee that any content on such websites is, or will remain,  
accurate or appropriate.



# Contents

<i>Acknowledgements</i>	ix
1. Introduction: History and the Politics of Periodization <i>Meena Bhargava and Pratyay Nath</i>	1
<b>I. Religion, Ideology, Identity</b>	
2. Locating the Early Modern in South Asian Sufism <i>Kashshaf Ghani</i>	43
3. Beginnings of Modernity in South Asia: Natural Philosophy in Persianate Islam <i>Charles Ramsey</i>	64
4. Contestations and Negotiations: Early Modern Individualism in Jain Heterodoxy, c. 1470–c. 1770 <i>Shalin Jain</i>	83
<b>II. Economy, Environment, Society</b>	
5. Early Modernity and South Asian Economic History: Problematic, Periodization, Processes, and Possibilities <i>Rajat Datta</i>	103
6. Markers of the Early Modern: Ecology, State, and Society in Rajasthan <i>Mayank Kumar</i>	124
7. Through the Prism of Environmental History: Defining the Early Modern in South Asia <i>Meena Bhargava</i>	141

6. The Early Modern Conundrum: Peninsular India and the Idea of Periodization in a 'Regional' Perspective  
*Ranjeeta Dutta* 161

### III. Politics, Law, War

9. *Fidalgos, Soldados, Arrengados*: Portuguese Adventurers in Hugli and Early Modern Politics  
*Radhika Chadha* 183
10. Law, Empire, and the New Julfan Armenians: The Early Modern in the Indian Ocean World  
*Santanu Sengupta* 203
11. Was Mughal Warfare Early Modern?  
*Pratyay Nath* 224

247

*About the Contributors*

250

*Index*

## Law, Empire, and the New Julfan Armenians

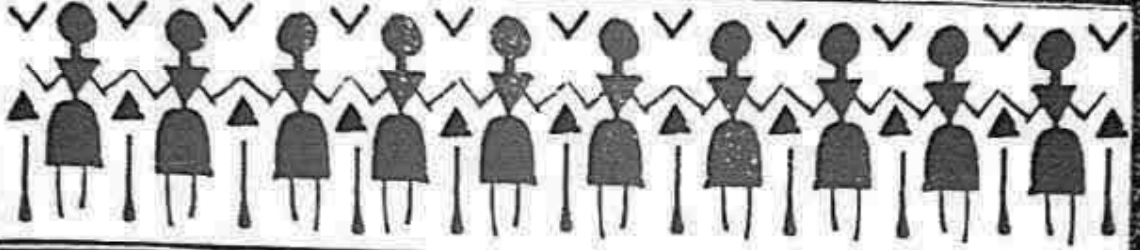
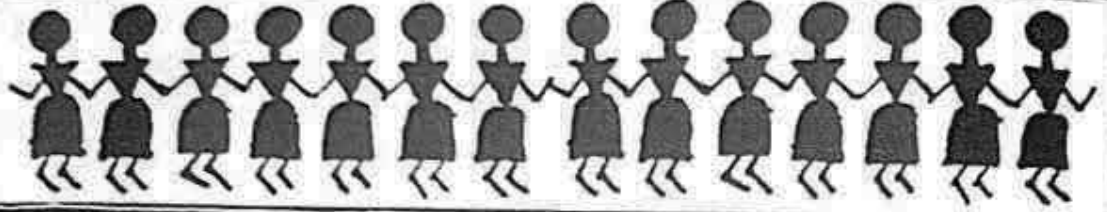
### The Early Modern in the Indian Ocean World

*Santanu Sengupta*

The category of the early modern for the period between the fifteenth and nineteenth centuries has worked as a crucial tool to reclaim pre-colonial South Asian history from the elusive gap between the medieval – a product of Eurocentrism – and the modern, which is conventionally associated with the advent of European colonialism. This chapter intends to navigate this divide and revisit the utility of the category for this phase of South Asian history by analysing what distinguished this period from the nineteenth century in terms of historical tendencies. It intends to do so by looking at the period through the lens of the New Julfan Armenian diaspora and their agency in the shaping of the legal culture of the eighteenth century.

In his pioneering work, John Richards lists six major processes that characterized early modernity. The rise of the global oceanic routes and circulation across long distances was one of these processes. This was facilitated by the formation of networks like that of the New Julfan Armenians.<sup>1</sup> Reviewing the era through the eyes of stateless, transoceanic, and cross-cultural actors like the Armenians is useful in understanding the idea of the global connectivity and cross-cultural exchange that developed during this period.<sup>2</sup>

The chapter is divided into three main sections. The first looks at the customary legal culture of the New Julfans and how that became the basis of both their diasporic culture and activities. The second section looks at the impact of the early colonial legal regime on the maritime trade that became a crucial area of Anglo-Armenian interaction. Building upon this idea of interaction, the third section looks more specifically at their experience and dialogue with the Mayor's Court of Madras. I argue that the early colonial regime that had evolved by the end of the eighteenth century was a product of the deliberations between the colonial state and the various indigenous elements that emerged in the period from the fifteenth to the eighteenth centuries. In course of the nineteenth century, however, the flexibility of this early colonial regime was transformed into a state of much more stringent colonial authority.



# স্মৃতি ও সত্ত্বায় আঞ্চলিক ইতিহাস চর্চা

সম্পাদনা  
জ্যোতিকা ওয়াঘেলা



স্মৃতি ও সত্ৰায় আঞ্চলিক  
ইতিহাসচৰ্চা

সম্পাদনা  
জ্যোতিকা ওয়াঘেলা

আশাদীপ  
১০/২ নি বমানাথ মজুমদার ষ্ট্ৰিট  
কলকাতা-৭০০ ০০৯

**SMRITI O SATTWAI ANCHALIK ITIHASCHARCHA**  
Edited By Jyotika Waghela

First Publication : September 2022  
প্রথম প্রকাশ : সেপ্টেম্বর ২০২২

© ইতিহাস বিভাগ, রানীগঞ্জ গার্লস কলেজ

অক্ষর বিন্যাস

আর. এন. গ্রাফিক্স, কলকাতা

প্রচ্ছদ : রোচিফু সান্যাল

ISBN : 978-93-92533-72-3

আশাদীপ এর পক্ষে অনিৰুদ্ধ মণ্ডল কর্তৃক ১০/২বি রমানাথ মজুমদার স্ট্রিট,  
কলকাতা-৭০০ ০০৯ থেকে প্রকাশিত এবং ডি. ডি. এণ্ড কোম্পানী,  
৬৫ নীতরাম পোয়া স্ট্রিট, কলকাতা-৭০০ ০০৯ মুদ্রিত।  
৩০০ টাকা

## সূচি

সম্পাদকীয়র পরিবর্তে ১১

শুচিব্রত সেন

সাংস্কৃতিক গতিশীলতায় রাঢ়ীয় সাঁওতাল সমাজের প্রতিক্রিয়া :

একটি সাধারণ পর্যালোচনা ২১

শেখর ভৌমিক

আমাদের অঞ্চলবোধ : কিছু চেনা গল্প ২৭

রামদুলাল বসু

রানীগঞ্জের ইতিহাস : একটি রেখাচিত্র ৩৪

নয়না ব্যানার্জী

বিনোদন, মেলা ও লোকসংস্কৃতি : রানীগঞ্জ কয়লাঞ্চলের শ্রমিক ৪৬

অমৃতা মিত্র

রানীগঞ্জ শিল্পাঞ্চলের নাট্যচর্চা : উৎস অনুসন্ধান ও প্রবহমানতা ৫৯

প্রদীপ কুমার দাস

স্বাধীনতা উত্তরকালে সাঁওতাল আদিবাসীদের আর্থ-সামাজিক জীবনের নানা

আঙ্গিকে দুর্গাপুর শিল্পাঞ্চলের প্রভাব : একটি আলোচনা ৭৪

সঞ্জীব চক্রবর্তী

নগর বর্ধমানের ইতিহাসের কিছু হারানো সূত্র ৯৯

অলক ভৌমিক

দক্ষিণ-পশ্চিম বঙ্গে নগরায়ণ ১১০

আবীর লাল বন্দ্যোপাধ্যায়

ঔপনিবেশিক বাঁকুড়ায় আঞ্চলিক রাজনীতি ও দেশীয় বুদ্ধিজীবী সমাজ

(১৯০৫-১৯৩৪) : আনুগত্য থেকে জাতীয়তাবাদে উত্তরণ ১১৭

সঞ্জয়া মুখার্জী

ঔপনিবেশিক আমলে রাঢ় বাংলার স্বাস্থ্যচিত্র ও স্বাস্থ্য

পরিকার্যনো : প্রাদিক্ত বর্ধমান ও বাঁকুড়া ১২৭

প্রিয়দর্শী চক্রবর্তী

গঠননৃলক জনিদার চক্রে প্রাপ্তবয়স : গৌরভূমের অবিনাশচক্র ১৫১

পাথ শঙ্খ মজুমদার  
দেশের জন্য না, বাঁচার জন্য লড়াই :  
বীরভূমের ভারত ছাড়ো আন্দোলনের একটি পর্ব ১৬৪

রোশনী সেন  
ব্রহ্মদৈত্যের মেলা : প্রান্তিক উৎসবে লোকাচার  
ও লোকবিশ্বাসের স্বরূপ সন্ধান ১৭৭

অমিতাভ কারকুন  
বাংলার প্রথম চিড়িয়াখানা ১৮৩

সুস্নাত দাশ  
সুন্দরবনের তেভাগা আন্দোলন বিষয়ক ইতিহাস অনুসন্ধান ১৯২

মাল্যবান চট্টোপাধ্যায়  
দক্ষিণ চব্বিশ পরগণা জেলার পরিবেশ রক্ষার ভাবনার ইতিহাস ২০৬

রোহিনী কর  
লৌকিক ও পৌরাণিক : বোড়ালের ত্রিপুরসুন্দরী দেবীর সেকাল ও একাল ২১৯

সুমন মুখার্জী  
ঔপনিবেশিক বাংলায় ইংলিশ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির  
পণ্য ক্রয় নীতি, ১৭৬৫-১৮১৩ :  
অষ্টাদশ শতাব্দীর দ্বিতীয়ার্ধের প্রেক্ষাপটে একটি ঐতিহাসিক বিশ্লেষণ ২২৪

শান্তনু সেনগুপ্ত  
ইজরায়েল সারহাদ ও বাংলায় ইংরেজ কোম্পানির উত্থান :  
ব্রিটিশ যুগের আমেনীয় প্রাক্কথন ২৫২

শ্রীকান্ত রায় চৌধুরী  
বরেন্দ্র অনুসন্ধান সমিতি এবং সংশ্লিষ্ট মিউজিয়াম : ১৯১০-১৯৬৪ ২৬১  
লেখক পরিচিতি ২৭৯



## ইজরায়েল সারহাদ ও বাংলায় ইংরেজ কোম্পানির উত্থান : ব্রিটিশ যুগের আমেনীয় প্রাক্কথন

শান্তনু সেনগুপ্ত

প্রচলিত ধারণা অনেকটা এই রকম যে সপ্তদশ ও অষ্টাদশ শতকে বাংলায় আসা বিদেশি বণিকদের মধ্যে সবচেয়ে প্রভাবশালী ছিল ইংরেজ ও ফরাসী কোম্পানির বণিকরা। ইংলিশ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির দুর্দমনীয় রাজনৈতিক ও সামরিক ক্ষমতাই তাদের বিশ্বজ্ঞানী সাম্রাজ্যের অধিকারী করে তুলেছিল এবং বাংলাও তার ব্যতিক্রম হয়নি। তবে C.A. Bayly বা তার পরবর্তী সময়ে Philip J. Stern-এর মতো ইতিহাসবিদরা কোম্পানি শাসনের উত্থানের পেছনে একাধিক স্থানীয় গোষ্ঠীর ভূমিকার কথা বলেছেন।<sup>১</sup> ফলস্বরূপ ক্ষেত্রে Blair B. Kling বা বোম্বাই বা সুরাটের ক্ষেত্রে Lakshmi Subramanian দেখিয়েছেন কিভাবে ইউরোপীয়দের প্রতিষ্ঠা ও উন্নতির পেছনে স্থানীয়দের আর্থিক ও সাংস্কৃতিক সম্পদ কাজ করতো।<sup>২</sup>

Philip D. Curtin, তার Cross Cultural Trade in World History গ্রন্থে দেখিয়েছিলেন আদি আধুনিক যুগে যে আন্তর্জাতিক-দূরবাণিজ্যিক সংস্কৃতি গড়ে ওঠে, তাতে আমেনীয়দের মতো কিছু trade diasporic গোষ্ঠীর গুরুত্ব বাড়তে থাকে মধ্যযুগের হিসেবে।<sup>৩</sup> এরা কি ধরনের মধ্যস্থতাকারী ছিল তা নিয়ে আটায়েভা কববার আগে একটি বৃহৎ নেওয়া সরকার যে diaspora বলতে আমরা কি বুঝি আর আমেনীয় diaspora কিভাবে গড়ে উঠলো আর তাদের কাজকর্মের ধরণই বা কিরকম ছিল। Diaspora কথাটি এসেছে গ্রীক শব্দ diaspeiro অর্থাৎ dispersion বা বিক্ষিপণ থেকে অর্থাৎ একটি গ্রন্থে একটি প্রতিবেদন দিতে ইস্তিও করে যেখানে একটি নির্দিষ্ট জায়গা থেকে কেউ কেউ বসবাস করছে এবং অন্যত্র ছড়িয়ে পড়ে। এরা অভিবাসনের মাধ্যমে বিভিন্ন জায়গায় ছড়িয়ে পড়েছে এবং তাদের উৎসমূলের পরিচয় ও সাংস্কৃতিক ইকাবোব সংরক্ষণ করে। এছাড়া এরা বিভিন্ন স্থানে অভিবাসনকারী গোষ্ঠীগুলি যখন মূলত অভিবাসনকারী হিসেবে উৎসমূলের পরিচয় ও সাংস্কৃতিক ইকাবোব সংরক্ষণ করে। এরা বিভিন্ন স্থানে অভিবাসনকারী হিসেবে উৎসমূলের পরিচয় ও সাংস্কৃতিক ইকাবোব সংরক্ষণ করে। এছাড়া এরা বিভিন্ন স্থানে অভিবাসনকারী হিসেবে উৎসমূলের পরিচয় ও সাংস্কৃতিক ইকাবোব সংরক্ষণ করে।

# নিষ্পলক

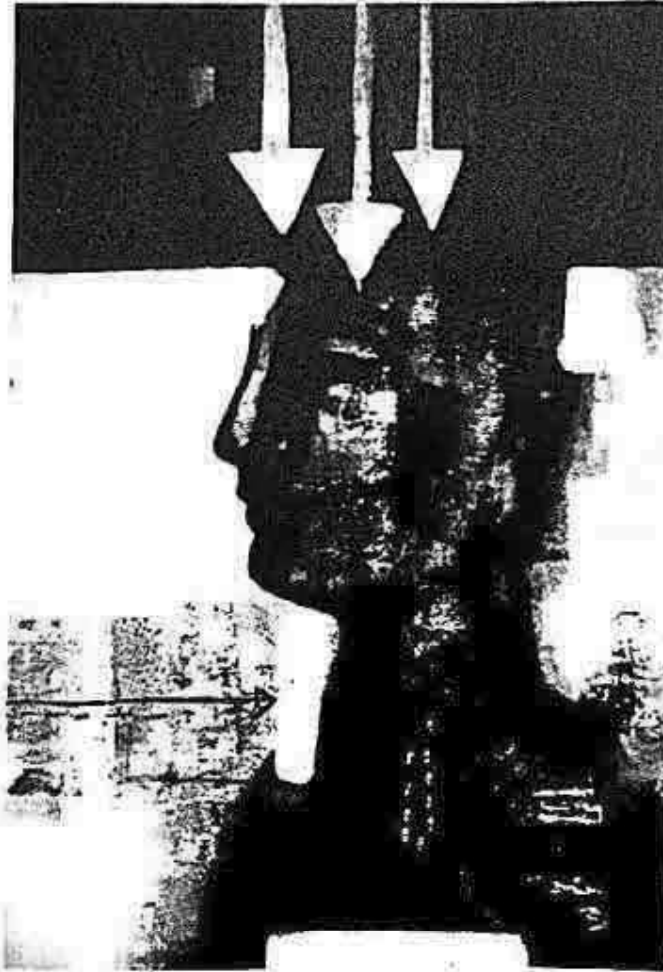
নির্ভীক দৃষ্টিপাত

জুলাই - ডিসেম্বর ২০২৩

পঞ্চম বর্ষ - দ্বিতীয় ও তৃতীয় সংখ্যা

₹ 250.00

## ইতিহাস ও সমকাল



# निष्पलक

पञ्चम वर्ष द्वितीय ७ तृतीय संख्या जुलाई-डिसेम्बर २०२३  
Nispolok

RNI No. : WBBEN / 2019 / 80187

ISSN 2583-2085

VOLS NO 2 & 3 JULY-DECEMBER 2023 AD

## प्रकाशक

जगदीशचन्द्र सरदार

२०२ धर्मतला रोड, कोदालिया, सोनारपुर  
दक्षिण २४ परगना, कलकता - ९००१४७

## नामलिपि

उत्पल बसु

## प्रच्छद

अभिजित् सेनगुप्त

## वर्णबिन्यास

अरुण मजुमदार

सूर्य सेन पार्क, नरेंद्रपुर, दक्षिण २४ परगना, कलकता - ९०० १०३

## मुद्रक

'आर्ट ७ प्रिन्ट'

बैद्यपाड़ा, सोनारपुर

दक्षिण २४ परगना, कलकता - ९००१५०

## प्राप्तिस्थान

दे बुक • ध्यानविन्दु • नईचित्र

देज पाबलिशिङ्ग • पात्रिराम

पाकटर्मा • पालन • काउन्टर एरा

मूल्य : २५० टाका

# নিপলক

## উপদেষ্টামণ্ডলী

জগমোহন সিং পবিত্র কুমার ওপ্ত চিত্তব্রত পালিত  
প্রবীর কুমার লাহা অশোক মুখোপাধ্যায় সুমিত মুখোপাধ্যায়  
মনোরঞ্জন ব্যাপারী রঞ্জিত শূর অভিজয় কার্কেকর  
মেসবাহ কামাল আশিস ওপ্ত সুরঞ্জন মিত্তে কণিষ্ঠ চৌধুরী  
নির্মল বন্দোপাধ্যায় সব্যসাচী চট্টোপাধ্যায়

## সম্পাদক

জগদীশচন্দ্র সরদার

## নির্বাহীসম্পাদক

সাহাবুল ইসলাম গাজী

## সহযোগী সম্পাদক

সঞ্জয় সরকার

## সহকারী সম্পাদক

রুদ্র সেন

## সম্পাদকমণ্ডলী

বরেন্দ্র মণ্ডল উৎপল বসু

মাধনলাল নন্দ গোস্বামী ভাস্কর হালদার

নবনীতা গিরি মুন্সায় প্রামাণিক তৌসিফ আহমেদ

কার্তিক চৌধুরী কাশশাফ গণী থান্নাপেন্নি প্রবীণ দেবশিস মজুমদার

মাল্যবান চট্টোপাধ্যায় প্রসেনজিৎ মুখার্জী পলাশ মণ্ডল

## সম্পাদকীয় দপ্তর

সমকুঠি, ২০২, ধর্মতলা রোড, কোদালিয়া

সোনারপুর, দক্ষিণ ২৪ পরগনা, কলকাতা-৭০০১৪৬,

টেলিফোন : ৯৮৩৬৮৪৩৪৮৬/৯৮৩৬৮৪৩২৩৭

৯০৫১২৭০০৮০

ই-মেল - nispolok19@gmail.com

# নিবন্ধক

উপদেষ্টামণ্ডলী

জনাব, মোহন সিং পবিত্র কুমার ঝলু বিশ্বক পাণ্ডিত্য  
হাবীত কুমার পাণ্ডী আশোক মুখোপাধ্যায় সুমিত্র মুখোপাধ্যায়  
মহোদয়জন বালাদী বঞ্জিচ শ্রুত আশ্রয় কালকির  
মোহনচন্দ্র কাশাল আশিস ঝলু সুব্রজ মিশ্র কনিষ্ঠ চৌধুরী  
নিবন্ধক মুখোপাধ্যায় সবাসাচী চট্টোপাধ্যায়

সম্পাদক

জননীশচন্দ্র মল্লিক

নিবাহী সম্পাদক

মোহনচন্দ্র ঠাকুর পাণ্ডী

সহযোগী সম্পাদক

সঞ্জয় সরকার

সহকারী সম্পাদক

রম সেন

সম্পাদকমণ্ডলী

বরেন্দ্র মণ্ডল উপল বসু

মাখনলাল নন্দ গোস্বামী ডাক্তার হালদার

নবনীতা গিরি মুখা প্রামাণিক জৌগিক আচমেদ

কনিষ্ঠ চৌধুরী কাশশাক গণী বাসোপেন্ডি শ্রীশ দেবশিস মজুমদার

মালানান চট্টোপাধ্যায় প্রসেনজিৎ মুখাচী পলাশ মণ্ডল

সম্পাদকীয় দপ্তর

সমকুঠি, ১০২, গম্ভীরা রোড, কোদালিয়া

সোনারপুর, দক্ষিণ ২ম পরগনা, কলকাতা-৭০০১৮৬

চলচ্চিত্র : ৯৮৩৬৮৮৩৮৬/৯৮৩৬৮৮৩২৩৭

৯০০১২৭০০৮০

ই মেল : nispolok19@gmail.com

# নিম্নলিখ

সূচি

সম্পাদকীয়

অভিন্ন অর্থনৈতিক ব্যবস্থার নিদান কোথায়? ৭

সম্পাদকের টীকাভাষ্য

জাতপাতের জনশুমারি ২৮

বিশেষ প্রবন্ধ

‘ইতিহাস’ কাকে বলে— রাজকুমার চক্রবর্তী ৩০

সাহানির শতবর্ষ পরে: হরপ্পা, বেদ এবং ইতিহাসচর্চার রাজনীতি — কণাদ সিংহ ৪৪

সিদ্ধু সভ্যতায় পরিবেশ ও জনস্বাস্থ্য প্রসঙ্গ: সাম্প্রতিক গবেষণা ও

সম্ভাব্য প্রভাব বিশ্লেষণ — সায়ন ভট্টাচার্য ৫২

অতীত নির্মাণ ও বর্তমান রাজনীতি: ভারতের ‘ইতিহাসের’ গতিপ্রকৃতি

— কৌস্তভ মণি সেনগুপ্ত ৬৩

রাষ্ট্রের গৌরব সঙ্কান: বর্তমানের ভ্রান্ত প্রচেষ্টা — দেব কুমার ঝাঁজ ৭২

আদি-আধুনিক ভারত মহাসাগরের ইতিহাস লিখন: ইউরোপ-কেন্দ্রিকতা ও তারপর

— শাস্তনু সেনগুপ্ত ৭৯

বিমারিস্তান, শিফাখানা এবং দার-উস-শিফা: মধ্যযুগের হাসপাতাল ও ওষুধপত্র

— সাঈদ আলী নাদিম রেজাভি ৯৬

মধ্যযুগীয় ভাবনা: বিশ্বের ইতিহাসচর্চায় অন্ধকার যুগের ধারণা — প্রত্যয় নাথ ১০৩

হিন্দু না ব্রাহ্মণ, মুসলিম না তুর্কি: ভারতের মধ্যযুগে ধর্মীয় পরিচয়

— কাশশাফ গনী ১২০

আলো আঁধারির আওরঙ্গজেব — সুমন কল্যাণ মৌলিক ১৪৪

ব্রাহ্মণ্যতন্ত্র-বিরোধী বাংলা: উৎস সঙ্কান — মনোহর মৌলি বিশ্বাস ১৬০

টিপু সুলতান: হিন্দুত্ববাদী কুৎসা বনাম এক নির্ভীক যোদ্ধার অটুট মহিমা

— মঞ্জুনাথ বি আর ১৭২

নিম্নবর্গের ইতিহাস চেতনা ও চর্চার গতিমুখ: নির্মাণ ও বিনির্মাণ — মিলন রায় ১৮৪

বিজ্ঞানের ইতিহাস যখন ইতিহাসের বিজ্ঞানকে অস্বীকার করে

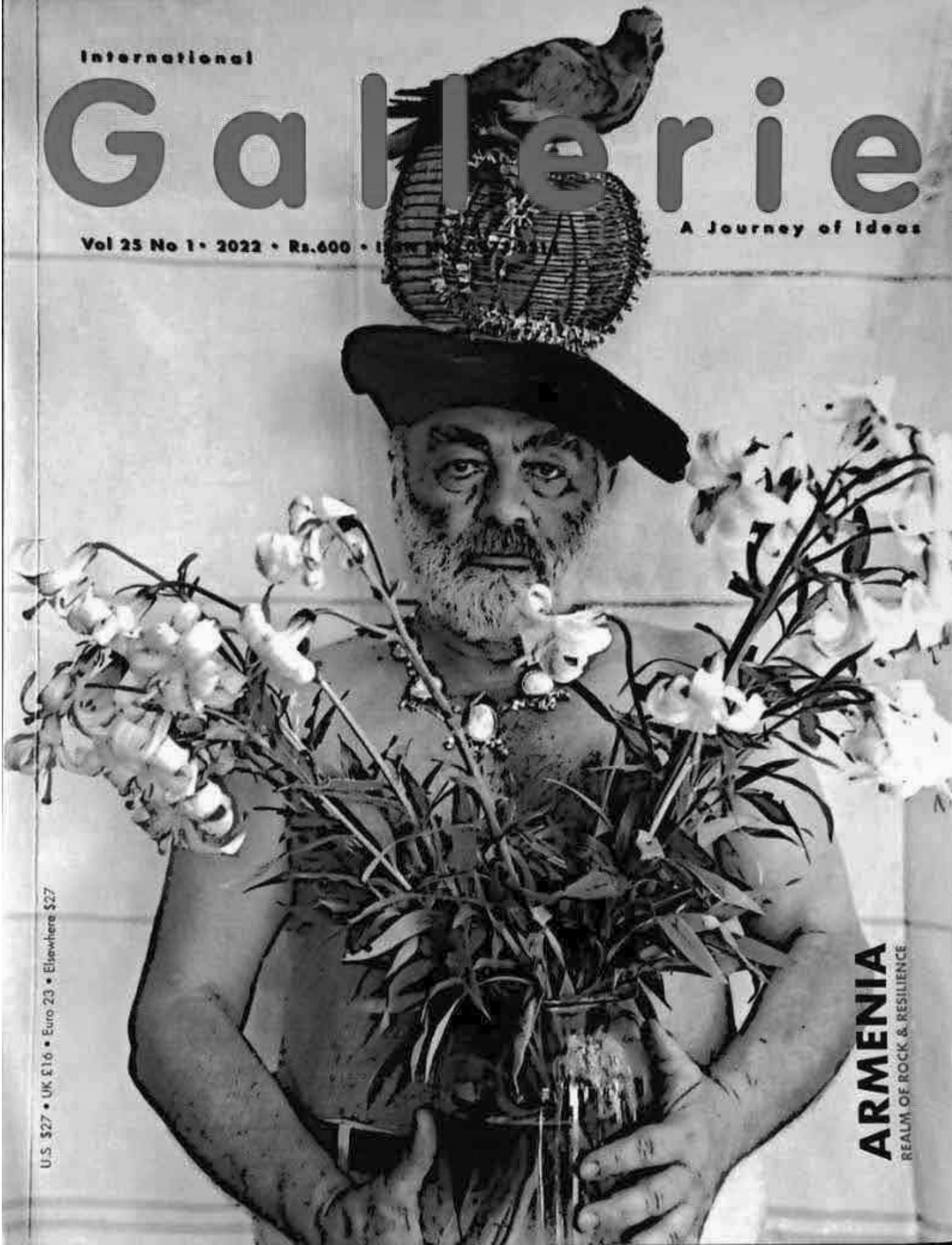
— অশোক মুখোপাধ্যায় ১৯১

International

# Gallery

A Journey of Ideas

Vol 25 No 1 • 2022 • Rs.600 • ISSN No. 2542-2111



U.S. \$27 • UK £16 • Euro 23 • Elsewhere \$27

**ARMENIA**  
REALM OF ROCK & RESILIENCE



8/20/2022

enzerworld.com

Follow us on



INTERNATIONAL GALLERY

ARMENIA. REALM OF ROCK & RESILIENCE

Vol. 25. No 1. 2022. ISSN No. 0973-2314

International

# Gal

Vol 25 No 1 • 2022 • Rs. 600 •

U.S. \$27 • UK 913 30 • Euro 23 • Elsewhere \$27





ART

- 6 **ENGAGING THE OLD... REVEALING THE NEW**, Editor  
 Arsen Vahagn Topchyan | Albert Vanfaryan | Ruben Grigorian  
 Aram Sarkisyan | Sarkis Hamallishyan | Gabo (Gabriel) Manoukian  
 Arsen Givongyan | Samuel Saghatelyan | Seda Grigoryan | Daron  
 Mouradian | Vahan Rostomian | Aram Hakobyan | Miko Marum  
 Khachaturian | Lila Soghomonian | Vahagn Harutyunyan | Arpine Keremian  
 Arsen Khachaturian | Vahagn Hamallishyan | Margarita Maralian

PERFORMING ARTS

- 52 **FROM THE HILLS AND THE VALS, MUSIC FOR THE SOUL**, Editor  
 54 **DANCE WHEN REMEDY MUSIC**, Vachagan Tadevosyan  
 56 **THE MANY STAGES OF ARMENIAN THEATRE**, Shushbaku MELIK-GALST'YAN

PHOTO ESSAY

- 60 **THROUGH BOHEMIAN LENS, A DIVE INTO HISTORY**, Editor  
 62 **RED, BLACK, WHITE**, Nuzik Armutakyan  
 66 **WAITING THE INNER ALARMS**, Anu Babayan

POETRY

- 72 **WRITE TO ME SON**, Sela Kaputikyan  
 73 **TWO STATES | THREE DAYS WITHOUT THE LORD**, Henrik Edvin  
 74 **THE PRESIDENT AND THE POLICEMAN | SWAN LAKE**, Marine Petrossian  
 75 **ORIGINS | REMOVAL AND THE CREATION OF THE SOUL**, Vahé Arsen  
 76 **TWO UNTITLED POEMS**, Edward Harout  
 77 **THE PRICE | SILENT SILENCE**, Elise Younisyan

VIEWS

- 78 **CAN WE BUILD OUR FUTURE TOGETHER?** Marine Petrossian

ARCHITECTURE

- 80 **PAST, PRESENT AND FUTURE...** Aram Elsharian

TRAVEL

- 84 **ARMENIA ADVENTURES: OFF THE BEATEN FOOTSTEPS**, Ross Melikyan

CINEMA

- 90 **ARMENIAN CINEMA: DAWN OF THE INDEPENDENT TIMES**, Samvel Galst'yan  
 94 **IN TIMES OF WAR AND PEACE, COURAGE AND RESISTANCE**, Sela Grigoryan

LIFE

- 98 **A NEXT WHERE THEY BELONG... YARDS IN ARMENIA**, Editor  
 100 **A TOMB, A GULCH, A CITY, ANOTHER HOME. ARMENIANS IN CALIFORNIA**,  
 Seregha Serghetti

PERSONA

- 106 **SERGEY PASHAYAN: THE MAN WHO LIVED HIS ART**, Editor  
 112 **ELISE YOUNISYAN: HEART BY HEART, STONE BY STONE**, Elise Younisyan  
 114 **RUZANNA AND BANANAY: A BRIDGE OF LOVE, PEACE...**, Ruzanna Arsen

Editor & Publisher  
 Ross Sarkis Elise

Design & artwork  
 Ross Sarkis Elise

Administration  
 Preremand Keremian

Digital Studio  
 Manjiv Kelkar  
 Rajesh Guikwad

Advertising & Marketing  
 Sagar Holdings  
 sp.sagar@gmail.com

Production & Printing  
 Pragan Art Printers

Published by  
 Gallery Publishers, Mumbai

Distributed by  
 IHH Books & Magazines  
 Distributors Ltd.

Website & email  
 www.gallery.net  
 gallerymag@gmail.com

Cover  
 Sergei Pashayan

International Gallery is published by Ross Sarkis Elise for Gallery Publishers, 111 Tribhuvan Industrial Estate, Veev Sagar, Mira, Mumbai 400 025. Ph: (0) 221 2167 1366/2450 4545 and printed by her at Pragan Art Printers, 11 Red Hills, Hillside, 520034. Reproduction is prohibited without the express permission of the publisher. Contributions to International Gallery remain copyright by their work. Contributors' names are not necessarily those of this editor.  
 BNL No. 72161/90

# A TOMB, A CHURCH, A CITY, ANOTH

There is an old historical connection between Armenians and Indians found in an ancient work called 'History of Taron' written by Zenob, a Syrian Christian, roughly in the 4th century C.E., where we find references of two Indian princes taking refuge in the Armenian Kingdom. More definite proof points towards Thomas Cana to be one of the earliest Armenian merchants to settle in the Malabar Coast in 780 C.E. A trading connection was thus initiated and by 8th century a few Armenians had settled in and around Kerala. Thereafter, more Armenians are known to have arrived in the 16th century during the Mughal rule in India, and it was then that Emperor Akbar married Mariam Begum Saheba, a visiting Armenian. In fact, the Chief Justice appointed then, Abdul Hai, was an Armenian as well.

in Agra where in 1562, an Ar-

Inevitably, Armenian during the Islamic rule in India, between Armenia and India, con-

Armenians were growing ments were anchored in several Calcutta [Kolkata], Madras in Kerala, where they had churches. In fact, modern Ar- Thomas Cana and Mirza Zul and a Mughal administrator] as Southern and Northern India, a fortune from trading in spices

town near Cannanore [Kannur, Kerala]. He might also have discharged the office of a bishop and protected the local Christians from persecution.

Shahamir Shahmirian, an eminent Armenian merchant, historian and philosopher, founded the first Armenian press in Chennai [erstwhile Madras] with Harutiun Shmavonian, and the first Armenian newspaper 'Azdarar' was printed from there. Interestingly, he even wrote the first-ever Armenian constitution in 1772-73, promoting his vision of an evolved Armenian state... a revolutionary idea in the 18th century amongst Armenians.

While over the years, most Armenians left and are dispersed across the world, contemporary Kolkata, is home today for Armenians in India, with around a mere 150 Armenians settled there. They have their own 18th century Armenian Apostolic Church of Nazareth and the Armenian College & Philanthropic Academy, an educational institution that was founded in 1821. Assistant Professor of History, Santanu Sengupta traces the Armenian footsteps in Bengal [and India], and their immense little-known contribution to this region.



Shahamir Shahmirian, an 18th-century writer and philosopher who also wrote the first Armenian constitution in 1772-73.

Akbar invited Armenians to settle menion church was constructed.

priests and mercenaries followed and trade began to flourish tining into the later British period. wealthy in India and their settle- Indian cities like Surat, Agra, [Chennai], and in various towns constructed their own beautiful menion historians have hailed garnain [Abdul Hai's grandson the champions of Christianity in respectively. Cana, not only made and muslin, but also founded a

# THEIR HOME. ARMENIANS IN CALCUTTA.

Santanu Sengupta



The Armenian Ghats were built in 1734 by Manick Hazare Malabar, a celebrated trader of Armenian origin. This elegant structure was one of the many contributions made by the business Armenians to develop the infrastructure and multicultural support of Calcutta as city to build.

A world that otherwise remains elusive, deep within Calcutta opens up as you walk into the Old China Bazar Street leaving the Writer's Building on your left. Traversing along the narrow, unbelievably busy lanes of the north-west side of Burrabazar, the nerve centre of Calcutta's commercial life, you discover a city of cosmopolitan origin in its true sense.

The Burrabazar area had emerged as a major market complex by the 17th century and became a melting pot of traders of various origins. The skyline here is marked by two Jewish synagogues, a Jain temple, a mosque, a fire temple and two churches belonging to

The Holy Nazareth Church is the oldest church in Kolkata. Built by Aghe Maron in 1724 after the original existing wooden structure was destroyed in a fire in 1658. Today, the Bell of the Church keeps out from a temple of stone and concrete masonry.  
Image: Santanu Sengupta



two different orders of Christianity. Today, they stand as a testimony of the pluralist character of the space.

Walking ahead, with the Maghen David Synagogue on your left, you will find yourself on Armenian Street. While you wonder why a street would be named after a nation situated miles away, take another turn to the left and a beautiful white belfry will peep out from a mess of wires, signboards and street side shops in front of you. That belfry represents one of the best kept secrets of the city... the Armenian Holy Church of Nazareth.

The gates of the Holy Church of Nazareth open the portal to a world that is completely different from its surroundings. In the sudden quiet of the church compound, the visitor encounters graves of the Apcars, the Galstams, the Chaters and the Arathoons. In other words, we meet the Armenians whose contributions made a considerable part of the colonial cityscape of Calcutta, including the iconic structures like the Nizam Palace or the Grand Hotel.

Among these graves lies the tomb of Rezabeelch, the wife of the Charitable Sookias, which dates back to 1630, making it the oldest Christian grave in Calcutta. This relic has posed considerable challenge to the generally accepted history that saw Job Charnock and the English East India Company as the founders of the city. The tomb sparked a lively debate with C.R. Wilson contemplating a much longer past of Calcutta beyond that claimed by the British, while others like P.T. Nair insisted that the tomb might have been transferred from the compound of the Armenian Church in Chinsurah.

The Church itself claims to be the earliest built space of Christian worship in Calcutta. The current building was constructed between 1707 and 1724. However, there are accounts like that of Raja Binoy Krishna Deb that claimed that originally a timber chapel called the Church of Saint John had been built by the Armenians in 1689. The present building was erected after the timber church got demolished by a fire. Therefore, both the tomb of Rezabeelch and the Church strengthen the claim that the Armenians could have actually been the pioneers of the city.

The Armenians in Calcutta had also developed schools to ensure the survival of their culture among



their descendants. After the short-lived Kaloos' School [1798], the Armenian College and Philanthropic Academy [ACPA] was founded in Calcutta in 1821 under the leadership of Mnatsakan Vardanian. The ACPA, which is now an ICSE school, stands not merely as a relic of the past, but on the contrary it continues to bring together teachers and students of Armenian origin from across the world to Calcutta. The introduction of fresh students every year, not only keeps the original intent of the institution alive, but also rejuvenates the roots of the Calcutta diaspora.

The entire debate as to who the authentic founder of Calcutta was, stands futile today following the verdict of the Calcutta High Court that asserted the city developed organically through a long period of mercantile activities carried out by both indigenous and foreign traders of various origins. The antiquity of the Church of Nazareth reaffirms the idea of a pluralistic origin of Calcutta.

However, we cannot deny that the East India Company did actually formalise the boundaries of the city by establishing their factory called Fort William in 1696. Curiously, the plaques on the walls of the Church of Nazareth will tell us that even Fort William would not have been established without the intervention of an Armenian known as Khwaja Israel Sarhad. Israel Sarhad was a merchant operating from Hooghly.

He had always been close to the British given his uncle Khwaja Phanoos Kalanjar's pivotal role in signing the trade treaty on behalf of the Armenians

with the English East India Company in 1688. Sarhad's endeavors helped the East India Company to get a lease of Gobindopur, Kolikata and Suranuri, the three villages on which Calcutta was formally founded.

Sarhad, a multi-skilled entrepreneur, was also instrumental in facilitating the royal declaration granting trading privileges to the East India Company to trade in Bengal without having to pay regular custom duties. This enabled the British to have a firm anchor in Bengal. Little do we know that it was an Armenian who helped secure the British presence and success in Bengal.

The Armenians continued to build Calcutta as we know it today. Thaddeus Mesrope Thaddeus, an Armenian merchant and philanthropist, Johannes Carapiet Galstaun, a millionaire businessman, or Arathoon Stephen, all of whom built much of the iconic skyline of Chowringhee and Park Street; spaces that have often been identified [wrongly] as the jewels of the British Raj in Calcutta.

That is precisely the tragedy of Calcutta's historical discourse. The public sphere, in spite of encountering the Armenian Street or the elegant Armenian Ghat built by Manvel Hazar Maliyan, a benevolent trader in 1734, remain almost unaware of the precious contribution the community made to the city by enhancing its character.

The history of Armenians in Calcutta has sadly remained just as elusive as the Church of Nazareth... hidden as it is behind the camouflage of shops, billboards and a disinterested crowd... waiting as it were, for a visitor to walk in and discover stories that remain untold.

Santanu Sengupta (b 1985 in Kolkata) works as idyataya (University of Burdwan). He received his the thesis titled: *The Empire's Network: Formation of the Armenian Agency (mid-18th-19th century)*. *Modern Indian Ocean World* have been *Global Networks* and in various edited volumes.



an Assistant Professor of History at Palba Mahav. PhD degree from Jadavpur University in 2021 for the British Empire in the Eastern Indian Ocean and His research articles on the Armenians and Early published in the *Journal of the Asiatic Society*.



# ENVIRONMENTAL TECHNOLOGY

## ESSENTIALS, APPROACHES AND TRENDS

FOREWORD BY  
PROFESSOR (DR) DIPAK KUMAR KALITA

DR. N. VIDYABENNERJI  
DR. SHYAM SUKUMAR  
DR. ...

IPU



# **EDUCATIONAL TECHNOLOGY:**

**ESSENTIALS, APPROACHES AND TRENDS**

EDITED BY

**Dr. Nandini Banerjee  
Dr. Shyamsundar Bairagya  
Dr. Amarnath Das**

**red'shine**  
PUBLICATION

WWW.RS.PUB

CHAPTER NO.	CHAPTERS AND AUTHORS	PAGE NO.
45	INFORMATION AND COMMUNICATION TECHNOLOGY: A NEW FRONTIER OF ALL-ROUND MANAGEMENT OF EDUCATION PROCESS <b>Dr. Sohini Ghosh</b>	473
46	EDUSAT <b>Paramita Nag</b>	496
47	CONCEPT OF E-LEARNING IN CONTEMPORARY SOCIETY: CHALLENGES AND PROSPECTS <b>Mr. Sahabuddin Ansari</b>	506
48	MOOCS: IMPACT IN HIGHER EDUCATION IN INDIA <b>Dr. Gautam Saha</b>	519
49	USE OF EDUCATIONAL TECHNOLOGY FOR SPECIAL NEED CHILDREN: A REVIEW <b>Dr. Shyamasree Sur</b>	531
50	IMPACT OF SMART CLASS ON LANGUAGE LEARNING: A QUANTITATIVE STUDY <b>Dr. Soumendra Kumar Saha Chaudhuri , Dr. Pradip Debnath</b>	537
51	EFFECTIVENESS OF TEACHING AND LEARNING PROCESS THROUGH MIND MAPPING TECHNIQUE <b>Souravi Ata</b>	547

# CHAPTER 45

## INFORMATION AND COMMUNICATION TECHNOLOGY: A NEW FRONTIER OF ALL-ROUND MANAGEMENT OF EDUCATION PROCESS

Dr. Sohini Ghosh <sup>1</sup>

---

### *Abstract*

The incorporation of technology into teaching and research is one of the most important challenges for education today. It is the time to move beyond the walls of our classrooms to join forces with other institutions and societies to revitalize education. The present paper focuses on the use of technology in teaching-learning process that will greatly contribute to meet student needs for learning anywhere and anytime. Integration of information and Communication Technologies (ICT) into teaching and learning process is a growing field which has variety of definitions according to different points of view. A very common view asserts that the application of ICT processes should be presented in an integrated way as well as concrete models need to be developed for the teachers for the integration process to improve students' learning. Based on the premise that "the integration process should strengthen learning of students", there is a need to present an integrated point of view in the application of these processes and to develop some concrete examples for teachers. Therefore, the main purpose of this study is to develop a model for assessing the ICT integration process and helping to improve students' learning.

**Keywords:** *Information and Communication Technologies, ICT integration, Enhancing Learning, Educational improvement, and Teacher Education.*

---

<sup>1</sup> Assistant Professor, Department of Education, Polba Mahavidyalaya, Polba, Hooghly-712148, West Bengal, India

ISBN : 978-81-965582-



# Annamalai University

(Accredited with A+ Grade by NAAC)

## Applications of AI

in

# Emerging Research and Education

Volume - I

### Editor in Chief

Dr. S. Arivudanambi

### Editors

Dr. S. Pameekumb

Dr. S. Karthikeyan

Dr. T. Venkatesh Kumar

Dr. R. Sankar

Dr. C. Jayaraj

Dr. K. Sankar

Dr. P. Praveen

Dr. S. R. Prasad

Printed by

Internal Quality Assurance Cell

Annamalai University

2023

**APPLICATIONS OF AI  
IN EMERGING RESEARCH AND  
EDUCATION**

**VOLUME - I**



Published by

**INTERNAL QUALITY ASSURANCE CELL (IQAC)**

**Annamalai University**

**Annamalai Nagar - 608 002**

**Tamilnadu, India.**

AI IN ACHIEVING SDG's		
37.	Artificial Intelligence in Achieving Sustainable Development Goals - <i>Mrs. P. Kavitha &amp; Mr. S. Vinoth</i>	401
38.	AI Education in Sustainable Development Goals (SDGs) - <i>S. J. Adlin Sheeba Raj &amp; Dr. T. Tamizhselvan</i>	415
39.	Quality Education Through Artificial Intelligence Inachieving Sustainable Development Goals - <i>Dr. Sohini Ghosh</i>	424
40.	AI, SDG And Economic Development - <i>Dr. T. Chandramouli</i>	445

**QUALITY EDUCATION THROUGH ARTIFICIAL  
INTELLIGENCE IN ACHIEVING SUSTAINABLE  
DEVELOPMENT GOALS**

**Dr. SOHINI GHOSH**

*Assistant Professor, Department of Education, Polba Mahavidyalaya  
Affiliated to The University of Burdwan, Polba, Hooghly*

**Abstract**

*The main objective of this chapter is to explore how quality education, artificial intelligence, and sustainable development goals are interrelated. Artificial Intelligence (AI) technology has been playing a very significant role in the field of educational studies during the present century, especially in the context of NEP 2020. Sustainable Development Goals were formulated by United Nations General Assembly as part of the post-2015 World Development Agenda, which sought to create a future global development framework to succeed in the Millennium Development Goals by 2030. 17 goals are integrated into this sustainable development process—they recognize that action in one area will affect outcomes in others and that quality development must balance social, economic, and environmental sustainability. The goal of AI is to provide software that can reason on input and explain output. AI may provide human-like interactions with software and offer decision support for specific tasks, but it's not a replacement for humans. There are also some challenges in policy implications that should be a part of the global and local conversations regarding the possibilities and risks of introducing AI in education and preparing students for SDG goals.*

**Key Words:** *Artificial Intelligence, Sustainable Development Goals, Quality Education.*

# WOMEN EMPOWERMENT



Edited by :  
Dr. Bimal Charan Swain



## **KUNAL BOOKS**

4648/21, 1st Floor, Ansari Road,

Daryaganj, New Delhi-110002.

Phones: 011-23275069, 9811043697

E-mail: [kunalbooks@gmail.com](mailto:kunalbooks@gmail.com)

Website: [www.kunalbooks.com](http://www.kunalbooks.com)

*Women Empowerment*

© Editor

First Published 2021

ISBN: 978-93-91908-21-8

*[All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher.]*

*The opinions and views expressed are exclusively those of the authors/ contributors and in no way the editor or publisher is responsible*

Published in India by Prem Singh Bisht for Kunal Books and  
printed at Trident Enterprises, Noida, U.P.

(x)

9. **Empowerment of Women Through Vocational Education in India**  
*Sabyasachi Das & Dr. Bimal Charan Swain*
10. **National Education Policy 2020: Equity and Inclusion for Empowering Women**  
*Dr. Neena Dash*
11. **Women Empowerment and Sustainable Development**  
*Dr. Sohini Ghosh*
12. **Education and Women Empowerment**  
*Dr. Sabita Mishra*
13. **Women Empowerment in India – Issues and Challenges**  
*Saswati Nanda*
14. **Role of Self Help Groups in Empowering Rural Women: A Study**  
*Monalisha Panda & Dr. Seba Mohanty*
15. **Women Empowerment in 21st Century Through Sports**  
*Dr. Yogamaya Panda*
16. **Quality of Life of Primitive Tribal Women in Relation to Educational Development Programme**  
*Dr. Kartikeswar Roul & Dr. Bimal Charan Swain*
17. **Role of Education for Empowerment of Women**  
*Koyeli Laha & Dr. Rasmirekha Sethy*
18. **Role of Education for Empowerment of Women in India**  
*Dr. Raj Kumar Nayak & Dr. Haripriya Panda*
19. **Empowering Women Through Life Skill Education- An Overview**  
*Dr. Atal Bihari Tripathy & Dr. Rahul Pandey*
20. **Education and Women Empowerment**  
*Dr. Sajna Pattnaik*
21. **Women Empowerment and Sustainable Development**  
*Bidulata Sahon*

# WOMEN EMPOWERMENT AND SUSTAINABLE DEVELOPMENT

*Dr. Sohini Ghosh*

---

## **Introduction**

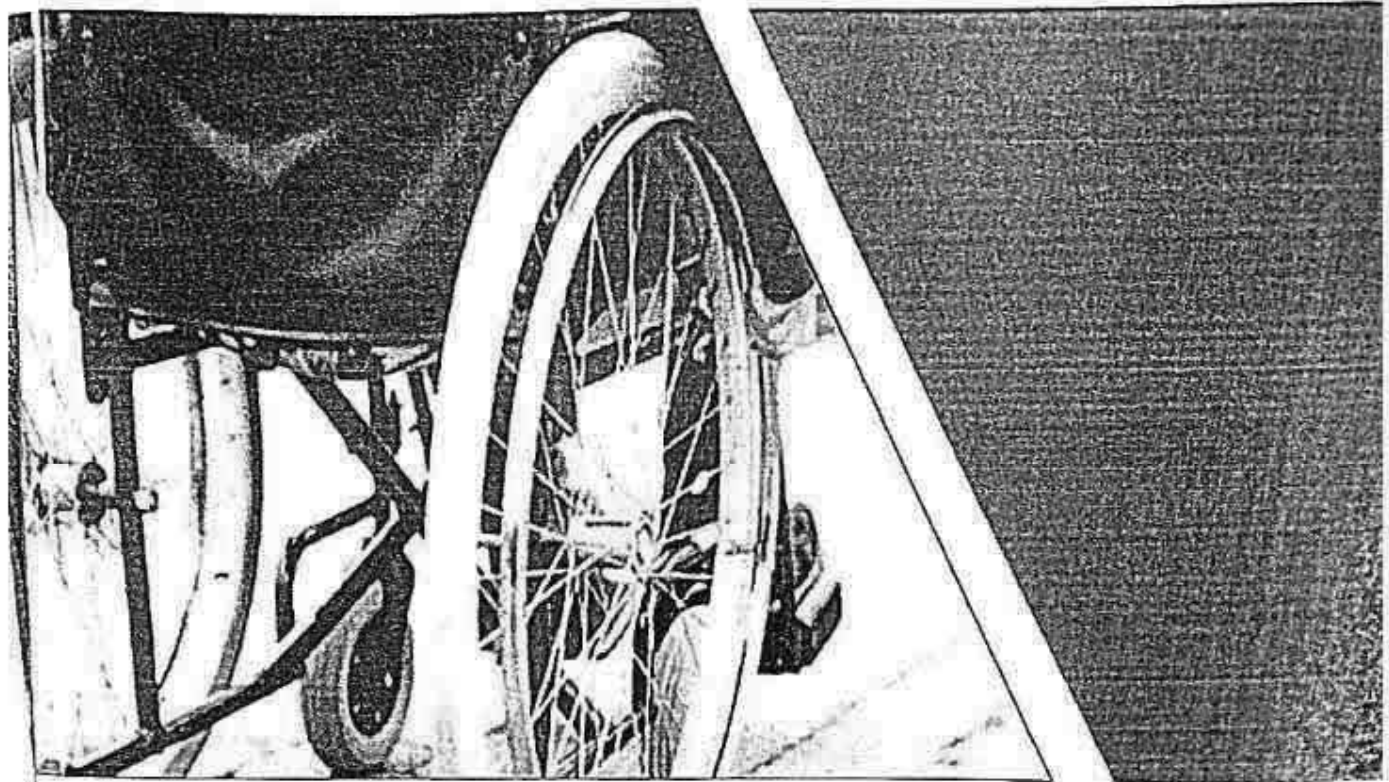
Empowerment is a multi-faceted, multi-dimensional and multi-layered concept. It is very difficult to find out the precise components of empowerment, the exact meaning of it, or for that concept, to define it. Women's empowerment can be defined to promoting women's sense of self-worth, their ability to determine their own choices, and their right to influence social change for themselves and others. It is closely aligned with fundamental human right that is also key to achieving a more peaceful, and prosperous world. It may be said that women's empowerment is a process in which women gain greater share of control over resources - materials, human and intellectuals like knowledge, information, ideas and financial like money - and access to money and control over decision-making in the home, community, society and nation, and to gain power<sup>1</sup>.

Empowerment could take several dimensions - legal-judicial, economic, social and political. Several legal enactments, verdicts of the Court help in enforcing the rights and dignity of women. Poverty eradication programmes, micro-creditschemes, agricultural and industrial policies and all financial activities try to make women empowered. The concept of social empowerment is very wide embracing issues like education, health, food and nutrition, drinking water, sanitation, housing etc. Political empowerment is based upon taking participation in the formal structures of power to influence it to mould and finally, to redefine it.

It is true that women empowerment leads to social change. When women and girls are supported, they can gain opportunities to speak up for their

For detailed information on disability & mental health books, visit our website [www.jaypeebrothers.com](http://www.jaypeebrothers.com), for detailed information on disability & mental health books, visit our website [www.jaypeebrothers.com](http://www.jaypeebrothers.com), for detailed information on disability & mental health books, visit our website [www.jaypeebrothers.com](http://www.jaypeebrothers.com)

# Comprehensive Textbook on DISABILITY



*Editors*  
**BS Chavan**  
**Wasim Ahmad**  
**Raj Kumari Gupta**

*Forewords*  
**Virendra Kumar**  
**Jagat Ram**

## Jaypee Brothers Medical Publishers (P) Ltd

### Headquarters

Jaypee Brothers Medical Publishers (P) Ltd  
EMCA House, 23/23-B  
Ansari Road, Daryaganj  
New Delhi - 110 002, India  
Landline: +91-11-23272143, +91-11-23272703,  
+91-11-23282021, +91-11-23245672  
Email: [jaypee@jaypeebrothers.com](mailto:jaypee@jaypeebrothers.com)

### Corporate Office

Jaypee Brothers Medical Publishers (P) Ltd  
4838/24, Ansari Road, Daryaganj  
New Delhi 110 002, India  
Phone: +91-11-43574357  
Fax: +91-11-43574314  
Email: [jaypee@jaypeebrothers.com](mailto:jaypee@jaypeebrothers.com)

Website: [www.jaypeebrothers.com](http://www.jaypeebrothers.com)  
Website: [www.jaypeedigital.com](http://www.jaypeedigital.com)

© 2022, Jaypee Brothers Medical Publishers

The views and opinions expressed in this book are solely those of the original contributor(s)/author(s) and do not necessarily represent those of editor(s) of the book.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission in writing of the publishers/editors.

All brand names and product names used in this book are trade names, service marks, trademarks or registered trademarks of their respective owners. The publisher is not associated with any product or vendor mentioned in this book.

Medical knowledge and practice change constantly. This book is designed to provide accurate, authoritative information about the subject matter in question. However, readers are advised to check the most current information available on procedures included and check information from the manufacturer of each product to be administered, to verify the recommended dose, formula, method and duration of administration, adverse effects and contraindications. It is the responsibility of the practitioner to take all appropriate safety precautions. Neither the publisher nor the author(s)/editor(s) assume any liability for any injury and/or damage to persons or property arising from or related to use of material in this book.

This book is sold on the understanding that the publisher is not engaged in providing professional medical services. If such advice or services are required, the services of a competent medical professional should be sought.

Every effort has been made where necessary to contact holders of copyright to obtain permission to reproduce copyright material. If any have been inadvertently overlooked, the publisher will be pleased to make the necessary arrangements at the first opportunity.

Inquiries for bulk sales may be solicited at: [jaypee@jaypeebrothers.com](mailto:jaypee@jaypeebrothers.com)

*Comprehensive Textbook on Disability*

First Edition: 2022

ISBN 978-93-5465-551-7

Printed in India

### Overseas Office

J.P. Medical Ltd  
83 Victoria Street, London  
SW1H 0HW (UK)  
Phone: +44 20 3170 8910  
Fax: +44 (0)20 3008 6180  
Email: [info@jpmmedpub.com](mailto:info@jpmmedpub.com)

# Contents

## 1. UNDERSTANDING DISABILITY

1. **Evolving Concept of Disability** ..... 3  
*Pratap Sharan, Saurabh Kumar*  
□ Disability due to Mental Illness 3 □ Models of Disability 4 □ International Classification of Functioning, Disability and Health 4 □ Evolution of Disability as a Human Right Issue 5 □ International Classification of Diseases and ICF 6
2. **Concept of Normalization, Mainstreaming, Integration, and Inclusive Education: Implications in Educational Program** ..... 8  
*Wasim Ahmad, S Parween, Nazli*  
□ Normalization 8 □ Principles of Normalization 9 □ Mainstreaming 9 □ Integrated Education 10  
□ Inclusive Education 10
3. **Special Education: Learning Theories and Educational Models** ..... 13  
*Shamim Mahammad, Hamed Ademala Adetunji, Tabrez Uz Zaman*  
□ Theories 14 □ Special Education Models 20
4. **Historical Perspective of Special Education in India and Abroad** ..... 23  
*Sanjay Kumar Yadav, Payel Rai Chowdhury Dutt, Wasim Ahmad*  
□ Special Education: Global Perspective 24 □ Special Education for Hearing Impairment 24  
□ Special Education for Visual Impairment 24 □ Special Education for Intellectual Disability 25  
□ Special Education in India: Historical Perspective 26
5. **Critical Appraisal of Inclusive Education in India** ..... 30  
*Anita Julka*  
□ Barriers to Inclusive Education 32 □ Resource Support for Inclusive Education 33 □ Access to Curriculum 34  
□ Early Intervention 34 □ Systemic Reforms 35 □ Collaborations 35
6. **Recent Trends in Special and Inclusive Education as the Rights-based Approach in India: Roles of SSA, RMSA, and NIOS** ..... 37  
*Sahini Ghosh*  
□ Special Education 38 □ Inclusive Education 38 □ Sarva Shiksha Abhiyan 39  
□ Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan 40 □ National Institute of Open Schooling 41

## 2. INTELLECTUAL DISABILITY (ID)—CAUSES, DIAGNOSIS AND ASSESSMENT

7. **Intellectual Disability: Concept, Clinical Characteristics, Assessment, Diagnosis and Management** ..... 47  
*Shiva Prakash Srinivasan, Priena Sharma, Abhijit R Rozatkar*  
□ Historical Origins of the Concept of Intellectual Disability 47 □ Evolving Concept of Intellectual Disability 48  
□ Classification of Intellectual Disability 49 □ Clinical Features of Intellectual Disability 50  
□ Diagnosing Intellectual Disability 51 □ Management and Provision of Services for Persons with Intellectual Disability 52
8. **Causes of Intellectual Disability: Preconception, Prenatal, Natal and Postnatal** ..... 55  
*Deepthi Purna*  
□ Causes of Intellectual Disability 55 □ Preconception Causes 56 □ Prenatal Causes 57  
□ Natal Causes 60 □ Postnatal Causes 60
9. **Disability Impact on Parents and Siblings of Children with Intellectual Disability** ..... 64  
*M Thomas Kishore, Alka Nizami, Haque Nizami*  
□ Family Theories 64 □ Impact on the Parents 65 □ Family Adaptation 65 □ Parent Empowerment 66  
□ Impact on Siblings 67
10. **Prevention of Intellectual Disability in India: Primary, Secondary, and Tertiary** ..... 70  
*Sachin Anand*  
□ Preventing Intellectual Disabilities 71 □ Systematic Approach to Preventing Intellectual Disability 72

# Recent Trends in Special and Inclusive Education as the Rights-based Approach in India: Roles of SSA, RMSA and NIOS

Sohini Ghosh

## LEARNING OBJECTIVES

After going through this chapter, the learners will be able to:

- Understand about the relevance of rights-based education system in India
- Explore the significance of the concepts of special education, Integrated education, and Inclusive education
- Elucidate the recent trends in the development of Inclusive Education through SSA, RMSA, and NIOS schemes

## ABSTRACT

Inclusive education as the rights-based approach acknowledges the individual learning styles of the students focusing on the values of respect for the dignity of the individual in diversity, fostering a collaborative approach, and building a rich social capital. In this context, a few rights-based educational schemes have been launched recently. Firstly, the Sarva Shiksha Abhiyan (SSA) is conceived (in 2001) as a centrally sponsored scheme to improve the status of elementary education in India through the (1) interventions designed to improve the accessibility, (2) reduction of gender and social gaps, and (3) improvement of the quality of learning. Secondly, the Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan (RMSA), as a Government of India project, has been launched (in 2009) to provide supports to the secondary schools for quality interventions. The RMSA Project Approval Board (PAB) of the Ministry of Human Resource Development (MHRD) considers the approval of integrated plan under the umbrella scheme of RMSA, including the four subsumed Centrally Sponsored Schemes of Secondary Education (CSSSE), namely, (1) ensuring quality improvement in schools, (2) providing Information and Communication Technology (ICT) facilities in secondary schools, and (3) providing access and equity with a special focus to include ST/SC, minority girls, Children with Special Needs (CWSNs), and other disadvantaged groups. Thirdly, the National Institute of Open Schooling (NIOS), formerly known as National Open School (NOS), was established in November 1989 as an autonomous organization in pursuance with National Policy on Education (1986) by the MHRD. NIOS is providing a number of courses pertaining to different vocations, life enrichment, and community orientation besides general and academic courses at the secondary and senior secondary levels. It also offers elementary level courses through the Open Basic Education (OBE) program. The Government of India through a gazette notification vested NIOS with the authority to examine and certify learners registered with it up to predegree level courses whether academic, technical, or vocational. Thus, the main purpose of the present article is to critically review the roles of recent educational schemes, especially in the context of special and inclusive education.

**Keywords:** Democratic Society, Inclusive Education, Rights-based Education, SSA, RMSA, NIOS.

## INTRODUCTION

The Right to Education (RTE) is an internationally recognized right for all children. In order to make the "Right to Education for all" a reality, efforts and initiatives must be ensured that all learners with diverse needs have the access to quality education within a reasonably accommodative inclusive environment that can meet basic learning needs and participation requirements towards enriching the lives of the marginalized children (Government of India, 2010). Still today, millions of children, youth, and adults continue to experience exclusion within and from education around the world. The UNESCO Convention against Discrimination in Education (1960) and other international human rights treaties prohibit any exclusion from or limitation to educational opportunities on the basis of socially ascribed or perceived differences, such as ability, gender, ethnic origin, language, religion, nationality, social origin, economic condition, etc. Education is about being proactive in

identifying the barriers and obstacles of learners' encounter in attempting to access opportunities for quality education, as well as, in removing those barriers and obstacles that lead to exclusion. A latest report published by UNICEF (2016) entitled, "The State of the World's Children: A fair chance for every child," argues, "Promoting equity is more than a moral obligation. It is both a practical and a strategic imperative, helping to break intergenerational cycles of disadvantage and thus, reducing the inequalities that undermine all societies." As of February 2013, 193 countries have ratified the United Nations Convention on the Rights of the Child (UNCRC) and the European Union (EU) has also ratified the Convention on the Rights of Persons with Disabilities (CRPD, 2006). These are the bases of UNICEF's all initiatives.

The year 2016 marked as the 10th anniversary of the adoption of the UNCRC and the CRPD, a remarkable progress has been noticed in advancing the rights of persons with disabilities in society in general and in education in particular. The spirit of the conventions, as the first comprehensive



*Perspective:  
Asia Pacific*

**A Collection of Essays Presented at  
Tenth Biennial International Conference on  
Online Platform, 2020**

Editor  
Sarvani Gooptu

**Indian Association for Asian & Pacific Studies  
Kolkata, 2022**



First Edition: 2022

***Published by***

47/2A Purna Chandra Mitra Lane,  
LP-177/6/2, Kolkata-700033  
Email- iaaps.iaaps@gmail.com

***In collaboration with***

Naya Udyog  
206 Bidhan Sarani, Kolkata 700 006  
Email - nayaudyog@yahoo.in

*Copyright @Indian Association for Asian & Pacific Studies*

*The views expressed in the papers are exclusively of the authors. The Editors and the publishers are in no way responsible for those.*

***Prepared & Design by: @Samaresh Guchhait***

ISBN: 978-81-89863-88-3

# **PERSPECTIVE: ASIA PACIFIC**

*A Collection of Essays Presented at  
Tenth Biennial International Conference on Online Platform, 2020*

Editor

**Sarvani Goptu**

**Indian Association for Asian & Pacific Studies  
Kolkata, 2022**

# CONTENTS

## Preface

### Address by Keynote Speaker

- Look East to Act East: Challenges and Opportunities in Contemporary India-South East Asia Relations  
by *Ambassador Rajiv Bhatia* 1-4

### SECTION I: THE USES OF THE PAST TO FOSTER CLOSER TIES: CULTURE AND SOFT POWER DIPLOMACY

- Looking at India's Look East: An Overview of Its Genesis  
by *Sharmistha Gupta Dutta* 7-15
- Maritime Trade and the Growth of Culture: Baliyatra and the Indian Cultural Imprints in Indonesia by *Sumit Kumar Bar* 16-22

### SECTION II: COLONIAL EXPERIENCES AND THEIR IMPACT ON CONTEMPORARY RELATIONS

- Exploring the Experiences of British Medical Intervention in India and Burma by *Binata Sarkar* 25-30
- Revisiting Maritime South-East Asian Literature through the Works of Himansu Bhusan Sarkar by *Debarati Ganguly* 31-43
- India- Asia Relation in the Colonial Era, India's Struggle for Independence in Asian Countries beyond the Frontiers of India: Impact on Future Relations by *Maitreyi Sengupta* 44-52
- The Cultural Interaction between India and South and South East Asia: Contribution of Rabindranath Tagore by *Nandita Basu Sarbadhikary* 53-65

### SECTION III: ECONOMIC TIES AND THE PROSPECT FOR GREATER TRADE INTERDEPENDENCE

- Oceans and the Internet: Revising the Economic Ties between India and Southeast Asia by *Soumya Bhowmick* 69-85
- Act East Policy, Connectivity and Prospects of Urbanisation in North-East India by *Mahalaya Chatterjee* 86-97

### SECTION IV: INDIA-SEA CONNECTIVITY UNDER BIMSTEC

- Analysing the Importance of BIMSTEC in Strengthening Sub -Regional Cooperation in South Asia by *Bhawna Pokbarna* 101-112
- Buddhist Tourism in Context of North-East India's Connectivity with Southeast Asia by *Shiladitya Basu* 113-121

### SECTION V: THE FOIP CONCEPT: THE INDO-PACIFIC STRATEGY COMPLEMENTARITIES AND DIVERGENCES

- Sea -Based Nuclear Deterrence in the Indo Pacific: Assessing the Indian and Chinese Stance by *Sohini Nayak* 125-137
- India and the ASEAN: The Logic of Partnership in the Indo-Pacific Region by *Sayantani Sen Majumdar* 138-150

### SECTION VI: SECURITY AND STRATEGIC TIES BETWEEN INDIA AND SOUTHEAST ASIA

- "The Bay of Bengal and Andaman Sea: India's 'Gateway' into Southeast Asia?" by *Sohini Bose* 153-166
- Engaging Myanmar: An Imperative to India's Look East/Act East Policy by *Somdatta Banerjee* 167-175
- India's Eastward Engagement from Look East to Act East: Where does Northeast India Stand? by *Biplab Debnath* 176-187

# Looking at India's Look East: An Overview of Its Genesis

By

Sharmistha Gupta Dutta \*

## Introduction

India started looking at her east with new vigour from 1991 through the launching of Look East Policy in i.e., looking to the East and Southeast Asian neighbours to consolidate ties of friendship and mutual understanding. The proclamation of India's Look East Policy generated great expectation that India's proximity to as well as her historical linkages with Southeast Asian nations would help in establishing strong cultural, social and economic ties with Southeast Asian people. The policy aims primarily at cementing greater ties with ASEAN particularly in economic field. A close scrutiny of India's Look East policy reveals that it is not simply meant to improve relations with Southeast Asia but there are numerous dimensions to it. It is a multi-faceted and multi-pronged approach to establish strategic links with many countries of Southeast Asia. It is also an attempt to create closer political links with ASEAN, and to develop strong economic bonds with the region. Besides, it also looks at craving a place for India in larger Asia-Pacific region. Moreover, Look East policy also means to work as a showcase for India's economic potential for investment, trade and exhibition of greater sensitivity towards a large number of smaller countries of Southeast Asia. It has thus developed into a multi-pronged strategy involving economic links, defense cooperation and political relations and to evolve institutional mechanisms both at multilateral and bilateral levels.<sup>1</sup>

However, the origin of this policy can be traced to India's liberal trend in her culture and heritage dating as far back as the period preceding the Christian era. The attempt of consolidating India's friendship with Southeast Asian countries has a strong cultural affinity with the latter. This paper aims at focusing the philosophical and cultural foundation of India that created a strong bonding between India and

---

\* Assistant Professor of Philosophy, Polba Mahavidyalaya, Hooghly

## Editorial Board

Lipi Ghosh, *Centenary Professor in International Relations, University of Calcutta*  
Sarvani Gooptu, *Professor in Asian Literary and Cultural Studies, Netaji Institute  
for Asian Studies, Kolkata*

Anasua Basu Ray Chaudhury, *Senior Fellow, Neighborhood Studies and Editor,  
ORF, Bangla, Observer Research Foundation, Kolkata chapter*

Susmita Mukherjee, *Associate Professor and Head of the Department of History,  
Syamaprasad College, Kolkata*

Suchandra Ghosh, *Professor, Department of History, School of Social Sciences,  
University of Hyderabad*

## Executive Committee Indian Association for Asian and Pacific Studies 2020-2023

Partha S. Ghosh, *President*

Lipi Ghosh, *Vice President*

Sarvani Gooptu, *Secretary*

Anasua Basu Ray Chaudhury, *Treasurer*

Nandini Bhattacharya, *Jt Secretary*

Suchandra Ghosh, *Regional Secretary- Telengana*

Chandan Sharma, *Regional Secretary-Assam*

Achintya Datta, *Member*

Susmita Mukherjee, *Member*

Rajat Kanti Sur, *Member*

Sutirtha Bedajna, *Member*

Shiladitya Basu, *Member*

her Southeast Asian neighbours. It would also look at the circumstances leading to the launching of the Look east policy.

The ties of friendship between the two regions of Asia were maintained through the centuries. Though India was almost isolated from its neighbouring friends for a long time during the colonial rule, the historic bonds between the Indians and Southeast Asian people did not break. Even during this phase, Indians attempted to bring the East closer to India and the most successful attempt was made by the great poet Rabindranath Tagore who toured to Southeast Asian countries for more than three months in 1927 with a view to reinforcing the cultural ties with the region.<sup>2</sup>

### Cultural Connection and Assimilation

From time immemorial, India has a history of economic connection with the region through trade and commerce. But there soon followed a link of more permanent nature ----- cultural connection. India developed a close commercial and thereby cultural connection with Southeast Asian people and left her cultural imprints on Southeast Asian society and culture. Though much before the coming of Indian influence Southeast Asian peoples developed a society and culture of their own, Indian culture and civilization was found to be attractive and acceptable to them.<sup>3</sup> There took place the diffusion of Indian culture in Southeast Asia. This might have preceded by commercial connection. But it is the humanistic philosophy of Indian culture that led the Indians to diffuse their cultural heritage to their neighbours with a view to spreading the idea of friendship and humanism.

India's culture reached Southeast Asia through the hands of the Brahmins who mastered the knowledge of the Shastras. They had monopolized the knowledge of sacred lore, the rites, rituals, customs and laws, and brought them to Southeast Asia when visited this region at the invitation of the rulers cum traders to serve as priests, astrologers or advisors. The Brahmins introduced Indian court customs, theory of monarchy, administrative organization on Indian patterns, laws based on Manu's code, Indian epics, the *Ramayana* and the *Mahabharata* and also other works on a variety of subjects such as philosophy, medicine, mathematics and religious lore. Brahmins came rather from the courts of early kingdoms like that of the Pallavas, whose rulers had only recently been able to establish their authority and 'domesticate' their people with the help of invited Brahmins and thus were able to successfully solve similar problems which their emerging colleagues in South-East Asia were still facing. Indian's culture did not reach Southeast Asia through an act of 'transplantation', but through a 'complicated network of religions' between partners of mutual 'processes of civilization' which comprised both side of the Bay of Bengal.<sup>4</sup> This led to the spread of Indian culture and civilization in Southeast Asian

A graphic of a scroll with a dark border and a light interior. The scroll is unrolled in the center, with the ends of the scroll curling upwards. The text is centered on the unrolled portion.

**SECTION I**

**THE USES OF THE PAST TO FOSTER  
CLOSER TIES: CULTURE AND  
SOFT POWER DIPLOMACY**



region and the period of diffusion lasted from about the beginning of the first till the end of the twelfth century. <sup>5</sup>This had created the foundation of India's friendship with her Southeast Asian people and that still survives. India is still welcomed by them because of this cultural basis.

Indian influence in Southeast Asia cannot be looked in the light of India's political desire. India accommodated diverse elements of foreign cultures that entered the subcontinent in ancient times, and led the foundation of a culture centered in a sense of oneness. Needless to say, India successfully established bonds of relationship with foreigners and turned them into friends. India unhesitatingly entered into the minds and lives of others and assimilated elements from outside. It is with this mission that king Asoka sent his emissary to Southeast Asia. India has had a long history and rich heritage of relations with the other countries of Asia. Streams of culture have not only entered into India from the east and the west but also flowed from India to distant parts of Asia. <sup>6</sup> India's cultural impact on Southeast Asia was really very impressive.

Nevertheless, the wealth and strength of foreign cultures present in Southeast Asia should not lead one to suppose that the people of the region have failed to evolve a cultural identity of their own. By the time that the first foreign influences started making themselves felt in the early years of the Christian era, the people of Southeast Asia had developed a distinctive way of life which was common to the region as a whole. It has been explained that this was characterized by wet-rice (*swah*) cultivation, the domestication of the ox and the buffalo, the elementary use of metals (bronze and iron), the possession of navigational skills, matriarchy and the high social status of woman, and a complex of beliefs which embraced animism, ancestor worship and reverence for high places. <sup>7</sup>This Southeast Asian way of life provided the basis on which the kingdoms and empires of the future were built up. As the people of the region made contact with cultures from outside, they acquired new knowledge and new techniques. But there is nothing to suggest that region underwent political subjugation or that their culture became drowned by outside influences. To the contrary, the social organization of the region absorbed these influences and moulded them to its own purpose. <sup>8</sup>

### **Buddhism and Southeast Asia**

Buddhism gives the idea of exploring the potential of an individual for realizing perfection towards the goal of attaining enlightenment. This philosophical virtue contributed to the foundation of democratic culture in many Asian societies. The core of ethics of Buddhism, which stress on the nature of interdependence and interconnection, allowed every society to absorb changes and reform itself, including that at the political level. This value drew Asian societies towards adaptation and

# PREFACE

Indian Association for Asian & Pacific Studies (IAAPS) was born in 1998 and was registered in the year 2000 with a group of Indian social scientists to develop Asia-Pacific Studies. The Association has completed twenty four years of academic journey and under the dynamic leadership of our Founder Secretary and presently Vice President, Professor Lipi Ghosh, has made its mark as one of the major non-profit, non-governmental organization of India, striving to work for Asian and Pacific interaction.

Our President Prof. Partha S. Ghosh has been a pillar of strength for IAAPS for many years and continues to guide us forward. We remember with love and respect two of our active members who we lost in the past years- our former Vice President and mentor Professor Purushottam Bhattacharya in 2020 and our long term associate and joint Secretary Dr. Rajasri Basu in 2015. Despite losses we have drawn strength from each other in the difficult pandemic situation to work as a team to further the academic growth of our organization. We had grand plans to celebrate the tenth Biennial in Bangkok in 2020 but the worldwide pandemic restrictions had put an end to our plans. We therefore, decided to hold the tenth biennial in the online mode. Professor Lipi Ghosh invited our previous keynote speakers to send in video/audio/written messages for our organisation and we put them together for our members.

This Association promotes research and understanding of different regions of Asia and Pacific in its cultural, social, political and economic scenario. It works as a forum for scholars of Asian and Pacific studies to carry out social science oriented studies as well as present their works to the public in forms of lectures, panel discussions, seminars, symposia and conferences. The research undertaken by the members of the Association rests on both primary research topics and policy oriented issues. Thus the organization basically stimulates interdisciplinary research and engages in study of issues such as social and cultural patterns, gender and disadvantaged groups, political developments, economy, trade and investments, science- technology etc.

*Perspective: Asia-Pacific* ISBN no: 978-81-89863-88-3 is a collection of the some of the essays presented at the Biennial Conference held two years back in 2020 on the online platform. Like previous years, we have accepted only those papers which have been passed by a rigorous peer review process.

cooperation, still driving them towards accepting a cooperative culture. Buddhism and democracy have thus found compatibility on the Asian scene for the people to live in an atmosphere of harmony and equality. Diversity of Asian value systems today reflects how the culture of inclusiveness and tolerance has protected Asian cohesion and various turns of History. <sup>9</sup>

The Buddhist emphasis on the need for the consensus also influenced Asian societies. The *Vinaya* rules for monastic community infused a culture of democratic traditions. More importantly, Buddhist virtues provide individuals the greatest opportunity to realize their potential and cultivate a sense of universal responsibility. Buddhism allowed people to positively react to modernity and change. A majority of Asian societies and nations, including Japan, India, and China have accepted modernity without completely emulating western value systems. They have accepted basic western values as well as economic and technological skills and other necessary modern requirements within the realm of their traditional culture and values. <sup>10</sup>

Buddhism provided the idea of the infusion of non-conflicting Philosophic traditions. Buddhist principles allowed societies and nations to seek transformation without being involved in conflict. In fact, this tradition is the foundation of democracy in Asia. The long experience achieved through Buddhist traditions ultimately created an atmosphere of peace in Asia. Since Buddhism is a liberal religion, it created a space for flexibility allowing one to think beyond fixed ideas to seek actions for consequences and changes. It provided the template for people to realize the need for transforming self and societies irrespective of race, nationality, or gender.

Many Asian societies have internalized Buddhist principles without having to adapt a Buddhist identity. The tradition of *Sufism*, for example, is a product of the long drawn intensive interface between Buddhism and Islam. That skill has a tremendous capacity to entail positive influence on a large section of humanity, especially when Islam is currently passing through a critical phase. <sup>11</sup>

Undeniably, numerous traits of Buddhist connectivity continue to manifest in the popular realm of Asian cultural, spiritual, social, and economic lives. Clearly, there is a great deal to learn from Asian experiences of tolerant culture to make it more relevant to our future lives. They are relevant now against the backdrop of the emerging pattern of disputes and conflicts in various global threats as demonstrated by terrorism and sectarian violence. <sup>12</sup>

is multidimensional; it is better today than in the past but, at the same time, it is still at the sub-optimal level. This is why the conference organizers want us to discuss opportunities and challenges. We should look at this perspective and try to come up with tangible, concrete ideas that further strengthen this relationship.

Honestly speaking, when we address students, media, civil society, and government, this is the question uppermost in their minds: if we have such a rich history and we are not yet satisfied with the present level of the relationship, then where is it lacking, and how can we raise the level, the range, the scope, and the impact of India's relationship with Southeast Asia?

My third point, dear friends, is that for this task to be performed satisfactorily both the micro and the macro outlooks will have to be adopted. It is indispensable, and it is in this context, I come to the heart of my presentation.

Developments in the past year from November 2019 to the end of 2020 have been of exceptional significance. These are: (i) India's decision to exit from the negotiations for the Regional Comprehensive Economic Partnership (RCEP), which has caused deep disappointment in Southeast Asia; (ii) China's aggressive behaviour; (iii) rising geopolitical tensions in the Indo-Pacific region with a noticeable strain in the US-China equation; and (iv) the impact of COVID-19. I believe these four developments have introduced new dynamics in India-Southeast Asia relations. Can we see that a new phase is beginning or has begun? In this latest phase, India's Act East policy is turning into what may be described as India's Indo-Pacific policy. We will need to examine the emerging implications and likely repercussions. We will need to explore them carefully. Should this trend hold in the coming months and years, then how do we pursue our earlier aim to strengthen the India-ASEAN partnership? If the region of interest to India is bigger than Southeast Asia and if, in fact, it stretches from the eastern shores of Africa to the western shores of the Americas, will then the 'centrality of ASEAN' remain valid? This is a critical issue; we must examine it with a fresh perspective rather than adhering to what we have been reading and hearing because what we are reading and hearing may be based on a somewhat dated perception and dated knowledge.

Fourth, when we look at the relationship between India and Southeast Asia, we should factor in the vital importance of India's Northeast. I think this is a major takeaway for our generation, especially in the past two decades when the Northeast has come to occupy an almost central position in our ties with a part of Southeast Asia, comprising the Indo-China sub-region and Thailand. I am happy to note that several scholars are going to discuss this subject. Another facet is the growing strategic, political, and economic importance of the Andaman and Nicobar Islands and the emerging concept of the Bay of Bengal Community (BOBC). This incipient entity may take care of the security dimension, but it will largely focus on the

### Cultural Connectivity with South-East Asia in the Twentieth Century: Role of Rabindranath Tagore

The ties of friendship and mutual understanding between India and Southeast Asia were maintained through the centuries. Medieval and modern periods witnessed the further intensification of this relationship with the multiplication of trading activities, import and export of goods between India and Southeast Asian countries. In the medieval period, commercial connections were maintained through the sea route with Malay Peninsula. Detailed evidence of commercial and cultural interaction is available from contemporary books and travelogues. Under the Mughals, interaction through river and sea route was facilitated through the active and prosperous ports. Though for a long time during the colonial rule India was almost isolated from her Southeast Asian friends, the historic bonds between the Indians and the Southeast Asian peoples did not break. Even during this phase Indians continued to attach significance to the East and tried to bring the East closer to India.

The friendship was revived by the historic tour of Rabindranath Tagore who visited many mainland and maritime countries of South-East Asia in 1927. Tagore's theory of civilization, his ideas of the East and West and his theory of cultural encounter in the context of Southeast Asia, also provides an in-depth analysis of his philosophy, i.e. his concepts of nationalism, internationalism and universalism. Rabindranath's visit to Southeast Asian states led to the establishment of cultural bonds between the two regions over the years and finally resulted in a kind of permanent cultural exchange and bond between them. There were three qualities about the Burmese that Tagore carried back with him. The Burmese practised the tolerance, peace and tranquility provided by Theravada Buddhism. Tagore was impressed by the absence of extremism in their practice of Buddhism, with no prohibition against taking meat, tolerance of other religious and universal freedom of thought. The Burmese believe that salvation will come only through the freedom to think and decide for oneself as shown by the Buddha in his famous Kalama Sermon. Tagore had always been captivated by the manner in which religious like Hinduism and Buddhism, having emanated from India, had merged with local, indigenous earlier beliefs and absorbed them smoothly into new variations of these ancient Indian religious philosophies. He observed, while visiting Burma, how the local indigenous culture had been blended with Hinduism and Buddhism transplanted from his homeland. Tagore's love for his motherland, his Hinduism, his plea for free knowledge, his love of truth and unity, his respect for reason and tolerance and his belief in 'ever-widening thought and action', all found fertile, receptive minds amongst the young Burmese intellectual writers.<sup>13</sup>

## Genesis of the Look East Policy

Northeast India, currently consisting of eight states (Assam, Manipur, Nagaland, Mizoram, Meghalaya, Tripura, Arunachal Pradesh and Sikkim) appeared to be a neglected and insignificant area during the colonial rule because unlike the north-west frontier it was never in the past a gateway of invasions into the heartland of India. India after independence however became vigilant on her north-east keeping in view of the Chinese threat and the region acquired a military importance in the 1950s and 1960s. <sup>14</sup>During the cold war years, New Delhi's lack of any definite North East India policy made this region totally isolated in its economic and foreign policy domain. Rather there was created new barriers to the free movement of the region's people, who historically have interacted with China, Southeast Asia and the Indian core, and in turn influenced their respective cultural traditions. Under such circumstances, their prolonged discontent combined with neglect and under-development burst into political unrest and movement for autonomy, resulting in the creation of some new union territories and the states (Nagaland, Mizoram, Arunachal Pradesh and Meghalaya) in the 1970s and 1980s.

However, India was to bring the people of this region within the fold of Indian society and economy. Therefore, she started contemplating over the situation and felt it imperative to make this region an integral part of India. The principal way to do so was to create more economic opportunities and to further economic activities in this region so that bulk of the people here could be involved in trade, commerce and other related economic activities. The best way that was considered to do so was to establish links between this region and India's neighbours adjacent to it. Thereafter, the Government of India gradually looked towards the northeast region of India as a gateway to strengthen her politico-economic and cultural connectivity with the Southeast Asian countries and the ASEAN. In other words, this region was found to be an important one for pursuing what is known as the Look East Policy (LEP) of India from the 1990s, i.e., an outward looking India to improve connectivity with Southeast Asian nations. <sup>15</sup>

Besides being rich in natural resources, this region was thought to be an important zone for international trade. More importantly, the region is strategically very important because of sharing enormous international border with countries like China, Myanmar, Bhutan and Bangladesh. At the international level, the fall of the Soviet Union seemed to have been a huge blow for India at the economic, security and political levels. Other factors like the Gulf crisis, non-alignment becoming an obsolete policy, the growing Chinese influence in Southeast Asia, a trend towards regionalization and the economic success of Southeast Asian and East Asian nations compelled India to engage these countries under the rubric of the LEP. At the same time, Shukla Commission (1996) recommended transforming the

northeast through infrastructure development and to bring this region within the purview of LEP. <sup>16</sup>The post cold war period has created a congenial environment for India to consolidate connection with the Southeast Asian countries. The ASEAN countries, on the other hand, also started realizing India's potentialities in shaping the future political and security environment in Asia. Moreover, the economic liberalization initiated by the then Government of India has paved the way for adopting a new economic diplomacy. This new encouraging environment gave birth to the LEP to facilitate India to foster closer economic ties with its South and Southeast Asian neighbours with emphasis on renewing political and economic contacts with the Asian Nations. Consequently, India became a Full Dialogue Partner of the ASEAN in the fifth Summit at Bangkok in December 1995 and in 1996 became the Member of ASEAN Regional Forum (ARF) which deals with strategic and political issues in the Asia Pacific region. <sup>17</sup>

However, the government underscored that India could not enter the Southeast Asian market without the development of the infrastructure of the north-eastern states. While emphasizing regional integration, reform and liberalisation of India, the LEP also stressed on rapid economic growth and development of the north-eastern region of India. Therefore, engaging the northeast of India in the process of various connectivity projects and regional and sub-regional cooperative initiatives became one of the important features of India's LEP. Sub-regional organizations, such as Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Economic Cooperation (BIMSTEC) and Bangladesh, China, India and Myanmar Economic Corridor (BCIM-EC) Forum emerged. Thus India's northeast was seen as 'gateways of opportunities of international trade and commerce'.<sup>18</sup>

Besides border trade, educational, medical and tourism facilities of the northeast region were also considered to be opened to the needs and expectations of Southeast Asia. Encouraging such ventures will provide ample opportunities for northeast India as a stakeholder to the booming economic and conjoined activities of Southeast and East Asia.

Surprisingly, India's northeast still witnesses the symptoms of underdevelopment and the syndromes of civil unrest. New attempts are therefore undertaken to tackle the situation. The proposed Asian Highway is found to be an attempt to develop the region by opening it up to the global order. This trans-border road connectivity is expected to play an important role in the economic development of the region through cheaper transportation of goods and people, increased exports, industrial development, development of tourism sector, employment generation, etc.

However, the suspicion grows that the absence of industrial infrastructure and industrialization in the region may reduce India's northeast to a mere transit point of human and commercial traffics. Besides, unless the insurgency problem in

the region is tackled effectively and peace and tranquility are ensured, mere construction of a trans-national highway will not facilitate the flow of expected benefits. Of the possible negative effects, mention may be made of the possibilities of increase in drug and small arms trafficking due to quick and easy movement of people because of the Asian Highway.<sup>19</sup> It is also questioned that in the absence of local entrepreneurs, people from other parts of the country will capture the benefits that would emerge from the Asian Highway. The Asian Highway project may also lead to haphazard urbanization in the region, which may be problematic. The government has to be careful of these possible threats and should plan beforehand how to tackle them if they appear.

To conclude, India's rich cultural heritage can ring many sympathetic cords in the region and its multi-religious, secular and its democratic ethos, as well as rich music, arts and architecture, theatre and cinema have huge responsive constituencies in all the near and extended eastern neighbours. In fact Bollywood (Cinema) and cultural exchanges, like that of the Ramayana troupes can work wonders in pursuing cultural diplomacy. Bollywood's presence is extensively evident in Southeast Asian Countries, but that is mostly commercially motivated and privately provided without only systematic and planned encouragement from the state. These areas have no conflicting edges. A carefully planned and sustained cultural diplomacy can speed up economic engagement and yield impressive results in field of people to people relations and mutual political understanding. Indian culture and civilization as a whole was accommodative and absorptive in nature. It hardly came into conflict with people of different culture and religion. This is still reflected in its attempt to maintain even diplomatic relation.

This cultural diplomacy can also be backed up by promoting cooperation in the field of education, science and technology, where India has notable assets and strengths. In many Southeast Asian countries, Indian diplomacy has not adequately reached educational and cultural establishments and ignored mobilising civil societies in pursuance of India's perceived interests. It is hoped that the projects like the revival of Nalanda University in collaboration with East Asian countries, for which Indian parliament adopted a Bill in August 2010, will fill some of this gap. Educational links can provide a lasting and powerful stimulus to regional cooperation and integration.

### Notes and References

<sup>1</sup> For details, see Manmohini Kaul, 'Reflections on India's Relations with ASEAN: From the Look East Policy to the Act East Policy' in Achintya Kumar Dutta and Anasua Basu Ray Chaudhury eds., *Connecting Nations: Politico-cultural Mapping of India and South East Asia*, (Delhi: Primus Books, 2019), pp. 53-69 (hereafter as *Connecting Nations*); Tridib Chakraborti, 'India's 'Look East' Policy in the new Global Promenade: the Effective-Ineffective Stock Taking and



the Boulevard ahead', in Achintya Kumar Dutta and Anasua Basu Ray Chaudhury eds., *Connecting Nations*, pp. 90-112; Rajen Sing Laishram, 'India's 'Look East' Policy: The Imperatives of Overland Connectivity' in Achintya Kumar Dutta and Anasua Basu Ray Chaudhury eds., *Connecting Nations*, pp. 158-179.

<sup>2</sup> For details, see Lipi Ghosh ed., *Rabindranath Tagore in Southeast Asia: Culture, Connectivity and Bridge Making*, (New Delhi: Primus, 2016), pp. 1-20.

<sup>3</sup> For details, see Achintya Kumar Dutta and Anasua Basu Ray Chaudhury, Introduction in Achintya Kumar Dutta and Anasua Basu Ray Chaudhury (eds.), *Connecting Nations: Politico-cultural Mapping of India and South East Asia*, (Delhi: Primus Books, 2019), pp. 1-25.

<sup>4</sup> Hermann Kulke, 'The Concept of Cultural Convergence Revisited: Reflections on India's Early Influence in Southeast Asia' in Upinder Singh and Parul P. Dhar (ed.) : *Asian Encounters: exploring connected histories*, (New Delhi: Oxford university press, 2014), pp. 3-19.

<sup>5</sup> D J M Tate, *The Making of Southeast Asia*, vol. I: The European Conquest, (Kuala Lumpur: OUP, 1971), p. 10.

<sup>6</sup> Achintya Kumar Dutta and Anasua Basu Roychaudhury, Introduction, in Achintya Kumar Dutta and Anasua Basu Roychaudhury (eds.), *Connecting Nations*, pp. 1-25

<sup>7</sup> D J M Tate, *The Making of Modern South-East Asia*, vol. I: The European Conquest, Kuala Lumpur, OUP, 1971 (revised edition), p.8.

<sup>8</sup> Ibid, p.8.

<sup>9</sup> P Stobdan, 'Asia's Buddhist Connectivity and India's Role, <http://idsa.in>asia - Buddhist - connectivity - and --india's-role>, date of access 20/03/2020.

<sup>10</sup> Ibid.

<sup>11</sup> Ibid.

<sup>12</sup> 'Asia's Buddhist Connectivity and India's Role, <http://idsa.in>asia - Buddhist - connectivity - and --india's-role>, date of access 20/03/2020.

<sup>13</sup> Lipi Ghosh (ed.), *Rabindranath Tagore in South-East Asia*, p. 6

<sup>14</sup> D P Choudhury, *The North-east Frontier of India 1865-1914*, Calcutta: The Asiatic Society, rept, 2010. p. xi.

<sup>15</sup> For details of the Look East Policy, see S D Muni, 'India's Look East Policy: Te Strategic Dimension', *ISAS Working Paper*, No. 121, 1 February 2011, Institute of South Asian Studies, national University of Singapore, pp. 1-25, date of access 08/05/2019, <http://www.files.ethz.ch/.../ISAS>.

<sup>16</sup> Anasua Basu Ray Chaudhury, 'Connectivity and Subregional Cooperation in the East of South Asia: Importance of India's North-East Revisited' in Achintya Kumar Dutta and Anasua Basu Ray Chaudhury eds., *Connecting Nations*, pp. 158-9.

<sup>17</sup> Jatindra Nath Saikia, 'Trade Relationship between Thailand and the North-Eastern Region of India with Special Reference to the Look West Policy of Thailand and the Look East Policy of India' in Achintya Kumar Dutta and Anasua Basu Ray Chaudhury eds., *Connecting Nations*, pp. 113-30.

<sup>18</sup> Ibid.

<sup>19</sup> Anasua Basu Ray Chaudhury, 'Connectivity and Subregional Cooperation in the East of South Asia, pp. 158-9).

# IMPORTANCE OF ETHICS IN EVERYDAY LIFE



Proceedings of the National-level  
Seminar held on 31-03-2023.



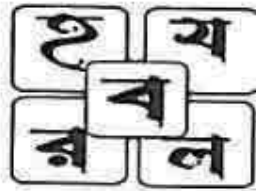
Organized by the Department of Philosophy in  
Collaboration with IQAC, Nistarini College,  
Purulia, W.B. - 723101

Edited by Asma Parbhin Khatun

One day National Level Seminar on  
Importance of Ethics in Everyday Life  
held on 31/03/2023

Organized by the Department of Philosophy in  
Collaboration with IQAC, Nistarini College,  
Purulia, WB-723101

Edited by Asma Parbhin Khatun  
Assistant Professor, Nistarini College, Purulia



হ য ব র ল প্রকাশনী  
বেলেঘাটা, কোলকাতা - ৮৫  
hazabarala.prakashani@gmail.com

নৈতিকতার আন্দোলকে 'ছড়িমুহুরা': পিত্তসম্বন্ধী পরিচয়না	Gouri Ghosh	208
Epicurus -এর নৃগীতে সুখী জীবনের চর্চিতাধি	সামকনী ভট্টাচার্য	220
নাট্যবন্দী প্রেক্ষাপট ও একটি নিকর বিশ্ব	Poulomi Chakraborty	230
গাফীতীর অহিংস নীতিকত্ব সত্ত্বে কতটা গ্রহণযোগ্য?	প্রতিমা চক্ৰী	250
তত্ত্বমুহুরা: একটি নৈতিক পর্যালোচনা	Jamiunnessa khatun	255
বেশে খণ্ডিত নৈতিকতা এবং আধুনিক সমাজ	সুচন্দা হুমাভী	264
পরিবেশ নৈতিকতায় সচেতনতার ক্রমবিকাশ ও উত্তরণ	সঞ্জীব রুইদাস	275
মনুসংহিতায় গৃহীত অপরাধ ও শাস্তির বর্তমান গ্রহণযোগ্যতা	Sabina Yasmin	285
নিউনিসের নৈতিকতা	বরুণ বসু	293
শ্রীমদ্ভগবত গীতা অবলম্বনে কর্তব্যের ধারণা	চুসি মিত্রী	305

One day National Level Seminar on  
Importance of Ethics in Everyday Life  
held on 31/03/2023

Organized by the Department of Philosophy in  
Collaboration with IQAC, Nistarini College,  
Purulia, WB-723101

Edited by Asma Parbhin Khatun  
Assistant Professor, Nistarini College, Purulia



হযবরল প্রকাশনী  
বেলেঘাটা, কোলকাতা - ৮৫  
hazarala.prakashani@gmail.com

### গার্হীযীর অহিন্দো নীতিকত্ব বাতবে কতটা গ্ৰহণযোগ্য?

শ্রীমতী জলী

আমার এই প্রবন্ধ রচনা করে আমার মূল লক্ষ্য থাকবে গার্হীযী অহিন্দো বলতে কি বুঝিয়ে দেওয়া অর্থাৎ অহিন্দোর স্বরূপ বিষয়ক আলোচনা এখানে করা হবে। যা করতে গিয়ে আমরা এটা লক্ষ্য করব যে তার অহিন্দো বিধকে যে আলোচনা বসে লাগবে কতটা গ্ৰহণযোগ্য? গার্হীযীর মধ্যে বীজনে যদি আমরা পর্যবেক্ষণ করি তাহলে দেখতে পাবো তিনি তার চিত্র আকর্ষণ সত্তা এবং অহিন্দো এক অশব্দ অ্যানশের দ্বারা প্রতিফলন হয়েছে। তিনি সত্তা এবং অহিন্দোকে দুটি পৃথক সত্তা বলে স্বীকার করেননি। বরং তার মধ্যে সত্তা অহিন্দোর মধ্যে অন্তর্ভুক্ত। তিনি অহিন্দোকে উপস্থ এবং সত্তাকে লক্ষ্য বলে স্বীকার করেছেন। অহিন্দোকে তিনি সত্তা কর্তব্য বলে স্বীকার করেছেন। কর্তব্যকে আমরা যদি সঠিকভাবে শাসনা করতে পারি তাহলে নিশ্চিতভাবে আমরা লক্ষ্য পৌঁছতে পারবো।

গার্হীযী অহিন্দো বলতে যিক কি বুঝিয়েছেন প্রথমেই তা বোঝা দরকার। কারণ গার্হীযী অহিন্দো শব্দটিকে দুটি অর্থে গ্রহণ করেছেন একটি অহিন্দোর সন্ন্যাসিক নিক অন্যটি অহিন্দোর মর্শক নিক। সন্ন্যাসন অর্থে অহিন্দো শব্দটিকে হিন্দোর বিপরীত অর্থে গ্রহণ করা হয়। হিন্দো শব্দের অর্থ হয় যা মন্ত্রণার উৎপত্তি করে যা ক্রোধবশত বা সার্বপরিভা বসত জীবনকে হস্তাক করে। এইগুলি থেকে বিবর্তি থাকতেই অহিন্দো বলা হয়। সামাজিকভাবে অহিন্দো বলতে বোঝায় সন্ন্যাসিক হওয়া না করা। স্নেহের অর্থে বোধায় কাজকে আঘাত না করাতে। গার্হীযীর মর্শক নিক নিয়ে অহিন্দো শব্দটিকে মেজাবে জ্ঞান্য করেছেন তার মাঝে আমরা জৈন মর্শনের কিছুটা মিল লক্ষ্য করি। মিলটা বোধায় তা আমরা তখন জৈন মর্শনে অহিন্দো বলতে কি বোঝানো হয়েছে তার ব্যাখ্যার প্রয়োজন। জৈন মর্শনে অহিন্দো বলতে বোঝানো হয় চিত্রাণ, স্বাকো, ক্রিয়ায় হিন্দো না করা জৈন মর্শনে এটাও স্বীকার করা হয়েছে যে স্বাকি কেবল নিজে হিন্দো

করবে না তাই না। সে নিজে পরোক্ষ বা প্রত্যক্ষ কোনভাবেই হিন্দো কারণ হবে না। কোনভাবেই হিন্দোকে সমর্শনও করবে না ও প্রহৃতও মেনে না। গার্হীযী জৈন মর্শনে অহিন্দো বিষয়ক অধ্যয়নে এই নিষ্ঠা কে স্বীকার করেছেন। তার মধ্যে পরোক্ষ বা প্রত্যক্ষ কোনভাবেই হিন্দো করা হবে না। কিন্তু তিনি এটাও বলেছেন যে জৈনরা বড়ই কঠোরভাবে অহিন্দোর মর্শক দিকের কথা বলেছেন ততটা কঠোরভাবে স্বাকি গ্রীণে অহিন্দোর নীতিকো মেনে চলা সম্ভব নয়। তিনি বলেছেন সব ক্ষেত্রে হিন্দোকে এড়িয়ে যাওয়া সম্ভব না। কারণ কিছু কিছু ক্ষেত্রে যেমন খাদ্য গ্রহণের ক্ষেত্রে, জলপানের ক্ষেত্রে, খাল প্রস্থান গ্রহণের ক্ষেত্রে বা হাটা মৃদার ক্ষেত্রে আমরা দেখতে আচ্ছন্ন না করে নিজেই থেকে রক্ষা করা সম্ভব না।

গার্হীযীর অহিন্দো বিষয়ক যে সন্ন্যাসিক ধারণা তা অনেক বেশি গভীর। স্বাকি সন্ন্যাসিক নিক নিজে অহিন্দো হল কারণে। জলোৎসনা বলে এমন এক বিশেষ অনুষ্ঠিত যা আমাদের সকলের এক সূত্রে পরিচিত করতে পারে। কারণে স্বাকি অনুষ্ঠিত হয় সেই স্বাকি তার জলোৎসনার বহুর সূত্রে নিজেকে এক করতে পারে। অহিন্দোর জন্য প্রয়োজন হল এমন এক স্বাকি মানসিকতার যোগানে স্নেহ, মুখ, প্রতিশ্রুতি এইগুলি কোন কিছুই থাকবে না। কারণ এগুলি জলোৎসনার পথে খদ্য সূত্রী করে। গার্হীযীর মধ্যে অহিন্দো হল জলোৎসনার এমন এক সন্ন্যাসিক তপ যা অস্বাভাবিক জ্ঞান আননা করে। কিন্তু তার মধ্যে এই না যে অস্বাভাবিক জ্ঞান কার্যকে সমর্শন করবে বা অন্যভাবে প্রভা দেবে।

গার্হীযী অহিন্দোর দুটি মূলের কথা স্বীকার করেছেন। একটি হল মানবীয় তপ এবং দ্বিতীয়টি হল সংগ্রাম বৌধা। মানবীয় তপ মিলেবে অহিন্দোর দুটি দিকের কথা স্বীকার করেছেন একটি হল জৈনিক জীবনের বিলাশ এবং অন্যটি হলো মনুষ্যের বিলাশ। সংগ্রামে মনুষ্য একা একা থাকতে পারে না সমগ্র তা থাকলে মনুষ্য তার নিজের অস্তিত্ব বজায় রাখতেও পারে না তাই সমগ্রের অস্তিত্ব বজায় আনা সকল মানুষকে অহিন্দোর নীতি মেনে চলতেই হবে।

সামান্য কৌশল হিসেবে অহিংসার কার্যকারিতা অনেক বেশি হিংসার দ্বারা সনস্কার সনান্দন জেনে আসলেই হয়নি হিংসাকে যারা সাধারণের হাতিয়ার হিসেবে ব্যবহার করেছে তারা মুক্ত শারীরিক নিষ্ক থেকে নরম। দুর্বল মানুষের পক্ষে হিংসাকে হাতিয়ার বলা কখনোই সম্ভব নয়। কারণ অহিংসার হিংসা তখন ব্যাপক আনতে পারবে যখন অহিংস হবে ধ্যানসম্মত এবং যারা অহিংস কখনোই অন্য সংগঠনিকভাবে শক্তিশালী তাই অহিংস হলে এক স্টেট কৌশল গাঙ্গীতি কিন্তু অহিংসকে নিষ্ক্রিয় আধ্যাত্মিকতা বলাসহি তিন বয়সে অহিংসা হল এক সক্রিয় শক্তি যা শক্তির শিথিলে মুক্তকে বহন করে। শক্তির শিথিলে বলাতে কিন্তু সর্বপ্রথম অহিংসকেই বুঝিয়েছেন।

অহিংস কৌশল হিসেবে গাঙ্গীতি সত্যসত্তা থেকে বুঝিয়েছেন। তার মতে সত্যের প্রতি অর্নাম অংশেবাসা আর সত্য পথে চলাই সত্যসত্তা। "বিশ্ব যন্ত্রণা" যথেষ্ট তিনি বলেছেন সত্যসত্তা হলো তাই যেখানে যুক্তি কতিয়তভাবে কষ্ট স্বীকার করে অধিকার অর্জন করবে যা সশস্ত্র প্রতিরোধের বিপরীত।

একজন সত্যসত্তা নিজেই নিজের অস্ত্র। সত্যসত্তা হলো একটি সর্বময় অস্ত্র। কারণ সত্যসত্তার জন্য দরকার সাহস। নৈতিক শক্তি প্রয়োগকারীর সেই সাহস লেই। কারণ কাউকে আঘাত করতে যতটা সাহসের না দরকার হয় তার থেকে বেশি সাহসের দরকার হয় নিজের আঘাত হতে। গাঙ্গীতির মতে ঐহিকতার দুর্বল পক্ষে যেমন সত্যসত্তাই হতে পারে ঠিক তেমনি ঐহিকতাও সত্যসত্তাই হতে পারে তার জন্য কোন কৌশল এর দরকার হয় না। দরকার হয় কেবল মনকে বশে আনার।

গাঙ্গীতী সত্যসত্তার অর্থশ্য পালনীয়া ভারটি অংগের কথা স্বীকার করেছেন স্টেটলি হল ১. ব্রহ্মচর্য পালন সঙ্গতে হলে। ২. লস্কিম গ্রহণ করতে হলে। ৩. জপসীন হতে হবে। ৪. সব সময় সত্য পালন করতে হবে। নৈতিকতা ছাড়া সত্যসত্তা মেনে চলা সম্ভব নয়। সত্যসত্তাইকে সব রকম অবস্থাতেই নিজীক হতে হবে। কঠিন বলে সত্য পালনের প্রত্যয় করেন চন্দ্রনাথ না। সামনে যখন বিপদ এসে পড়বে তখন তা সত্য করার মতো ক্ষমতা মানুষকে স্বয়ং নিয়োজন লেই। ক্ষমতাকে কাজে লাগাতে হবে। পরামর্শ

কিভাবে অর্জিত হবে এই প্রশ্নে গাঙ্গীতি বলেছেন সত্যসত্তা, অনন্যযোগের কৌশলসমূহ অহিংস নীতি সমাজের দ্বারা স্বীকৃত হবে দ্বন্দ্বভঙ্গ অর্জিত হবে। গাঙ্গীতী মনে করতেন জীবনের সর্বোচ্চ লক্ষ্য হলো সকল ব্যক্তির নৈতিকতা বিবেক অথবা নীতিশত সচেতনতার বিকাশ ঘটানো। গাঙ্গীতী এখন প্রত্যয় দিয়েছেন লেখানো তিনি বলেছেন প্রত্যেক সচেতন ব্যক্তির উচিত যখন সাধারণতঃ মতো স্ট্রেস কর্তব্যের দায়িত্ব ও সমাজের বিজ্ঞান করবেন তখন তারা যেন নৈতিকভাবে চাপ সৃষ্টি করেন অহিংসা ও অনন্যযোগিতার মাধ্যমে। যাতে তারা অন্যায়ের কাছ থেকে বিরত হতে বাধ্য হয়। তিনি মনে করতেন একজন ব্যক্তির সেই ক্ষমতা আছে যার দ্বারা তিনি স্ট্রেসকে তার নৈতিক শক্তির সামনে আধা নত করতে পারেন। তিনি স্ট্রেস দিয়েছেন নৈতিক স্ক্রুটের উপরে। নৈতিকতা উজ্জ্বল হয় অহিংসায়োগ্য মাধ্যমে এবং অহিংসনীতির মাধ্যমে। একজন বিবেক নৈতিক ব্যক্তি কখনোই স্বার্থপর ও আত্মকেন্দ্রিক মানুষ হতে পারে না। সে তার নিজের কঠোর সম্পর্কে সচেতন থাকবে সে এটা জানে যে স্ট্রেস অহিংস নিষ্ক্রিয় করে কতিয় সর্বযোগিতার উপর তাই ব্যক্তি যথু নিজের অধিকারের কথা বলবে তা নয়, কঠোরের কথাও বলবে।।

গাঙ্গীতী অহিংসা বিক্ষয়ক নীতিটির সম্পর্কে এবং অনন্যযোগের আলোচনা করে আমরা দেখলাম গাঙ্গীতি অহিংসার সম্পর্কে নিজের কঠোরভাবে পালনের সম্পর্ক নল। তা না হওয়ার কারণে অহিংসা নীতির নথক নাগরকে নিকটি জনসাধারণের পক্ষে যতো চলা সম্ভব হয়েছে। স্ট্রেস নিকটি বর্জন করলেও আমাদের কিন্তু এটা মনে করলে চন্দ্রনাথ না যে তিনি হিংসাকে সমর্থন করেছেন তিনি হিংসাকে সমর্থন কিন্তু কোনভাবেই করেনি কারণ তিনি বলেছেন হিংসাকে সমর্থন করলে আমরা নিজেকে এবং সমাজকে কোনভাবেই রক্ষা করতে পারবে না সমাজ বা প্রকৃতি থেকে বিচ্ছিন্ন হওয়া তার কাছে মৃত্যুর সমান। গাঙ্গীতি অহিংসাকে সামাজিকীকরণ করতে চেয়েছেন। অহিংসাকে ব্যক্তির জর থেকে সমাজের জরে উন্নীত করতে চেয়েছেন। যোগ্য হীনতাই হল সমাজের শক্তিকরণে অহিংসার অর্থ। এটি কেবলমাত্র অর্থনৈতিক ক্ষেত্রেই প্রযোজ্য তাই নয়

এটাকে জীবনের সব ক্ষেত্রে প্রতিষ্ঠা করতে হবে। গান্ধীজি যে কেবল অহিংসার নীতির কথা বলেছেন তাই নয় তিনি সত্যগ্রহ পালনের মাধ্যমে নিজের জীবনেও অহিংসা নীতি পালন করে দেখিয়ে দিয়েছেন যে তা বাস্তবে পালন করা সম্ভব।

তথ্যপঞ্জি:

১. M. Chatterjee, Gandhi's Religions Thought, London 1983.
২. C.D.S. Devanesan, The Making of the Mahatma, London, 1969.
৩. B.R.Nanda, Gandhi Goes to Sevagram, Gandhi Marg, 9/2, May 1987.
৪. M.Swan, Gandhi: The South African experience, Johannesburg, 1985.
৫. J.M.Brown, Gandhi Prisoner of Hope, New Heaven and London, 1989.
৬. C.F.Andrews, Mahatma Gandhi, His life and Idea, Delhi, 1987.
৭. Raghavan Iyer, The Moral and Political Thought of Mahatma Gandhi, second edition, London, 1983.
৮. নিখিলেশ বন্দ্যোপাধ্যায়, বিংশ শতাব্দীর ভারতীয় দর্শন, পশ্চিমবঙ্গ রাজ্য পুস্তক পরিষদ, কলকাতা.



# মনন (Manan)

সম্পাদনা

প্রসেনজিৎ বেরা ও জেসমিন বেগম

সংস্কৃত পুস্তক ভাণ্ডার

৩৮, বিধান সরণী, কলকাতা-৩

"ন্যায় ও ঐবেশেষিক দর্শন" -- একটি তুলনামূলক আলোচনা	
সুরভ খন্ডা	311
ইতিহাসের আলোকে নবি কাভী নজরুল ইসলামের দর্শনচিন্তা:- একটি সমীক্ষা	
দীপক হাজরা	321
ভিটগেনস্টাইন প্রবীত ভাষার চিত্ররূপতালার : একটি উপস্থাপনা	
সুমিত কুমার নায়েক	328
মন প্রসন্ন আয়ুর্কেল ও ন্যায়দর্শন	
প্রতিমা তালী	339
সামাজিক চুক্তি টমাস হব্‌স্-জন্‌ লক্ - জী জাক্ রুশো	
প্রসেনজিৎ রায়	345

*Published by*  
Debasish Bhattacharya  
Sanskrit Pustak Bhandar  
38, Bidhan Sarani, Kolkata-700 006

*Copyright*  
Aghorekamini Prakashchandra Mahavidyalaya

ISBN 978-93-92622-32-8

*1st Published*  
July 2022

*Printed By*  
Avhinaba Mudrani  
Kolkata

*Type Setting*  
Ganesh Enterprise  
Kolkata

## মন প্রসঙ্গ আয়ুর্বেদ ও ন্যায়দর্শন

প্রতিমা ঢালী

সংস্কৃতী অধ্যাপিকা দর্শন বিভাগ, সোভার মহাবিদ্যালয়

শরীর, ইন্দ্রিয়, মন, আত্মা এদের সংযুক্ত অবস্থাকে আয়ু বলা হয়।<sup>১</sup> আয়ু স্বাভাবিক জ্ঞান অর্থাৎ আয়ু হিতকর না অহিতকর, আয়ুর পরিমান, আয়ুর স্বরূপ নির্ণয় যে শাস্ত্রে আলোচনা করা হয়ে থাকে বা যে শাস্ত্রের সাহায্যে এই সমস্ত বিষয়ের জ্ঞান লাভ করা যায় তাকে আয়ুর্বেদ বলে।<sup>২</sup> আয়ুর্বেদের প্রাচীন গ্রন্থ গুলির মধ্যে চরকসংহিতা হল অন্যতম। চরকসংহিতা একটি চিকিৎসা গ্রন্থ হওয়া সত্ত্বেও চরকসংহিতা বিশ্লেষণ করলে দেখা যায় যে ভারতীয় দার্শনিক তত্ত্বের অনেকে কিছুই আলোচনা এই গ্রন্থে করা হয়েছে। এই প্রবন্ধে মূলত আমি আয়ুর্বেদে মন সম্পর্কে যে মতামত দেওয়া হয়েছে তা নিয়ে আলোচনা করব। এই প্রসঙ্গে ন্যায় দর্শনের সাথে সেই মতামতের যে মিল ও অমিল আছে তা নিয়েও আলোচনা করব।

মন মনের কার্য হল চিন্তা, বিবেচনা করা এবং এগুলির সমবায়ী কারণ হল মন। অতএব মনকে একটি দ্রব্য বলা যায়। কারণ দ্রব্য ছাড়া আর কোন কিছু সমবায়ী কারণ হতে পারেনা। আয়ুর্বেদ অনুসারে মনের লক্ষণ প্রসঙ্গে বলা হয়েছে- জ্ঞানের ভাব ও অভাব হল মনের লক্ষণ।<sup>৩</sup> অর্থাৎ মনের অস্তিত্ব জ্ঞান বা জ্ঞানের অভাব দ্বারা জানা সম্ভব হয়। আত্মা, ইন্দ্রিয় ও ইন্দ্রিয়ার্শ্ব, এদের সংযোগ হলেও মানোযোগ ছাড়া ইন্দ্রিয়ার্শ্বের জ্ঞান উৎপন্ন হয় না। এখানে প্রশস্তপাদাচার্যের মতের সাথে মিল লক্ষ্য করা যায়। কারণ

প্রশস্তপানচাৰ্যের মতে ইঞ্জিয়ের সঙ্গে আত্মার সংযোগ এবং বিচ্ছেদ সাধে ইঞ্জিয়ের সংযোগ হলেও কখনও তখনও জ্ঞান, সুখ, দুঃখ প্রভৃতির উৎপত্তি হয় আবার কখনও কখনও উৎপত্তি হয় না। অতএব আত্মা, ইঞ্জিয়, বিচ্ছেদ অতিরিক্ত জ্ঞান সুখানির কারণ রূপে মনের অস্তিত্ব স্বীকার করতে হয়। 'সংস্কৃত ও একত্ব হয় মনের দুটি ভাগ। অণু শব্দের অর্থ হয় সূত্র। এক শব্দের অর্থ হল অসংগঠিত। যত দূর চিত্তা, বিচার, তর্ক, ধ্যান বা সঙ্কল্প করা যায় তাকে মন বলে। ইঞ্জির চালনা ও নিয়ন্ত্রণ চালনা এই দুটোই মনের কর্ম। তর্ক ও বিচার মনের দ্বারা উৎপন্ন হয় এবং তর্কণের পুঞ্জির জগুতি হয়ে থাকে। ইঞ্জিয় যে ইঞ্জিয়ার্ঘ গ্রহণ করে তা মনের সহযোগেই করে থাকে। এখানেই চরক সংহিতার সঙ্গে ন্যায় মর্শমের মিল রয়েছে। কারণ ইঞ্জিয়ার্ঘ গ্রহণে মনের ভূমিকা ন্যায় মর্শমের স্বীকার করা হয়েছে।

চরক সূত্রস্থানের ৮ম অধ্যায় মনের যে বিকল্প প্রণয় যা তা হল মন, মনের বিষয়, বুদ্ধি ও আত্মা এই কয়েকটিই হল আধ্যাতিক মন। এই চলিত শব্দাত্তত্ব জগুতি নিগুতির হেতু হয়ে থাকে। পুরুষের ক্রিয়া প্রবাহিত অর্থাৎ মন না থাকলে ক্রিয়া হয় না। সকল ইঞ্জিয়ই পঞ্চমহাভূতের বিচার। তেজঃ চক্ষুতে, আকাশ কর্ণে, বিহিত থাকে, জল রসনেও বায়ু স্পর্শনে বিশেষরূপে আছে। যে ইঞ্জিয় যে মহাভূতে নির্মিত, সেই ইঞ্জিয়ের সেই স্বভাবের হয়। থাকে, তাই তারা সেই সেই মহাভূতেরপকরণ বিষয়েরই অনুসরণ করে। সেই বিষয়ে অভিযোগ ও মিথ্যায়োগ হলে মন ইঞ্জিয়া বিকৃত হয় তখন বুদ্ধিলাস হয়। আর সেই বিষয়ের মধ্যযোগ হলে মন ও ইঞ্জিয় একত্রিত থাকে এবং বুদ্ধি বৃদ্ধি হয়। এখন প্রশ্ন হল অভিযোগ ও মিথ্যায়োগ কাকে বলে? এই প্রশ্নের উত্তর আমরা একটি উদাহরণের সাহায্যে বোঝান চেষ্টা করব। অযোগ শব্দের অর্থ ইনযোগ। ধরুনাক কানের ইনযোগ যেমন শীতকালে সমাক শীত না পরা। কানের অভিযোগ যেমন শীত কালে অতিরিক্ত শীত পরা। কানের মিথ্যায়োগ যেমন শীত কালে একেবারে শীত না পরা।

মনের বিষয় চিত্তা, মন ও বুদ্ধির মধ্যযোগ, অভিযোগ, ইনযোগ ও মিথ্যায়োগ প্রকৃতি ও বিকৃতির কারণ। যাতে ইঞ্জিয় ও মন প্রকৃতই থাকে, আর বস্তু করা উচিত। মনের বিষয় ও আত্মার সুরিকার হলে মনের জেমা নির্বহিত হয়। মন ইঞ্জিয় জেমা কারণত্ব। অর্থাৎ ইঞ্জিয়ার্ঘ ও সঙ্কল্পের বিভিন্নতা বশতঃ একই পুরুষে সত্ত্ব, রজ, তম এই তিন বিভিন্ন ভাগের পরিমাণ পাওয়া যায়। এক পুরুষের অনেক মন থাকে সম্ভব নয়। যা সর্বত্রই পুরুষের অনুপস্থিতি থাকেই মন বলা হয়।

সকল ইঞ্জিয় মনের অনুপস্থিতি বলেই নিগত গ্রহণে সক্ষম হয়। চরক সংহিতায় সর্ব প্রথম মনের মন অঙ্গ্যাত্ব করা গিয়ে উদ্দেশ্য করা হয়েছে। এখানে আত্মা অধিষ্ঠিত মন ও পুঞ্জিক শরীরাবলম্ব সমূহের প্রয়োজনক ব্যক্তি রূপে কল্পনা করা হয়েছে। মন আত্মার সঙ্গে সংযুক্ত হলে একে শরীরের নিয়ামক বলে।

শরীর দ্বারা প্রবৃত্তির মা বলে আত্মার সুখ, দুঃখ জ্ঞেয় হয় না, শরীরাবলম্বিতা আত্মার সমবেত হয়েই সুখ, দুঃখ, জ্ঞান, ইচ্ছা ইত্যাদি আত্মার বিশেষ ভাগ গুলি উৎপন্ন হয়। আত্মার সঙ্গে মনের সংযোগও এই আত্মার মনোমায়ী স্বরূপে থাকে। অতএব শরীরের মত মনও আত্মার ভোগের সাধক।

সংখ্যা, পরিমাপ, পৃথকত্ব, সংযোগ, বিচ্ছিন্ন, সৈনিক, পরস্পর ও অপসরস এবং বেগ নামক সংকেত - এই কয়টিই হল মনের গুণ। আত্মা সংখ্যায় বহু, অতএব মনও সংখ্যায় বহু। একই মন ধন্য মন থেকে পৃথক। কয়েকটি মনে পৃথকত্ব গর্ভ আছে। মনের যে পরিমাপ, তা হল অণু পরিমাপ। এখানে ন্যায়মর্শমের সাথে আত্মবেদের মত মিল লক্ষ্য করা যথি কারণ ন্যায় মতেও মন অণু পরিমাপ নির্দিষ্ট। মন ব্রহ্ম বলে তা ধন্য মনের সঙ্গে সাদৃশ্য হয়। আত্মার বিকৃত হয়। কয়েকটি সংযোগ এবং বিচ্ছিন্ন মনের গুণ। আত্মার চিত্ত প্রবাহের সঙ্গে সংযোগের সঙ্গে মনে মনে মৈত্রিক পরস্পর ও অপসরস গুণ আছে। বেগ নামক গুণটি মূর্ত হতে থাকে। মন অণু-পরিমাপ নির্দিষ্ট মূর্ত হয়। একটা মনে বেগ নামক গুণও আছে। মনেরও ক্রিয়া আছে। মন

অত্যন্ত রূপ, অত্যন্ত প্রতীক্ষা। পৃথিবী, জল, তেজ, বায়ু ও মন এই পাঁচটি প্রকৃতি দ্বারা গঠিত। পৃথিবী জল, তেজ ও বায়ু এই চারটি প্রকৃতি স্পর্শ থাকে। মনে ক্রিয়া আছে কিন্তু স্পর্শ নেই। আমাদের প্রত্যক্ষ জ্ঞান হতে গেলেই কোন না কোন ইন্দ্রিয়ের মরকার হয়। প্রত্যক্ষ জ্ঞান যদি ইন্দ্রিয় ছাড়া না হয়, তাহলে সুখ, দুঃখের প্রত্যক্ষের জন্যও কোন না কোন ইন্দ্রিয় মরকার। বাহ্য ইন্দ্রিয়গুলির সাহায্যে যে আহার সুখ, দুঃখ ইত্যাদির প্রত্যক্ষ হতে পারে না, তা স্পষ্টই বোঝা যায়। সুখ ও দুঃখকে আমরা কেউই চোখ, কান ইত্যাদির সাহায্যে জ্ঞানি না। কোন বাহ্য ইন্দ্রিয় নিজেই বস্তু সুখ, দুঃখ ইত্যাদির অনুভব সম্ভব নয়, বাহ্য ইন্দ্রিয় থেকে ভিন্ন এমন একটি অস্তর ইন্দ্রিয় স্বীকার করা মরকার, যার দ্বারা সুখ, দুঃখ ইত্যাদির প্রত্যক্ষ সম্ভব। এই অস্তর ইন্দ্রিয়ের নামই মন। মন ছাড়া কেবল বাহ্য ইন্দ্রিয়ের দ্বারা যথা বিষয়ের প্রত্যক্ষও সম্ভব নয়। আহার সঙ্গে মনের সংযোগ হবে, মনের সঙ্গে চোখের সংযোগ হবে, চোখের সঙ্গে টেবিলের সংযোগ হবে। তবে টেবিলের প্রত্যক্ষ হবে। এখানে ন্যায়দর্শনের সাথে আত্মবেদের মত মিল লক্ষ্য করা যাই কারণ ন্যায়দর্শনেও মনকে অস্তর ইন্দ্রিয় রূপে স্বীকার করা হয়েছে।

অনু পরিমাণ মন একই সঙ্গে একাধিক ইন্দ্রিয়ের সঙ্গে সংযুক্ত হতে পারে না। এই কথা ন্যায়-বৈশেষিক দর্শনেও স্বীকার করা হয়েছে। আহার ইচ্ছা ও প্রযত্নের দ্বারা মন নিয়ন্ত্রিত হয়। রূপ, রস ইত্যাদি গ্রাহ্য বিষয়গুলির মধ্যে যে বিষয়টির প্রতি ততর ইচ্ছা আছে এবং ইচ্ছা অনুযায়ী প্রবৃত্ত হয়েছে, সেই বিষয় গ্রাহক ইন্দ্রিয়ের সঙ্গেই সেই ব্যক্তির মনের সংযোগ প্রথমে হয় এবং যে ইন্দ্রিয়ের সঙ্গে মনের সংযোগ হবে, সেই ইন্দ্রিয়ের দ্বারা মন উৎপন্ন হবে। মন অনু-পরিমাণ বিশিষ্ট হওয়া নিরংশ তাই নিত্য।

আত্মবেদের সাথে ন্যায় দর্শনের মন বিষয়ে কিছু মত মিল থাকলেও আত্মবেদে মনের একটি বিশেষ ভূমিকা স্বীকার করা হয়েছে। যা আত্মবেদের উদ্দেশ্যের সাথে সম্পর্কিত। আত্মবেদের উদ্দেশ্য হল পুরুষের আরোগ্য

দান করা এবং স্বাস্থ্য রক্ষা করা। শরীর ও মন এই দুটিকে কেন্দ্র করেই যোগ উৎপন্ন হয়। আত্মবেদে যে দিন ধরনের যোগের কথা স্বীকার করা হয়েছে তার মধ্যে মনস যোগ অন্যতম। যা দ্বারা বস্তুর আলাভ ও অপ্রাপ্ত বস্তুর সমন্বয় থেকে উৎপন্ন হয়। আবার আত্মবেদে যে দিন প্রকার উৎসাহের কথা বলা হয়েছে তার মধ্যে সন্তোষজায় অন্যতম। সন্তোষজায় বলতে দেখায় সকল অহিতকর বিষয় থেকে মনকে নিবৃত্ত করা। অতএব আমরা দেখছি আত্মবেদে যোগ নির্মাণ ও ঔষধের ক্ষেত্রে মনের ভূমিকা অপরিহার্য।

তথ্যসূত্র

- ১। শরীরেজিগসঙ্করসংযোগে পতি উভয়। নিরালস্যসুখসুখ পর্যায়োদ্যমভেদে। চরক সাহিত্য মর্হি চরক, পণ্ডিত হারদেব পণ্ডে, জরতক দাস হরিন্দ্র প্রস, ক্রোমায় সংস্কৃত পুস্তকালয় বারানসী সিটি, ১৯০৭। পৃ-৮।
- ২। বিরাহিত্য সুখং দুঃখাম্যুভয়া বিতর্হিত। মানকতজ যত্রোদ্যমাত্মবেদে স উভতে। চরক সাহিত্য মর্হি চরক, জিলা দ্বারা সহ প্রথমতঃ বঙ্গবন্দন কবিরাজ যশোদামল্ল সঙ্কর, সম্পাদিত ঔষধচার্য কনিষ্ঠকর দেবশর্মা, আত্মবেদচার্য সভা শেখর ভট্টাচার্য দীপকন, ২৩ কেশব সেন স্ট্রিট, কলকাতা - ২, দ্বিতীয় সংস্করণ, ২০১০ পৃ ৪।
- ৩। সংকথা মনসো জ্ঞানসাধ্যো জ্ঞান এষ চ। সতি হ্যাত্মবেদার্থানাং সত্যিকর্মে ন কর্তে। বৈবৃদ্ধাঘনসো জ্ঞান সাধিত্যজ্ঞান কর্তে। চরক সাহিত্য মর্হি চরক, বঙ্গবন্দন প্রভেদপ্রভেদ নাম সম্পাদিত ২৩ ৭৩, কলকাতা নবশর প্রকাশন, ১৯৯১। পৃ ১৯১।
- ৪। প্রশস্তপাদভায়ান অনুবাদান্ধিকরক নামোন্নয়নম, ২য় ভাগ, ২০০০, পৃ ১৫২।
- ৫। মনো মনোমর্থে বুদ্ধিগাথ্য চেতনাসাধ্যভব্যত্বসংযোগে। চরকসাহিত্যে দার্শনিক ভাবনা-সমীক্ষা, জগদীশ বসুদেবী, সি এশিয়াটিক সোসাইটি ১ পার্ক স্ট্রিট কলকাতা - ১৬। ২০০৬। পৃ ১১৫।

দান করা এবং স্বাস্থ্য রক্ষা করা। শরীর ও মন এই দুটিকে কেন্দ্র করেই রোগ উৎপন্ন হয়। আয়ুর্বেদে যে তিন ধরনের রোগের কথা স্বীকার করা হয়েছে তার মধ্যে মানস রোগ অন্যতম। যা প্রিয় বস্তুর অলাভ ও অপ্রিয় বস্তুর সমাগম থেকে উৎপন্ন হয়। আবার আয়ুর্বেদে যে তিন প্রকার ঔষধের কথা বলা হয়েছে তার মধ্যে সত্ত্বাবজায় অন্যতম। সত্ত্বাবজায় বলতে বোঝায় সকল অহিতকর বিষয় থেকে মনকে নিবৃত্ত করা। অতএব আমরা দেখছি আয়ুর্বেদে রোগ নির্ণয় ও ঔষধের ক্ষেত্রে মনের ভূমিকা অপরিসীম।

### তথ্যসূত্র

- ১। 'শরীরেন্দ্রিয়সত্ত্বাসংযোগো ধরি জীবিত্। নিত্যগশচানুবন্ধশ্চ পর্যায়ৈরায়ুরেচ্যতে।।' চরক সংহিতা মহর্ষি চরক, পণ্ডিত তারাদত্ত পাণ্ডে, জয়কৃষ্ণ দাস হরিদাস গ্রন্থ, চৌখাম্বা সংস্কৃত পুস্তকালয় বারানসী সিটি, ১৯৩৭। পৃ-৮।
- ২। 'হিতাহিতং সুখং দুঃখামায়ুস্তস্য হিতাহিত্। মানঞ্চতচ্চ যত্রোক্তমায়ুর্বেদঃ স উচ্যতে।' চরক সংহিতা মহর্ষি চরক, টীকা ভাষ্য সহ প্রথমখণ্ড বঙ্গানুবাদ কবিরাজ যশোদানন্দন সরকার, সম্পাদিত বৈদ্যাচার্য কালিকিঙ্কর সেনশর্মা, আয়ুর্বেদাচার্য সত্য শেখর ভট্টাচার্য দীপায়ন, ২০ কেশব সেন স্ট্রীট, কলকাতা - ৯, দ্বিতীয় সংস্করণ, ২০১০ পৃ ৫।
- ৩। 'লক্ষণং মনসো জ্ঞানস্যাভাবো ভাব এব চ। সতি হ্যাত্মেন্দ্রিয়ার্থানাং সন্নির্ঘর্ষে ন বর্ততে।। বৈবৃন্তাত্মনসো জ্ঞানং সামিধ্যাত্তচ্চ বর্ততে।' চরক সংহিতা মহর্ষি চরক, বঙ্গানুবাদ ব্রজেন্দ্রচন্দ্র নাগ সম্পাদিত ২য় খণ্ড, কলকাতা নবপত্র প্রকাশন, ১৯৯১। পৃ ১৯১।
- ৪। প্রশস্তপাদভাষ্যম অনুবাদাদিকারকঃ দামোদরশ্রম, ২য় ভাগ, ২০০০, পৃ ১৫৯।
- ৫। 'মনো মনোঅর্থো বুদ্ধিরাত্মা চেতধ্যাত্মদ্রব্যগুণসংগ্রহঃ।' চরকসংহিতার দার্শনিক ভাবনা- সমীক্ষা, ডালিয়া বাঁদুড়ী, দি এশিয়াটিক সোসাইটি ১ পার্ক স্ট্রীট কলকাতা -১৬। ২০০৬। পৃ ১১৫।

- ৬। 'অবশীর্ণস্বা ত্র্যমব্যয়স্যসংসারস্যৎ'। 'করক সংহিতা, অর্থশি সনক, চন্দ্র-পল্লী বহু  
 ত্রাণিত অর্থাৎক ধাঁড়ক, কাখা। সাহ বিদ্য করণা করণীনাথ শাস্ত্রী সম্পাদিত  
 গঙ্গাসংহা পণ্ডে এক ত্রিভিক্তি ক্রিয়ত্রত শর্ম ২ম খণ্ড। কৌখাৎক বিদিত্ত অধিক  
 বাগাননী ২৯৬৯। পৃ ৬৭০।
- ৭। 'স্বপ্নশিবেদ্রিয়স্যসংসারস্যৎ'। 'স্বপ্নশি মানসের চ। বিবিধঃ সুখসুখানাং সেনানাং  
 ত্রবতঃ'। 'করক সংহিতা, অর্থশি সনক, সত্যসংহিতা ত্র্যজেন্দ্রচন্দ্র নার স্বপ্নশি  
 ২ম খণ্ড, করকতত্ত্ব নরপদ্য প্রকাশন, ২৯৯২। পৃ ২০৭।
- ৮। 'অনুভবস্য চিত্তস্য কৌ কৌ মনস্য স্বপ্নশি'। 'করক সংহিতা অর্থশি সনক,  
 করকতত্ত্ব ত্র্যজেন্দ্রচন্দ্র নার স্বপ্নশি ২ম খণ্ড, করকতত্ত্ব নরপদ্য প্রকাশন,  
 ২৯৯২। পৃ ২০৭।



প্রাত্যহিক  
জীবনের  
নীতিকথা



সম্পাদনা : প্রকাশ বসু

২০২৩

# ଆତ୍ମହିକ ଜୀବନର ନୀତିକଥା

ମହାମାତା : ପ୍ରକାଶ ସଂସ୍ଥା

ଏମ.ଏ., ଏସ.କିଏ., ସି.ଏଚ୍.ଡି., (ଏମ.ଆର୍.)

ଫେଡେରାଲ କଲେଜ ଡିଗ୍ରୀ

କାମାରା କଲେଜ



ହ ସ କ ଶ ନୀ

କୋଲକାତା, କୋଲକାତା - ୯୫

hazarika.prakashani@gmail.com

## শাস্তি বিষয়ক মতবাদের তুলনামূলক আলোচনা: ঐতিহ্যমূলক এবং ঐতিহ্যমূলক মতবাদ

ড.প্রতিমা ঢালী\*

সংক্ষেপস্বরূপ:

উক্ত প্রবন্ধে আমি যে বিষয় নিয়ে আলোচনা করব তা হল শাস্তি বিষয়ে ঐতিহ্যমূলক এবং ঐতিহ্যমূলক মতবাদের তুলনামূলক আলোচনা। এই আলোচনা প্রসঙ্গে আমি শাস্তি বলতে কী বোঝায়? অপরাধ বন্ধতে কী বোঝায়? অপরাধী কে? অপরাধীকে শাস্তি দেওয়ার অধিকার কিসের আছে? শাস্তি বিষয়ে ঐতিহ্যমূলক মতবাদ এবং শাস্তি বিষয়ক ঐতিহ্যমূলক মতবাদ নিয়ে নবিত্বেরে আলোচনা করব। পরিশেষে আমার লক্ষ্য থাকবে যে এই দুইটি মতবাদের মধ্যে কি পার্থক্য আছে এবং সমাজ কোন মতবাদের স্বারা বেশ উপকৃত হবে।

**শব্দ নির্দেশ:** শাস্তি, নৈতিক বিচার, সমাজবিবেচনী, অপরাধ।

**ভূমিকা:**

কিছু কিছু কর্ম আছে যা সচেতনভাবে কোন ব্যক্তি অন্যের ক্ষতি সাধন করার জন্য করে থাকে সেই সকল কর্মকে অপরাধ বলা হয়। এই অপরাধগুলির সাথে জড়িত ব্যক্তিদের অপরাধী বলা হয়। কিছু সামাজিক নিয়ম বা মানবিকতার নিয়ম আছে যা মানুষকে সমাজবদ্ধ করে রাখে এবং এই নিয়মগুলিকে অমান্য করলে সামাজিক সংহতি ভঙ্গ হয়। ফলে সমাজের বিশৃঙ্খলার সৃষ্টি হয়। কিছু কিছু কর্ম আছে যা ব্যক্তি নিজেই নিজের ক্ষতি সাধন করে আবার কিছু কিছু কর্ম আছে যার দ্বারা ব্যক্তি

---

\* সহকারী অধ্যাপিকা, দর্শন বিভাগ, পেনেলবা মহাবিদ্যালয়, হুগলী। যোগাযোগ-

[pratinadhal13@gmail.com](mailto:pratinadhal13@gmail.com)

PRATYAHIK JIBONER NITIKATHA  
Edited by PRAKASH MONDAL

© গ্রন্থস্বত্ব : প্রকাশ মণ্ডল

প্রথম প্রকাশ : বৈশাখ ১৪৩০ । মে ২০২৩

প্রচ্ছদ : প্রকাশ মণ্ডল

প্রকাশক : সুদীপ্ত নিয়োগী

হ য ব র ল প্রকাশনী

বেলেঘাটা, কলকাতা - ৮৫

[hazabarala.prakashani@gmail.com](mailto:hazabarala.prakashani@gmail.com)

যোগাযোগ : 9831889354

ISBN No. 978-81-962220-1-7

অক্ষরবিন্যাস : প্রকাশ মণ্ডল, দর্শন বিভাগ, কাটোয়া মহাবিদ্যালয়

মুদ্রণ : হ য ব র ল প্রেস

প্রকাশক এবং স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ব্যতীত এই বইয়ের কোনো অংশের কোনোরূপ পুনরুৎপাদন কিংবা প্রতিলিপি করা যাবে না। কোনো যান্ত্রিক উপায়ে গ্রাফিক্স, ইলেক্ট্রনিক বা অন্য কোনো মাধ্যম, যেমন: ফটোকপি, টেপ বা পুনরুদ্ধারের সুযোগ সংবলিত তথ্য-সঞ্চয় করে রাখার কোনো পদ্ধতির মাধ্যমে প্রতিলিপি প্রস্তুত করা যাবে না। এই শর্ত লঙ্ঘিত হলে উপযুক্ত আইনি ব্যবস্থা গ্রহণ করা হবে।

মূল্য : ৫২৭.০০

অপরাধমূলক কর্ম থেকে নিজেকে বিরত রাখা অর্থাৎ সমাজ যেন শান্তির ভয় দেখিয়ে ব্যক্তিকে অপরাধ মূলক কর্ম থেকে বিরত রাখে। এছাড়াও সমাজ যেন এমন বলতে চাই যে তুমি যদি এমন কর্ম কর তাহলে তোমাকেও অনুরূপ শাস্তি পেতে হবে। অর্থাৎ তুমি এই জাতীয় অপরাধ থেকে দূরে থাকো।

নিজির মতে এই জাতীয় শাস্তিনে অপরাধীকে যেন দৃষ্টান্ত হিসেবে ব্যবহার করা হয়। শাস্তি ভোগ দেখে অন্যরা নিজেকে সংযত রাখে। ম্যাকেল্লী এই মতবাদের কাথ্য দিতে গিয়ে একজন বিচারকের বক্তব্য উদ্ধৃতি করেছেন তা হল- "তোমাকে ভেড়া হুরি করার জন্য শাস্তি দেওয়া হচ্ছে না বরং অন্যরা যাতে ভেড়া হুরি না করে তার জন্য তোমাকে শাস্তি দেওয়া হচ্ছে"। উপযোগীবাদকে এই মতবাদের ভিত্তি বন্ধন বলা যেতে পারে। কারণ উপযোগবাদের মূল কথা হলো সার্বিক মানুষের সার্বিক সুখ কিন্তু সকল মানুষের কল্যাণ বা সুখ তখন সম্ভব হবে যদি সমাজের কল্যাণ হয়। তাই বলা হয় সমাজের কল্যাণার্থে অপরাধীকে শাস্তি পেতে হবে। প্রতিরোধমূলক মতবাদে লক্ষ্য কিন্তু কেবলমাত্র ব্যক্তির কল্যাণ নয়, সমাজের কল্যাণও বটে। উপযোগীবাদীরা বিশ্বাস করেন যে মানুষ কেবল সুখ খুঁজে না দুঃখ কেউ এড়িয়ে যাওয়ার চেষ্টা করে। তাই শাস্তি পাওয়ার ভয় অর্থাৎ দুঃখ পাওয়ার ভয়ে অপরাধ মূলক ক্রিয়াগুলিকে এড়িয়ে যায়। শাস্তি দানের প্রক্রিয়ায় ব্যক্তিকে অপরাধমূলক ইচ্ছা থেকে বিরত রাখে। অর্থাৎ অপরাধকে প্রতিরোধ করাই হলো প্রতিরোধমূলক শাস্তি ব্যবস্থার মূল উদ্দেশ্য। এমন শাস্তি দান ব্যবস্থা যেন ব্যক্তির অপরাধকে প্রতিরোধ করে তেমনি সমাজে বসবাসকারী অন্যান্য মানুষের অপরাধ প্রবণতাকেও প্রতিরোধ করে। ফলে সমাজের কল্যাণ হয় ফলে সমাজের সামাজিক শৃঙ্খলা এবং সংহতি রক্ষা হয়। কাজেই বলা যেতে পারে যে এই ধরনের



মতবাদে এটা বলার চেষ্টা করা হয়েছে যে অপরাধীকে তার অপরাধের জন্য এমন শাস্তি দেওয়া উচিত যাতে ব্যক্তির মনে জীতির সঙ্কয় করবে। যার ফলে অপরাধী নিজে এবং অন্য ব্যক্তির সেই রকম অপরাধমূলক কর্ম থেকে বিরত থাকবে। যার ফলে সমাজ এবং রাষ্ট্রের কল্যাণ সাধিত হবে।

শাস্তি সম্পর্কে প্রতিনোধমূলক এবং প্রতিরোধমূলক মতবাদের ব্যাখ্যা করে আমরা এটা লক্ষ্য করলাম যে কারোই কারো মতে প্রতিনোধমূলক মতবাদ মানবতা বিরোধী এবং ধর্ম বিরোধী মতবাদ। ম্যাককিজ এই অভিমোগ স্বীকার করেন না। কারণ শাস্তি দানের যে ব্যবস্থা তা নিয়ন্ত্রণ করে সমাজ। বিচারক নিরপেক্ষভাবে বিচার করে অপরাধীকে তার অপরাধ কর্মের জন্য শাস্তি দান করেন। এখানে কোন ব্যক্তিগত প্রতিশোধ চরিতার্থ হয় না। প্রতিশোধ মূলক মতবাদের একটি বৈশিষ্ট্য হল এই মতবাদে শাস্তিকে অপরাধের সমানুপাতিক বলে মনে করা হয়েছে। অর্থাৎ এখানে বলা হয়েছে শাস্তির মাত্রা যেন অপরাধের মাত্রার তুলনায় কম বা বেশি না হয়। কিন্তু ল্যু প্রতিনোধমূলক মতবাদে আবার অপরাধের ক্ষেত্রে পরিবেশের প্রভাবের কথা স্বীকার করা হয়েছে। তাদের মতে মানুষের মধ্যে অপরাধ প্রবণতা সৃষ্টভাবে থাকতে পারে। কিন্তু সমাজের প্রভাবে তা প্রকটিত হয় এবং ব্যক্তি অপরাধ করে বলে। এই কারণে গুরু অপরাধেও ল্যু শাস্তির কথা বলা হয়েছে। অপরাধকে প্রতিরোধমূলক মতবাদে অপরাধীকে যেহেতু দৃষ্টান্ত হিসেবে ব্যবহার করা হয় বা সমাজের কল্যাণার্থে অপরাধীকে উপায় হিসেবে ব্যবহার করা হয় সেই কারণে ল্যু অপরাধের জন্য গুরু শাস্তি দেওয়া হয়। অর্থাৎ এখানে ল্যু অপরাধের জন্য কর্তার শাস্তিকেও স্বীকার করা হয়েছে। কারণ এই ধরনের কর্তার শাস্তি সমাজে বনবাসকারী অন্যান্য মানুষের কাছে দৃষ্টান্ত

রক্ষা করা হয় যেমন কিছু নয়। ফাঁকি কিছু সব ধরনের আচরণকে শাস্তি প্রদানের যোগ্য বলে মনে করেন না। তিনি সেই সব আচরণকে শাস্তি দানের যোগ্য অপরাধ বলে স্বীকার করেছেন যেগুলি রাষ্ট্রীয় ঠিকি নিয়মের দৃষ্টিকোণ থেকে নিপনীয়।

ব্রেভলির মতে প্রত্যেক নৈতিক বোধ সম্পন্ন মানুষের কিছু দায়িত্ববোধ রয়েছে। অপরাধীর যেহেতু নৈতিক বোধ রয়েছে তাই তার কিছু দায়িত্ববোধ রয়েছে। কিন্তু অপরাধী তার অপরাধের মধ্য দিয়ে বেষ্টিতভাবে সেই দায়িত্ব পালন করেনি তাই তার শাস্তি পাওয়া উচিত।

প্রতিশোধমূলক মতবাদকে দু'ভাগে ভাগ করা যায় একটি হলো কঠোর মতবাদ অন্যটি হলো ন্যূন মতবাদ। কঠোর মতবাদে বলা হয় অপরাধের প্রকৃতি, গুরুত্ব, অপরাধীর বয়স, জিপ, তার সামাজিক ও আর্থিক অবস্থা, শিক্ষা, দীক্ষা, স্বাস্থ্য, ব্যাধি, কোন পরিস্থিতিতে সে অপরাধটি করেছে সেই সকল বিষয় বিচার করে তারপর শাস্তির মাত্রা নির্ধারণ করা হবে। ফেক্সবিলেয়ে দীর্ঘমেয়াদী শাস্তি দেওয়া হয় আবার ফেক্সবিলেয়ে ন্যূন শাস্তিও দেওয়া হয়।

**প্রতিরোধমূলক মতবাদ:**

এই মতবাদ অনুসারে অপরাধীকে শাস্তি প্রদানের উদ্দেশ্য হল অগাণ্য কোন ব্যক্তি যাতে এমন অপরাধ মূলক কর্ম না করে। অর্থাৎ প্রকৃতপক্ষে অপরাধ প্রতিরোধ করায় শাস্তি দানের মূল উদ্দেশ্য। সমাজে বসবাসকারী যে কোন মানুষ একজন অপরাধীকে শাস্তি পেতে দেখে এই ধরনের

শাস্তি বিষয়ক মতবাদের তুলনামূলক আলোচনা: প্রতিশোধমূলক এবং প্রতিরোধমূলক মতবাদ

অপরাধমূলক কর্ম থেকে নিজেকে বিরত রাখে অর্থাৎ সমাজ যেন শান্তির ভয় দেখিয়ে ব্যক্তিকে অপরাধ মূলক কর্ম থেকে বিরত রাখে। এছাড়াও সমাজ যেন এমন বলতে চাই যে তুমি যদি এমন কার্য কর তাহলে তোমাকেও অনুরূপ শাস্তি পেতে হবে। অর্থাৎ তুমি এই জাতীয় অপরাধ থেকে দূরে থাকো।

ব্রিলির মতে এই জাতীয় শাস্তিদানে অপরাধীকে যেন দৃষ্টান্ত হিসেবে ব্যবহার করা হয়। শাস্তি ভোগ দেখে অন্যরা নিজেকে সংযত রাখবে। ম্যাকেঞ্জী এই মতবাদের ব্যাখ্যা দিতে গিয়ে একজন বিচারকের বক্তব্য উল্লেখ করেছেন তা হল- "তোমাকে ভেড়া চুরি করার জন্য শাস্তি দেওয়া হচ্ছে না বরং অন্যরা যাতে ভেড়া চুরি না করে তার জন্য তোমাকে শাস্তি দেওয়া হচ্ছে"। উপযোগিবাদকে এই মতবাদের ভিত্তি বক্রপ বলা যেতে পারে। কারণ উপযোগবাদে মূল কথা হলো সার্বিক মানুষের সার্বিক সুখ কিন্তু সকল মানুষের কল্যাণ বা সুখ তখন সম্ভব হবে যদি সমাজের কল্যাণ হয়। তাই বলা হয় সমাজের কল্যাণার্থে অপরাধীকে শাস্তি পেতে হবে। প্রতিরোধমূলক মতবাদে লক্ষ্য কিন্তু কেবলমাত্র ব্যক্তির কল্যাণ নয়, সমাজের কল্যাণও বটে। উপযোগিবাদীরা বিশ্বাস করেন যে মানুষ কেবল সুখ খুঁজে না দুঃখ কেউ এড়িয়ে যাওয়ার চেষ্টা করে। তাই শাস্তি পাওয়ার ভয় অর্থাৎ দুঃখ পাওয়ার ভয়ে অপরাধ মূলক ক্রিয়াজলিকে এড়িয়ে যায়। শাস্তি দানের প্রতিমায় ব্যক্তিকে অপরাধমূলক ইচ্ছা থেকে বিরত রাখে। অর্থাৎ অপরাধকে প্রতিরোধ করাই হলো প্রতিরোধমূলক শাস্তি ব্যবস্থার মূল উদ্দেশ্য। এমন শাস্তি দান ব্যবস্থা যেন ব্যক্তির অপরাধকে প্রতিরোধ করে যেমন সমাজে বসবাসকারী অন্যান্য মানুষের অপরাধ প্রবণতাকেও প্রতিরোধ করে। ফলে সমাজের কল্যাণ হয় ফলে সমাজের সামাজিক শৃঙ্খলা এবং সংহতি রক্ষা হয়। কাজেই বলা যেতে পারে যে এই ধরনের



রূপ দেখানো হয়। যাতে শান্তির নির্মমতা দেখে অন্যান্য ব্যক্তি অপরাধ থেকে বিরত থাকে। তাই বলা হয় এই শান্তি ব্যবস্থায় অপরাধী কেবলমাত্র সামাজিক শিক্ষার হাতিয়ার। প্রতিশোধমূলক মতবাদে সম্বর্ধক কার্যক্রম বলেন যে একজন অপরাধী তার অপরাধের মধ্যে সমাজের যে অকল্যাণ সৃষ্টি করেছে শান্তি দানের মাধ্যমে তার মোচন হতে পারে। কিন্তু এই মতবাদ যুক্তিযুক্ত নয় বলেই মনে করা হয়। কারণ কোন ব্যক্তিকে হত্যা করলে সেই মৃত ব্যক্তিকে কোনভাবেই ফিরিয়ে আনা সম্ভব নয়। এমনকি হত্যাকারীকেও যদি তার অপরাধের সমান পরিমাণে শান্তি দেওয়া হয় তাহলেও নিহত ব্যক্তির যে অকল্যাণ হয়েছে এবং সমাজের যে অকল্যাণ হয়েছে তার ক্ষতিপূরণ সম্ভব নয়। শান্তি দানের তো মূল উদ্দেশ্য হল সমাজের এবং ব্যক্তির কল্যাণ করা। কিন্তু অপরাধীকে যদি তার অপরাধের জন্য সমান পরিমাণে শান্তি দেওয়া হয় তাহলে অপরাধী অপরাধের মাধ্যমে সমাজের যে পরিমাণ অকল্যাণ করেছে শান্তিদাতা ও সেই পরিমাণ অকল্যাণ করবে শান্তিদানের মাধ্যমে। অর্থাৎ একটি অতীত ঘটনাকে দূর করার জন্য যদি ওপর আরেকটি অতীত ঘটনা ঘটানো হয় তাহলে সমাজের কল্যাণের চেয়ে বেশি অকল্যাণে হবে। প্রতিরোধমূলক মতবাদে ব্যক্তিকে উদ্দেশ্য সিদ্ধির উপায় হিসেবে ব্যবহার করা হয়েছে কিন্তু তা মোটেই উচিত নয় কারণ প্রত্যেক ব্যক্তির একটি স্বপ্নত মূল্য রয়েছে ব্যক্তিকে উপায় হিসেবে ব্যবহার করলে মনুষ্যের অবমূল্যায়ন করা হয়। অতএব এই দুইটি মতবাদ তুলনামূলক আঙ্গোচনা করে আমরা দেখানাম যে এই দুটি মতবাদ কোন মতবাদই শান্তি দানের ক্ষেত্রে সম্ভোধজনক মতবাদ নয়।

## প্রাত্যহিক জীবনের নীতিকথা

### সহায়ক গ্রন্থপঞ্জি:

১. মিত্র, সোমা. (২০০১). *নীতিবিজ্ঞানের ভূমিকা*. কলকাতা: গ্রিফিন পাবলিকেশন।
২. গুপ্ত, দীক্ষিত. (২০০৭). *নীতিশাস্ত্র*. কলকাতা: পশ্চিমবঙ্গ রাজ্য পুস্তক পর্যদ।
৩. ভট্টাচার্য, সমরেন্দ্র. (২০১০). *নীতিবিদ্যা*. কলকাতা: বুক সিডিকেট প্রাইভেট লিমিটেড।
৪. ঘোষ, পীযুষ কান্তি ও প্রমথ বন্ধু সেনগুপ্ত. (২০০৯). *নীতিবিদ্যা*. কলকাতা: ব্যানার্জি পাবলিকেশন।

**BASIC VALUES  
EMBODIED IN INDIAN  
CULTURE AND THEIR  
RELEVANCE TO THE  
CONTEMPORARY  
SOCIETY**

*Editors :*

*Dr. Pankaj Kanti Sarkar*

*Dr. Arpita Tripathy*

**BASIC VALUES EMBODIED IN INDIAN CULTURE AND  
THEIR RELEVANCE TO THE CONTEMPORARY SOCIETY.**

*Proceedings of the K.P.R. sponsored Periodical Lecture and International Seminar,  
held, Organised by the Department of Sanskrit & Department of Philosophy,  
Dated: 10th -17th February, 2023.*

**Editor: Dr. Pankaj Kanti Sarkar**

**ISBN: 978-93-92072-58-1**

**Edition - 2023**

**Price: Rs. 590.00**

***Publication of:-***

<b>Principal</b>	<b>The Banaras Mercantile Co.</b>
<b>Debra Thana Sahid Khudiram</b>	<b>Publishers—Booksellers</b>
<b>Smriti Mahavidyalaya</b>	<b>125, Mahatma Gandhi Road</b>
<b>Chakshyampur, Debra,</b>	<b>Kolkata-700007</b>
<b>Paschim Medinipur</b>	<b>M:9433612507</b>
<b>Pin-721124(W.B.)</b>	<b>banarasmercantileco@gmail.com</b>

**Disclaimer:** The views expressed in the papers are solely those of the authors and do not necessarily reflect the views of the editors or their affiliated institution and publishers.

## দর্শনের আঙিনায় আধ্যাত্মিকতার চর্চা

ডঃ প্রতিমা ঢাকী

দুর্গম এই প্রবন্ধে যে বিষয় নিয়ে আলোচনা করব তা হল দর্শনের আঙিনায় আধ্যাত্মিকতার চর্চা। এই আলোচনা প্রসঙ্গে আমি মূলত আধ্যাত্মিকতা বলতে কী বোঝানো হয়েছে? আধ্যাত্মিকতার অনুলীলন ওলি কি কি এবং কিভাবে এই অনুলীলন ওলি দর্শন চর্চায় আলোচিত হয়েছে তা নিয়ে আলোচনা করব।

প্রথমেই আমার বলে নেওয়া উচিত যে এখানে দর্শন বলতে আমি মূলত ভারতীয় দর্শনের কথাই বলাছি। কারণ এই আধ্যাত্মিক মতবাদ ভারতীয় দর্শনকে পাত্যতা দর্শন থেকে পৃথক করে। যেহেতু পাত্যতা দর্শন মূলত জড়বাদী দর্শন। পাত্যতা দর্শনে জড়ের উপর বেশি গুরুত্ব দেওয়া হয়েছে। জড়ের স্বরূপই জগত ও জীবনকে ব্যাখ্যা দেওয়ার চেষ্টা করা হয়েছে।

আমি এখানে আধ্যাত্মিকতার কথা বলাছি তাই প্রথমে আধ্যাত্মবাদ বলতে কী বোঝায় সেটা জানা উচিত। এই প্রসঙ্গে বলা হয়েছে আধ্যাত্মবাদ হলো এমন এক দার্শনিক মতবাদ যা জীবন ও জগতের ব্যাখ্যায় জড়ের অপেক্ষা চেতনের ভূমিকাকে অধিক্য দিয়েছে। এক্ষণ মতবাদ চেতন সত্তাকেকেই মুখ্য বলে স্বীকার করেছে। এই মতবাদ আবার এটাও বিশ্বাস করে যে এই বিশ্বজন্যত একে অসামান্য নৈতিক বা নার্বিক শাস্ত নিয়মের দ্বারা পরিচালিত হয়। আধ্যাত্মিক পরিভূক্তির পরিসমাপ্তি ঘটে যোক বা মূর্তির দ্বারা।

আধ্যাত্মিকতা হলো এক অনুভূতি বা বিশ্বাস যা স্বীকার করে যে আমার নিজের চেয়েও বড় কিছু আছে যা চেতন এবং আমরা সেই মহাজাগতিক বা ঐশ্বরিক প্রকৃতির অংশ।

আধ্যাত্মিকতা ইংরেজি প্রতিশব্দ হলো "spirituality" এই শব্দটি এসেছে ইংরেজি শব্দ "স্পিরিটালিস" থেকে যার আক্ষরিক অর্থ হলো "ঋণ"। যা

জীব এই বন্ধন থেকে মুক্ত পেতে পারে এবং চরম ও পরম শান্তির রূপে মোক্ষ লাভ করতে পারে।

আধ্যাতিকতার অনুশীলনকে পাঁচ ভাগে ভাগ করা হয়েছে। সেগুলি হল ১। প্রার্থনা ২। প্রকৃতির সঙ্গে সংযোগ ৩। যোগ ব্যায়াম ৪। আধ্যাতিক বা ধর্মীয় সেবায় যোগদান ৫। ধ্যান।

নৈমিত্তিক ও জাগতিক সুখসমূহ হলো অত্যন্ত কনছায়া এবং সমস্ত দুঃখের উৎস মূল। সুখ কখনোই নিত্য, শাশ্বত ও অনাবিল্য আমল্য প্রদান করতে পারে না। এগুলিকে তাই ত্যাগ করা উচিত। এইরূপ উচ্চতর আশোকে ভারতীয় ঋষিগণ আত্ম তথা প্রকৃতিতে জানার বাসনা প্রকাশ করেছেন। আত্ম উপলব্ধির মাধ্যমে তারা সং- চিৎ এবং আনন্দ স্বরূপ ব্রহ্মজ্ঞান লাভ করার ইচ্ছা প্রকাশ করেছেন। আত্মজ্ঞান মূলত তত্ত্ব জ্ঞানই সকল প্রকার দুঃখ ও কষ্ট পরিসমাপ্তির মৌলিক উৎস। এই মোক্ষই উৎপত্তি অক্ষয়কার থেকে আশোতে অনন্তে পারে এবং অমৃতের সঞ্জন দিতে পারে। ভারতীয় আর্ষ ঋষির কাছে তাই পোনা গিয়েছে আত্ম আধ্যাতিক প্রার্থনা। অসতোমা সদগময় জমসো মা যোতির্গময়া। অর্থাৎ অসৎ থেকে সতে, অন্ধকার থেকে আলোতে, মৃত্যু থেকে অমৃত সোতে আমাকে পরিচালিত কর। এরূপ আত্ম প্রার্থনা ঐহিক সুখ শান্তির পরিবর্তে পারলৌকিক তথা আধ্যাতিক সুখ-শান্তিকেই কামনা করে। আধ্যাতিক এই অতুল প্রার্থনা ভারতীয় দর্শন ছাড়া বিশ্বে আর কোন দর্শনে পরিণত হয় না। প্রকৃতির সঙ্গে সংযোগ আধ্যাতিকতার এই অনুশীলনটি আমরা মূলত যোগ দর্শনে দেখতে পাই। কারণ যোগ দর্শনে প্রকৃতির সঙ্গে পুরুষের সংযোগের কথা বলা হয়েছে। প্রকৃতি এবং পুরুষের সংযোগ ব্রহ্মসংসর্গ হিসেবে ঈশ্বরের অস্তিত্ব স্বীকার করা হয়েছে। তাদের মতে পুরুষ এবং প্রকৃতি যথেষ্ট বিপরীত ধর্মী তাই তাদের সংযোগ ও বিয়োগ কখনোই

স্বাভাবিকভাবে হতে পারে না। এই সংযোগ বা বিয়োগের জন্য অবশ্যই একজন সর্বশক্তিমান, সর্বত্র ক্ষেত্র সত্তার অস্তিত্ব ও স্বীকার করতে হয়। তিনি হলেন ঈশ্বর। আধ্যাতিকতার যে দ্বিতীয় অনুশীলনের কথা বলা হয়েছে তাহলে যোগব্যায়াম। এই অনুশীলনটিও আমরা যোগ দর্শনেই লক্ষ্য করে থাকি। যোগ দর্শনের যে অষ্টাঙ্গ যোগের কথা বলা হয়েছে তার মধ্যে আসন এবং প্রাণায়াম এই দুটোর মধ্যে আমরা যোগ প্যায়ামের যে ধারণা তা লক্ষ্য করে থাকি। এটিকে আধ্যাতিক অনুশীলনের অন্তর্ভুক্ত করা হয়েছে তার কারণ হলো যোগ ব্যায়ামের দ্বারা শারীরিক ও মানসিক সুস্থতা আসতে পারে। শারীরিক ও মানসিক দিক থেকে সুস্থ না হলে কখনোই কারোর পক্ষে আধ্যাতিকতা চর্চা করা সম্ভব নয়। আধ্যাতিকতার যে চতুর্থ অনুশীলনের কথা হয়েছে কথা বলা হয়েছে সেটা হলো এতটি আধ্যাতিক বা ধর্মীয় সেবায় যোগদান করা। এই আধ্যাতিক সেবা সেটা নিজের প্রতিও হতে পারে আবার বিশ্বের প্রতিও হতে পারে। যখন নিজের আশুভক্ষণের জন্য বিভিন্ন ভাবে নিজেকে নিয়ন্ত্রিত করে চেতন সত্তা বা ব্রহ্ম সম্পর্কে জ্ঞান লাভ করা হয় তখন নিজের প্রতি আধ্যাতিক সেবা দান করা হয়। আবার যখন সত্তা, অস্তিত্ব, ব্রহ্মচর্য, অহিংসা এগুলির অনুশীলন করে চিত্তকে শুদ্ধ, শান্ত করে তখন সে বিশ্বের প্রতি আধ্যাতিক সেবা দান করে। কারণ এই অনুশীলনগুলির নিজের সাথে সাথে ও বিশ্ব ভ্রূপকেও প্রভাবিত করে। আধ্যাতিকতার যে পঞ্চম অনুশীলনের কথা বলা হয়েছে তা হল ধ্যান। যত্ন যত্ন জ্ঞান কখনোই পূর্ণ জ্ঞান দিতে পারে না। সেই যত্ন যত্ন জ্ঞানগুলিকে প্রজ্ঞাসের দ্বারা যখন তাদের মধ্যে ঐক্যতান ঘটান করা হয় তখন তাকে বলা হয় ধ্যান। ধ্যান শব্দের জন্য সঞ্জি নিজেকে বিশ্বভ্রূপতের সঙ্গে এক করতে পারে এবং চেতন সত্তার জ্ঞান লাভ করতে পারে।



এই আলোচনার পরিপ্রেক্ষিতে আমরা বলতে পারি যে ভারতীয় দর্শনে আধ্যাত্মিকতার অনুশীলন এতটাই গভীরভাবে করা হয়েছে যে যার দ্বারা বিশ্বের সকল দর্শন থেকে ভারতীয় দর্শনকে পৃথক করা যায়। এই আধ্যাত্মিক অনুশীলন কেবল তত্ত্বিক নয় বরষাত্রিক ও বটে। এই কারণে অনেকেই ভারতীয় দর্শনকে আধ্যাত্মিক দর্শন বলে অভিহিত করেছেন।

#### সহায়ক তথ্যপঞ্জি:

- ১। The Sarva-darshan-samgraha, Madhava Acharya, translation by E.B.Cowell and A.E. Gough, Kaveri books, new delhi, 2017.
- ২। M. Haryana, *Outline of Indian philosophy*, Motilal Banarasisdas publisher private limited, Delhi.
- ৩। Dasgupta surendranath, *History of Indian philosophy* Motilal Banarasisdas private limited, Delhi.
- ৪। ভট্টচার্য্য নমরেন্দ্র, *ভারতীয় দর্শন*, বুক সিভিকিট প্রাইভেট লিমিটেড, কলকাতা।
- ৫। চট্টোপাধ্যায় দেবীপ্রসাদ, *ভারতীয় দর্শন*, প্রথম খণ্ড, ন্যাশনাল বুক এজেন্সি প্রাইভেট লিমিটেড, কলকাতা, ২০১২।
- ৬। মডল প্রদ্যোত কুমার, *ভারতীয় দর্শন*, প্রোগ্রেসিভ পাবলিকেশন, কলকাতা, ২০১০।
- ৭। সামন্ত উট্টর বিমলেন্দু, *ভারতীয় দর্শন*, আনামবাগ বুক হাউস, কলকাতা, ২০০৭।
- ৮। সেন দেবরত, *ভারতীয় দর্শন*, পশ্চিমবঙ্গ রাজ্য পুস্তক পর্ষদ, কলকাতা, ২০১০।
- ৯। ভট্টচার্য্য দীনেশ চন্দ্র, *স্বভদর্শন: যোগদর্শন*, পশ্চিমবঙ্গ রাজ্য পুস্তক পর্ষদ, কলকাতা। ২০১০
- ১০। ভট্টচার্য্য অমিত , *ভারতীয় দর্শনের রূপরেখা*, সংস্কৃত বুক ডিপো, কলকাতা, ২০১২।



ISSN 2395 - 1532

# সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকা

১৩০ বর্ষ ৩ সংখ্যা • ১৪৩০

শ্রীমতীকেল মুখুন্দন দত্ত  
Michael M. Mukherjee

বিশেষ সংখ্যা

পত্রিকাধ্যক্ষ  
রমেনকুমার সর



বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষৎ

২৪৩/১ আচার্য প্রফুল্লচন্দ্র রোড, কলকাতা ৭০০ ০০৬

# সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকা

১৩০ বর্ষ ৩ সংখ্যা • ১৪৩০

পত্রিকাধ্যক্ষ  
রমেনকুমার সর



বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষৎ

২৪৩/১ আচার্য প্রফুল্লচন্দ্র রোড, কলকাতা ৭০০ ০০৬

১০১

**মহুসুন — জীবন গ্রন্থাবলী**

মহুসুন । উদ্ভাসন-সংকলন  
কবিমন্ডল থেকে

১১

মহুসুন । কলকাতা-মহুসুন মহিলাসকল মহুসুন কব  
সংকলন থেকে

১২

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত । বিপুল কলকাতা মহিলাসকল মহুসুন  
সংকলন থেকে

১৩

মহুসুন কব কলকাতা  
সংকলন থেকে

১৪

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

১৫

মহুসুন কব কলকাতা  
সংকলন থেকে

১৬

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

১৭

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

১৮

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

১৯

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

২০

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

২১

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

২২

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

২৩

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

২৪

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

২৫

**মহুসুন কব কলকাতা — কবিতা**

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

২৬

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

২৭

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

২৮

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

২৯

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

৩০

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

৩১

মহুসুন কব কলকাতা থেকে প্রকাশিত ।  
সংকলন থেকে

৩২



# বাংলা ও বাঙালির কৃষ্টি-ঐতিহ্য

A Diachronic Cultural Study

শ্রীরামকৃষ্ণ সারদা বিদ্যামহাপীঠ  
কামারপুকুর, হুগলি

পরিবেশক

প্রগ্রেসিভ পাবলিশার্স

৩৭এ, কলেজ স্ট্রীট :: কলকাতা-৭০০ ০৭৩

e-mail : progressivepubl@yahoo.co.in



মিত্রম্

৩৭এ, কলেজ স্ট্রীট • কলকাতা-৭০০ ০৭৩

e-mail : pmitram@gmail.com

Mob : 9830305810 • Whatsapp : 9038296630

BANGLA O BANGLALIR  
KRISHTI AITHIYA  
A Diachronic Cultural Study  
Sri Ramkrishna Sarada Vidya Mahapitha

© S.R.S.V.M

প্রথম প্রকাশ : ফেব্রুয়ারি, ২০২৩

প্রচ্ছদ-শিল্পী : ড. অনীক কুমার সাহা  
সহযোগী : দত্তদীপ রায়

ডি.টি.পি. কম্পাউন্ড  
এ. কে. এন্টারপ্রাইজ  
৭২/২বি, পটুয়াটোলা লেন  
কলকাতা-৭০০ ০০৯

দাম : ৩০০ টাকা  
*Rupees Three hundred only*

ISBN : 978-93-94935-14-3

মুদ্রক  
নবরায়ণ প্রিন্টিং  
০, মুক্তারামবাবু লেন  
কলকাতা-৭০০ ০০৭

প্রকাশক  
মিত্রম্  
০৭এ, কলেজ স্ট্রিট • কলকাতা-৭০০ ০৭০  
e-mail : pmitram@gmail.com

## সূচিপত্র

An Oyster of Topics and Opinions ১৩

### প্রবেশক

স্বাধীনতার ৭৫ বছরে কেমন আছে বইপাড়া ? ২৩  
ত্রিদিবকুমার চট্টোপাধ্যায়

### শিক্ষা সংস্কৃতি উত্তরাধিকার

'ঈর্ষিযসা স জীবতি' ৩১  
নির্মলা মুখোপাধ্যায়

সংস্কৃতি ও ঐতিহ্য ৩৫  
বিষ্ণু মজী

তাম্রলিপ্তে বৌদ্ধ সংস্কৃতি : প্রাক্কথন ৩৯  
সুমনপাল ভিকু

'তমসা থেকে জ্যোতিতে উত্তরণ'—বালোয় নারীশিক্ষা ৫১  
সুস্মিতা ওপ্ত

লাহিরেরি : আমার অভিজ্ঞতা ৬২  
তরুণ মুখোপাধ্যায়

Journey to an Antique Land : A Study of the lost  
History of the Pre-Colonial Hooghly ৬৭  
Subham Amin

অজয়ের এপার-ওপার এবং গঞ্জ ইলামবাজারের  
অতীত কথা ৭৩  
প্রণব ভট্টাচার্য

### জীবনচর্চায় ঐশীশক্তি

সপ্তমাতৃকা কথা ৮৩  
সঞ্জীব চক্রবর্তী

সুন্দরবনের লৌকিক দেবদেবী ৯৩  
উদয় সরদার

জীবনবৃত্তে কৃষকের লক্ষ্মী : লক্ষ্মীর কৃষ্টি ১০৩  
বেণুলা মজী

বাঙালির চাককলা

রবীন্দ্রনাথ ও বাঙালির মৃত্যুচর্চা ক্যাবেরী সেন	১১৩
ঐতিহ্যে বাংলা লোকনৃত্য পৃষ্ঠা পুতুত	১২১
ওস্তাদার লোকগান "হোলবোল" পার্থ চট্টোপাধ্যায়	১২৯
লোকনটী বোলান কৌশিক বড়াল	১৩৮
A Short Study on the Structural form of the folk music of West Bengal with special reference to 'Bīṣaharā Gān' and Murāidi Niladri Roy	১৪৭
Rural folk plays and performing traditions of West Bengal with Special reference to Khon Pālā and Bhād jātrā : A short review Suranjita Paul	১৫৭

বাংলার কারুশিল্প

Patachitra of Naya Village of West Bengal : Sustaining the Tradition of Visual Art Soma Ghosal	১৭১
মশাবতার তাস : অনুসন্ধানে বিষ্ণুপুর পিউ মুখার্জী	১৭৮
যুগসঙ্করণে দাঁড়িয়ে কুম্ভনগরের মৃৎশিল্প এবং মৃৎশিল্পী সমাজ দীপাঞ্জন দে	১৮৩
গজদন্ত শিল্প ও মূর্শিদাবাদ অনুপম ভট্টাচার্য	১৮৯

ক্রীড়া জগৎ

খেলাধুলার ইতিবৃত্ত : বিপন্ন শৈশব সঞ্জয়কুমার ঘোষ	১৯৫
ফুটবল এবং বাঙালি : ঔপনিবেশিক পর্ব (১৮৭৭-১৯৪৭) ওহাংও রায়	২০২
লেখক পরিচিতি	২১৬
সংগৃহীত চিত্র	২২৩



## খেলাধুলার ইতিবৃত্ত : বিপন্ন শৈশব

সঞ্জয়কুমার ঘোষ

আমি জন্ম নিমোচ্ছিন্নম সেকলে দুর্গাপুরে। তখনও ভবানী পাঠক প্রাচীরের মধ্যে আবদ্ধ হইনি। দেবী চৌপুরাণীর পুকুর তখনও ঘন জঙ্গলে ঢাকা ছিল। সিটি সেন্টারে তখনও কোনো বক্তৃতা কক্ষনাও কেউ করতে পারত না। রবীন্দ্রনাথকে অনুসরণ করে একটু প্রাচীনপন্থী উচ্চারণ করলাম, কারণ এখন শ্রুতির সরণি বেয়ে পিছনদিকে ফেরা। শৈশব-কৈশোরের দিনগুলোয় একটু উকি দেওয়া।

আমার বয়স তখন বছর ছয়-সাত। আমাদের কোয়ার্টারগুলো ছিল দোতলা। তার উপর ছাদ। ছাদের দরজার কাছে দেওয়ালের আড়ালে চূপ করে লুকিয়ে বাসে আছি। নিঃশ্বাস ফেলার শব্দও যেন শুনতে পাওয়া না যায়। সিঁড়িতে পায়ের শব্দ শুনতে পাচ্ছি। কেউ খুব ধীর পায়ে উঠে আসছে। টের পাচ্ছি দেওয়ালের ঠিক ওপাশে সে এসে দাঁড়িয়েছে। এক্ষুনি দেওয়ালের এপাশে উকি দিয়ে আমাকে দেখতে পেলেই নাম ধরে 'হুশ' বা 'হুশহুশ' বলবে। কিন্তু সে উকি দেওয়ার ঠিক আগের নুহুর্থে ছিটকে উঠে তাকে ছুঁয়ে একটা জোর চিৎকার, 'ধাম্মা'। এ আমাদের এক খেলা। আমাদের সকলের খুব প্রিয়। একদম ঠিক ধরেছেন, 'লুকোচুরি' খেলা।

নিয়ম ছিল, একজন চোর হবে। সে চোখ বুজে এক থেকে একশো গুনবে। তার মধ্যে বাকিরা লুকিয়ে পড়বে। যে চোর হয়েছে, তাকে চোখ খুলে বাকিদের খুঁজতে হবে। কাউকে খুঁজে পেলে দূর থেকে তাকে নাম ধরে ডেকে 'হুশ' বা 'হুশহুশ' বলতে পারলেই সে আউট। এইভাবে যদি সবাইকে চোর আউট করতে পারে, তাহলে যাকে প্রথম আউট করেছিল, তাকে চোর হতে হবে। আর সবাইকে আউট করার আগে যদি কেউ চোরকে ছুঁয়ে 'ধাম্মা' বলতে পারে, তাহলে আবার তাকে চোর হয়ে খেলা শুরু করতে হবে।

প্রথম চোর কে হবে, তা নির্ণয় করার আবার একটা পদ্ধতি ছিল। কিছু অদ্ভুত এবং মজার ছড়া ছিল। সবাই গোল হয়ে দাঁড়াতে হত। তারপর ঘড়ির কাঁটার অভিমুখে একজন গোনা শুরু করত। 'দশ, কুড়ি, তিরিশ, চল্লিশ, পঞ্চাশ, ষাট, সত্তর, আশি, নব্বই, শ'। যার কাছে গিয়ে একশো গোনা শেষ হত, সে ছাড়া পেয়ে যেত। বাকিদের মধ্যে আবার গোনা শুরু হত। এইভাবে ছাড় পেতে পেতে শেষ পর্যন্ত যে বাকি থেকে যেত, সেই হত চোর। এটা ছিল একটা পদ্ধতি।

আরও দুটো ছড়া মনে পড়ছে। এই ছড়া দুটোর ক্ষেত্রে চোর নির্ণয়ের নিয়ম ছিল সামান্য আলাদা। যথারীতি চক্রাকারে দাঁড়িয়ে ঘড়ির কাঁটার অভিমুখে গুনতে গুনতে যার কাছে গিয়ে শেষ শব্দটা বলা হত সেই হত চোর। দ্বিতীয় ছড়াটা এইরকম—'আপন বাপন চৌকি চাপন/ওপ ঢোল মামার কোল/এই ছেলেটি খাটিয়া চোর।' কিছু অসংলগ্ন শব্দ, পাশাপাশি বসিয়ে শেষে চরণটি ছাড়া যার কোনো অর্থ দাঁড়ায় না, সেরকম একটি ছেলে ভোলানো বা মেয়ে ভোলানো বা বাচ্চা ভোলানো ছড়া। সেই সময় আমাদের এই খেলায় কোনো ভেদাভেদ ছিল না। ছেলে-মেয়ে নির্বিশেষে পাড়ার মোটামুটি পাঁচ-ছয় বছর বয়স থেকে এগারো-বারো বছর বয়স পর্যন্ত সকলেই খেলায় অংশগ্রহণ করত।

**DECODING COVID-19  
AND  
THE ISSUES ASSOCIATED**

*Editor-in-Chief*

**Gour Chandra Ghosh**

All Rights Reserved

First Published : May, 2022

Published by  
Granthamitra  
K. Mitra  
72/2B, Patuatola Lane  
Kolkata-700 009

D. T. P. Compose  
A. K. Enterprise  
72/2B, Patuatola Lane  
Kolkata-700 009

Printed by  
Narayan Printing  
3, Muktaram babu lane  
Kolkata-700 007

Jacket Design : Ritodip Ray

Price : ₹ 350.00

*Rupees Three hundred fifty only*

\$ : 14.00

£ : 11.30

ISBN : 978-93-84104-90-0

# DECODING COVID-19 AND THE ISSUES ASSOCIATED

Editor-in-Chief

**Dr. Gour Chandra Ghosh**

Board of Editors

**Dr. Kalipada Sarkar**

**Dr. Anuradha Sinha**

**Dr. Tapas Adhikari**

**Dr. Avijit Sutradhar**

**Dr. Abhijit Datta**

**Prof. Kanchan Roy**

**Asst. Prof. Abhrangsu Kr. Sarkar**

Distributor

**Mitram**

37A, College Street

Kolkata-700 073



**Granthamitra**

72/2b, Patuatola Lane, Kolkata-700 009

e-mail : [pmitram@gmail.com](mailto:pmitram@gmail.com)

[progressivepubl@yahoo.co.in](mailto:progressivepubl@yahoo.co.in)

Mobile : 9830305810, Whatsapp : 9038296630

**Part III**  
**COVID-19 and Pandemic Realities in  
Social Life**

- Ranjita Chakraborty 105-126  
Pandemic and the Social Fabric : Reflections on India
- Arpita Paul 127-134  
Effect of COVID-19 on Middle Class
- Kalyani Pakhrin 135-141  
The Crisis of COVID-19 Amplifying Gender Inequality
- Munna Thakur 142-152  
The Condition of Person with Disability in Covid-19  
Pandemic Situation in India
- Ranjan Mitra 153-162  
Impact of COVID-19 Pandemic on Indian Society
- Swagata Bhattacharya 163-172  
Pandemic, Patriarchy and Indian Women : An Overview

**Part IV**  
**Ethical Questions around  
COVID-19**

- Subhashree Indra 175-180  
COVID-19 : Some Moral Issues
- Subrata Mandal 181-194  
Crisis of Humanity During COVID-19 in India
- Sankha Suvra Sanyal 195-201  
Stress and Mental Health in the wake of COVID-19

**Part V**  
**Impact of COVID-19 on  
Economic Development, Migrant  
Workers and the Tea Growers**

- Gour Das 205-212  
The Impact of COVID-19 on our Society and Economy